राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 देवेंद्र फडणवीस ने माना- रिजल्ट के बाद ही पता चलेगा कौन.....

सुरक्षा की गई थी कम, हरियाणा विधानसभा में उठा अनिल..... 12

वर्ष : 15 | अंक : 210 | नई दिल्ली, शनिवार, 16 नवंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

दिल्ली में वायु प्रदूषण कम करने के लिए ग्रेप-3 की पाबंदियों को लागू करेगी सरकार

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली में वायु प्रदूषण कम करने के लिए ग्रेप-3 की पाबंदियों को रआपर की सरकार सख्ती से लागू करेगी। इस बाबत पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय बैठक कर उन्हें दिशा निर्देश जारी किए। उन्होंने कहा कि वायु प्रदूषण की समस्या को देखते हुए सीएक्यूएम के आदेश पर दिल्ली में ग्रेप के तीसरे चरण की पाबंदियों को लागू करने का निर्णय लिया गया है। सभी सम्बंधित विभागों के साथ मीटिंग कर उनको सभी जरूरी कदम उठाने के निर्देश दिए गए हैं,ताकि प्रदूषण को कम किया जा सके। सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने के लिए 106 शटल बस सेवा शुरू किया गया है और मेट्रो ट्रेनें 60 अतिरिक्त फेरे लगाएंगी। दिल्ली में प्राइवेट निर्माण एवं विध्वंस कार्यों पर रोक लगा दी गई है। साथ ही बीएस पेट्रोल और बीएस डीजल एलएमवी (4 पहिया वाहन) के संचालन पर प्रतिबंध लगाया गया है प्रतिबंध को लागू कराने के लिए परिवहन विभाग के 84 टीम और ट्रैफिक पुलिस की 280 टीम लगायी गयी है। निर्माण कार्यों पर रोक की निगरानी के लिए सम्बंधित विभाग की टीमें लगातार निरीक्षण करेगी। सड़कों की मशीनीकृत सफाई के समय को बढ़ाया गया है। सड़कों पर सफाई के लिए 65 एम आर एस मशीनें एमसीडी की तरफ से चल रही हैं. अब इनका समय बढ़ाकर 6 बजे सुबह से 4 बजे शाम तक कर दिया गया है।

पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने शुक्रवार को प्रेस वार्ता कर बताया कि पिछले दो दिनों से दिल्ली और एनसीआर में एक्यूआई 400 से ज्यादा है , जो सिवियर कैटेगरी है। इसलिए सीएक्यूएम ने कल आदेश जारी किया है कि ग्रेप के तीसरे चरण को लागू किया जाए।उन्होंने कहा कि सीएक्यूएम के आदेश के अनुसार दिल्ली में ग्रेप के तीसरे चरण की पाबंदियों को लागू करने का निर्णय लिया है। उसके क्रियान्वयन के लिए एक मजबूत मॉनिटरिंग सिस्टम तैयार किया है। बीएस क्कक्कपेट्रोल और बीएस क्क डीजल एलएमवी (4 पहिया वाहन) के संचालन पर प्रतिबंध लागू किया गया है अगर इसका कोई उल्लंघन करता है तो 20,000 रुपया जुमार्ना लगाया जाएगा। दिल्ली के अंदर प्राइवेट निर्माण तथा विध्वंस की गतिविधियों पर बैन लगाया जा रहा है। निर्माण तथा विध्वंस पर बैन से कुछ विभागों को छूट दी जा रही है लेकिन उन्हें निर्माण तथा विध्वंस के लिए जारी दिशा-निदेर्शों का पालन करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि 200 मोबाइल एंटी स्मॉग गन जो दिल्ली को सड़कों पर छिड़काव कर रहे हैं, वे अब तीन शिफ्ट में चल रहे हैं . इसकी मॉनिटरिंग के लिए वॉर रूम में नोडल अधिकारी बनाया गया है। गोपाल राय ने कहा कि प्राइवेट निर्माण तथा विध्वंस के कार्य पर प्रतिबंध रहेगा ,साथ ही बोरिंग और ड्रिलिंग कार्यों सहित खुदाई और भराई के लिए मिट्टी का काम, पाइलिंग कार्य, ट्रेंच सिस्टम द्वारा सीवर लाइन, पानी की लाइन, ड्रेनेज और इलेक्ट्रिक केबलिंग आदि बिछाने का कार्य ,ईंट/चिनाई का काम, आरएमसी बैचिंग प्लांट का संचालन, प्रमुख वेल्डिंग और गैस-कटिंग कार्य (हालाँकि मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल और प्लंबिंग कार्यों के लिए छोटी वेल्डिंग गतिविधियों की अनुमति होगी),पेंटिंग, पॉलिशिंग और वार्निशिंग कार्य, सीमेंट, प्लास्टर / अन्य कोटिंग्स का कार्य (मामूली इनडोर मरम्मत/रखरखाव कार्य को छोड़कर), पत्थरों और अन्य फर्श सामग्री को काटना/पीसना और लगाने का कार्य (मामूली इनडोर मरम्मत/रखरखाव कार्य को छोड़कर), वाटर प्रूफिंग कार्य (रासायनिक वाटर प्रूफिंग को छोड़कर), प्राइवेट सड़क निर्माण,परियोजना स्थल के अंदर/बाहर कहीं भी सीमेंट, फ्लाई-ऐश, ईंट, रेत, मुरम, कंकड़, तोड़ा हुआ पत्थर आदि जैसी धूल पैदा करने वाली सामग्रियों का स्थानांतरण, लोडिंग/अनलोडिंग का कार्य , कच्ची सड़कों पर निर्माण सामग्री ले जाने वाले वाहनों की आवाजाही का कार्य, विध्वंस अपशिष्ट के ट्रांसपोटेशन का कार्य आदि पर प्रतिबंध रहेगा।

मौसम

अधिकतम तापमान 32.0°C
न्यूनतम तापमान 23.0°C

बाजार

सोना 80,405
चांदी 1,1000
सेंसेक्स 80,220
निफ्टी 24,472

संक्षिप्त खबरें

छात्रों का आंदोलन जारी

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) के बाहर छात्र पांचवे दिन भी धरने में डटे हुए हैं। आयोग के गेट के बाहर छात्र-छात्राएं इकट्ठा हुए हैं। आरओ-एआरओ परीक्षा एक दिन में कराए जाने की मांग की जा रही है। छात्रों ने स्पष्ट कर दिया है की परीक्षा रद्द करने और समिति बनाने से काम नहीं चलेगा, आयोग को एक दिवस एक पाली में परीक्षा का निर्णय लेना होगा। हालांकि आयोग ने आरओ-एआरओ परीक्षा को स्थगित कर दिया है। साथ ही परीक्षा को लेकर कमेटी का गठन किया गया। शुक्रवार को आंदोलन पर बैठे प्रतियोगी छात्रों ने कहा कि स्थगन से वे संतुष्ट नहीं हैं। आयोग को एक दिवस एक पाली में परीक्षा का निर्णय लेना होगा, इसके बाद ही वह आंदोलन स्थल से हटेंगे। शुक्रवार को भी आंदोलन जारी है, लेकिन भीड़ काफी कम है। स्थिति यह है कि सड़क की एक लेन पर वाहनों का आवागमन भी चालू करा दिया गया है। प्रतियोगी छात्र विमल का कहना है कि जो छात्र आरओ-एआरओ की परीक्षा देता है वह पीसीएस भी देता है। ऐसे में यदि एक परीक्षा को एक दिवसीय किया गया तो दूसरी परीक्षा दो दिवसीय होने से उनको नॉर्मलाइजेशन के कारण असमान मूल्यांकन झेलना होगा। ऐसे में दोनों परीक्षाओं में वन डे-वन शिफ्ट लागू होना चाहिए। प्रदर्शनकारी छात्रों का कहना है कि आरओ-एआरओ प्रारंभिक परीक्षा भी एक दिन में कराने की घोषणा की जाए, तभी उनका आंदोलन पूरी तरह से खत्म होगा। छात्रों की मांग यह है कि जिस तरह से पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा को एक शिफ्ट में कराने की घोषणा की गई है।

एक परिवार, एक पार्टी के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में आदिवासियों के योगदान की अनदेखी की गई: मोदी

जमुई, एजेंसी

जमुई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि देश में कांग्रेस की पूर्ववर्ती सरकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन में आदिवासी नेताओं के योगदान को कमतर आंकने का प्रयास किया, ताकि केवल एक पार्टी और एक परिवार को श्रेय मिल सके। वह महान स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर बिहार की राजधानी पटना से लगभग 200 किलोमीटर दूर जमुई जिले के खैरा गांव में जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा, आज जब हम जनजातीय गौरव वर्ष की शुरूआत कर रहे हैं तब यह समझना भी बहुत जरूरी है कि आयोजन की आवश्यकता क्यों हुई। यह इतिहास के एक बहुत बड़े अन्याय को दूर करने का एक ईमानदार प्रयास है। आजादी के बाद आदिवासी समाज के योगदान को इतिहास में वह स्थान नहीं दिया गया जिसका मेरा आदिवासी समाज हकदार था। मोदी ने कहा, आदिवासी समाज वह है, जितने राजकुमार राम को भगवान राम बनाया। आदिवासी समाज वह है, जिसने भारत की संस्कृति और आजादी की रक्षा के लिए सैकड़ों वर्षों की लड़ाई को नेतृत्व दिया लेकिन आजादी के बाद के दशकों में आदिवासी इतिहास के इस अनमोल योगदान को मिटाने की

कोशिशें की गईं। इसके पीछे भी स्वार्थ भरी राजनीति थी। राजनीति यह कि भारत की आजादी के लिए सिर्फ एक ही दल को श्रेय दिया जाए। उन्होंने पूछा कि अगर एक ही दल, एक ही परिवार ने आजादी दिलाई तो भगवान बिरसा मुंडा का उलगुलान आंदोलन क्यों हुआ था, संथाल क्रांति क्या थी, कोल क्रांति क्या थी। प्रधानमंत्री ने आजादी की लड़ाई में देश के आदिवासी समाज के लोगों की चर्चा करते हुए कहा कि क्या उन शूरवीरों को कोई भुला सकता है। उन्होंने कहा, संस्कृति हो या फिर सामाजिक न्याय, आज की राजग सरकार का मानक कुछ अलग ही है। मैं इसे भाजपा ही नहीं, बल्कि राजग का सौभाग्य मानता हूं कि हमें द्रौपदी मुर्मू जी को राष्ट्रपति बनाने का अवसर मिला। वह देश की पहली आदिवासी राष्ट्रपति हैं। मुझे याद है कि जब राजग ने द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाना तय किया तो हमारे नीतीश बाबू ने अपील की थी कि मुर्मू को भारी मतों से जिताया जाना चाहिए। मोदी ने कहा, आज पीएम-जनमन योजना के तहत अनेक काम शुरू हुए हैं उसका श्रेय भी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी को ही जाता है। जब वह झारखंड की राज्यपाल थीं और फिर जब वह राष्ट्रपति बनीं तो उन्होंने अकसर मुझसे आदिवासियों में भी अति पिछडी जनजातियों का जिक्र किया। उन्होंने कहा, इन अति पिछड़ी आदिवासी जनजातियों की पहले की सरकारों ने कोई परवाह ही नहीं की थी। इनके जीवन से मुश्किलें कम करने के लिए ही 24,000 करोड़ रुपये की पीएम- जनमन योजना शुरू की गई। पीएम जनमन योजना से देश की सबसे पिछड़ी जनजातियों की बस्तियों का विकास सुनिश्चित हो रहा है। आज इस योजना को एक साल पूरा हो रहा है। इस दौरान हमने अति पिछड़ी जनजातियों को हजारों पक्के घर दिए। पिछड़ी जनजातियों की बस्तियों को जोड़ने के लिए सैकड़ों किलोमीटर की सड़कों पर काम शुरू हो चुका है। पिछड़ी जनजातियों के सैकड़ों गांव में हर घर नल से जल पहुंचा है। मोदी ने कहा कि जिनको किसी ने नहीं पूछा मोदी उनको पूजता है। उन्होंने कहा कि पहले की सरकारों के रवैये के कारण आदिवासी समाज दशकों तक मूल सुविधाओं से वंचित ही रहा। अपनी सरकार द्वारा आदिवासी और जनजाति समाज के लिए किए जा रहे विकास कार्यों की चर्चा करते हुए मोदी ने कहा कि आदिवासी कल्याण हमेशा से राजग सरकार की प्राथमिकता रहा है और अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली राजग सरकार ही थी जिसने आदिवासी कल्याण के लिए अलग मंत्रालय बनाया।

हमारी शीर्ष प्राथमिकता आदिवासी लोगों के लिए पढ़ाई, कमाई और दवाई : मोदी

जमुई। आदिवासी लोगों के लिए पढ़ाई, कमाई और दवाई को अपनी सरकार की शीर्ष प्राथमिकता बताते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि उनकी सरकार ने इस समुदाय के कल्याण के लिए अलग मंत्रालय बनाया तथा बजट 25,000 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 1.25 लाख करोड़ रुपये किया। बिहार के जमुई में प्रधानमंत्री मोदी ने आदिवासी नायक बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर 6,640 करोड़ रुपये की लागत वाली कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करने के बाद कहा कि देश के आदिवासी समुदाय को पहले न्याय नहीं मिलता था। उन्होंने कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कि अगर देश को आजादी एक परिवार की वजह से मिली तो बिरसा मुंडा ने उलगुलान आंदोलन क्यों शुरू किया था ? उन्होंने कहा अनेक आदिवासी नेताओं ने स्वतंत्रता संघर्ष में अहम भूमिका निभाई थी। मोदी ने आरोप लगाया कि पिछली सरकारों ने कभी आदिवासी लोगों के कल्याण के लिए काम नहीं किया। उन्होंने कहा, हमारी शीर्ष प्राथमिकता आदिवासी लोगों के लिए पढ़ाई, कमाई और दवाई है। उन्होंने कहा, हमने आदिवासी कल्याण के लिए अलग मंत्रालय बनाया, तथा बजट 25,000 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 1.25 लाख करोड़ रुपये किया। हमने अनेक प्रावधानों को सरल बनाया, आदिवासियों के फायदे के लिए 90 वन उत्पादों का न्यूनतम साझा मूल्य (एमएसपी) तय किया।

हिंगोली में मेरे हेलिकॉप्टर की जांच की गई, स्वस्थ चुनाव प्रणाली में सभी योगदान दें: शाह

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि शुक्रवार को महाराष्ट्र के हिंगोली में चुनाव प्रचार के दौरान निर्वाचन आयोग के अधिकारियों ने उनके हेलीकॉप्टर की जांच की। उन्होंने सभी से स्वस्थ चुनाव प्रणाली में अपना योगदान देने की अपील भी की। इस जांच से जुड़ा एक वीडियो एक्स पर साझा करते हुए शाह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) निष्पक्ष चुनाव और स्वस्थ चुनाव प्रणाली में विश्वास रखती है और निर्वाचन आयोग के नियमों का पालन करती है। उन्होंने कहा, आज महाराष्ट्र के हिंगोली विधानसभा क्षेत्र में चुनाव प्रचार के दौरान चुनाव आयोग के अधिकारियों के द्वारा मेरे हेलीकॉप्टर की जांच की गई। भाजपा निष्पक्ष चुनाव और स्वस्थ चुनाव प्रणाली में विश्वास रखती है और माननीय चुनाव आयोग द्वारा बनाए गए सभी नियमों का पालन करती है। उन्होंने कहा, एक स्वस्थ चुनाव प्रणाली में हम सभी को अपना योगदान देना चाहिए और भारत को विश्व का सबसे मजबूत लोकतंत्र बनाए रखने में अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। शाह की ओर से साझा किये गये वीडियो में देखा जा सकता है कि निर्वाचन अधिकारी उनके हेलीकॉप्टर की जांच कर रहे हैं। ज्ञात हो कि कुछ दिन पहले लातूर और यवतमाल जिलों में पहुंचने के बाद निर्वाचन आयोग के अधिकारियों ने महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के एक बैग की जांच की थी। ठाकरे ने इस जांच से संबंधित वीडियो साझा करते हुए पूछा था कि क्या प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और सत्तारूढ़ गठबंधन के अन्य वरिष्ठ नेताओं पर भी उनके चुनाव प्रचार के दौरान यही नियम लागू किया जायेगा। इस घटना के बाद महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार और उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के बैग की भी जांच की गई थी।

राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति ने की भगवान बिरसा मुंडा को पुष्पांजलि अर्पित

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को संसद भवन परिसर में स्थित प्रेरणा स्थल पर जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर उनकी 150वीं जयंती और जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर भारत के उप राष्ट्रपति एवं राज्यसभा अध्यक्ष जगदीप धनखड़, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला तथा अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की इससे पूर्व श्री ओम बिरला ने एक्स पर संदेश लिखा, आदिवासी अस्मिता और संस्कृति के गौरव, उलगुलान के प्रणेता, धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर सविनय नमन। भगवान बिरसा मुंडा का 150वां जन्मजयंती वर्ष

आज से शुरू हो रहा है। जनजातीय गौरव दिवस के इस उपलक्ष्य पर सभी देशवासियों को शुभकामनाएं। भगवान बिरसा देश, समाज और संस्कृति के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर देने वाले महानायक थे। उनके जीवन आदर्श हमें सदैव प्रेरित करते रहेंगे। वर्ष 2021 से 15 नवम्बर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया जा रहा है, ताकि जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों की बलिदान को सम्मानित किया जा सके। जनजातीय समुदायों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कई क्रांतिकारी आंदोलनों के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह दिवस जनजातीय समुदायों के इतिहास, संस्कृति और धरोहर को सम्मानित करता है, एवं देशभर में एकता, गर्व और जनजातियों का देश की स्वतंत्रता और प्रगति में योगदान के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। भगवान बिरसा मुंडा ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ उलगुलान (क्रांति) का नेतृत्व किया था और वह बाद में प्रतिरोध का प्रतीक बन गए। भगवान मुंडा का नेतृत्व राष्ट्रीय जागरण का कारण बना, और उनका योगदान जनजातीय समुदायों द्वारा गहरे सम्मान के साथ याद किया जाता है। इस अवसर पर, विभिन्न राज्यों से आए जनजातीय लोक कलाकारों ने संसद भवन परिसर के प्रेरणा स्थल पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं।

गरीबों की कीमत पर अरबपतियों के हितों की पूर्ति कर रहे हैं प्रधानमंत्री: राहुल

झारखंड, एजेंसी

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर निशाना साधते हुए उन पर भारत के गरीबों की कीमत पर अरबपतियों के हितों की पूर्ति करने का आरोप लगाया। झारखंड के गोड्डा जिले में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए गांधी ने दावा किया कि विपक्ष संविधान की रक्षा के लिए लड़ रहा है जबकि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उसे कूड़ेदान में डालने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा, नरेन्द्र मोदी कहते हैं कि राहुल गांधी लाल किताब दिखा रहा है। मोदी जी, इस किताब का रंग जरूरी नहीं है। इसमें जो लिखा है, वह जरूरी है। अगर आपने इसे पढ़ा होता तो आप लोगों में नफरत नहीं फैलाते, सबको एक दूसरे से नहीं लड़ाते। उन्होंने कहा, हमारे सामने विचारधारा की लड़ाई है। कांग्रेस पार्टी के लोग और गठबंधन संविधान को बचाने का काम कर रहे हैं। वहीं भाजपा-आरएसएस, आंबेडकर जी के संविधान को खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। इसे कूड़ेदान में डालने की कोशिश कर रहे हैं। वे हिंसा फैला रहे हैं और जाति, पंथ और धर्म के आधार पर समाज को विभाजित करने की कोशिश कर रहे हैं। राहुल ने कहा कि वह मोदी या उनके ह्य56 इंच के सीनेह्व से नहीं डरते। उन्होंने कहा, वह (मोदी) अरबपतियों की कठपुतली हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री पर आरोप लगाया कि वह लोगों को मन की बात सुनाएंगे और पाठ सिखाएंगे और रात में उद्योगपतियों की शादियों का आनंद लेंगे। गांधी ने दावा किया कि महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे नीत सरकार को जमीन हड़पने के लिए गिराया गया था। उन्होंने आरोप लगाया कि मोदी मुंबई के धारावी में एक लाख करोड़ रुपये कीमत की जमीन एक उद्योगपति को सौंपने की कोशिश कर रहे हैं। राष्ट्रव्यापी जाति जनगणना की आवश्यकता की वकालत करते हुए, कांग्रेस नेता ने दावा किया कि यह भारत का चेहरा बदल देगी। उन्होंने कहा कि जाति जनगणना से विभिन्न संस्थानों में आदिवासियों, दलितों और ओबीसी की स्थिति का पता चलेगा। उन्होंने कहा, जातिगत जनगणना तो होनी ही है। उन्होंने कहा, हम 50 प्रतिशत आरक्षण की सीमा को खत्म कर देंगे, प्रधानमंत्री मोदी जो चाहें वह कर सकते हैं। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि हालांकि प्रधानमंत्री मोदी गरीबों के सम्मान की बात करते हैं, लेकिन किसानों का कर्ज माफ नहीं करते। उन्होंने झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेता हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी पर भी भाजपा पर निशाना साधा और कहा, आपके द्वारा चुने गए एक आदिवासी मुख्यमंत्री को झारखंड में सलाखों के पीछे डाल दिया गया।

समाज बोलें - बिहार को भी पूरी तौर पर मदद कर रहे हैं पीएम .....

एनडीए सरकार ने जनजातीय समाज के लिए बहुत सारे काम किए : नीतीश

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जमुई में जनजातीय गौरव दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री एक-एक काम देश के लिए कर रहे हैं और बिहार को भी पूरी तौर पर मदद कर रहे हैं। शुक्रवार को जमुई में भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिवस के अवसर पर जनजातीय गौरव दिवस का आयोजन किया गया है। भगवान बिरसा मुंडा आदिवासी समाज के नायक थे : मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा आदिवासी समाज के नायक थे जिन्होंने जनजातीय समाज के लिए काफी संघर्ष किया था। भगवान बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर, 1875 को रांची में हुआ था। आज रांची अलग हुआ है लेकिन उस समय जब उनका जन्म हुआ था तब बंगाल, बिहार और उड़ीसा सब एक ही साथ था। आजादी की लड़ाई के कुछ दिनों के बाद बंगाल से बिहार अलग हुआ और उसके कुछ महीनों के बाद उड़ीसा अलग हुआ। तब बिहार और झारखंड सब एक ही साथ था। झारखंड काफी दिनों के बाद वर्ष 2000 में बिहार से अलग हुआ था उस समय श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में जो केंद्र में सरकार थी,

उसने बिहार से अलग झारखंड राज्य बनाने का निर्णय लिया था। देश की आजादी और आदिवासी समाज के उत्थान में भगवान बिरसा मुंडा का बड़ा योगदान रहा है। जब वे अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन कर रहे थे तब उन्हें जेल में डाल दिया गया था जहां वर्ष 1900 में 25 साल में उनका निधन हो गया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2021 से भगवान बिरसा मुंडा जी के जन्मदिवस को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस साल भगवान बिरसा मुंडा जी के जन्मदिवस का करीब 150 साल हो गया है। जनजातीय गौरव दिवस के अलावे जनजातीय क्षेत्र के विकास के लिए आज श्रद्धेय प्रधानमंत्री जी ने 6600 करोड़ रुपये की योजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया है, इसके लिए मैं उनका अभिनंदन करता हूं, यह बहुत बड़ी बात है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार सरकार द्वारा वर्ष 2007 में पटना में भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा लगवाई गई है। राज्य सरकार द्वारा हर साल 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिवस को राजकीय समारोह के रूप में मनाया जाता है। आज भी वहां पर इसे राजकीय समारोह के रूप में मनाया गया है। वर्ष 2005 में बिहार में एनडीए की सरकार बनी तब से हमलोगों ने वहां पर जनजातीय समाज के लिए बहुत सारे काम किए हैं। पूरे देश के लिए काम कर रहे हैं प्रधानमंत्री : मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री पूरे देश के लिए काम कर रहे हैं और बिहार के लिए भी इन्होंने काफी कुछ किया है और कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी जहां कहीं भी जाते हैं वहां के लिए काफी काम करवा देते हैं। अब यहीं पर आएं हैं तो इन्होंने इतना कुछ विकास का काम करवा दिया। इनका स्वागत है, इनका अभिनंदन है। हमलोग पूरे तौर पर इनके साथ हैं। अब कहीं इधर-उधर नहीं जाएंगे : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शुक्रवार को सार्वजनिक मंच से एकबार फिर दोहराया कि हमलोग अब कभी इधर-उधर नहीं जाएंगे, साथ रहेंगे। उन्होंने कहा, ह्लबीच में गलती हुई, बीच में गलती कर दिया हम ही लोगों के यहां का कुछ लोग, गलती करवा दिया। हम लोगों ने अब तय कर लिया है कि कहीं नहीं जाएंगे। हम लोग तो अटल बिहारी वाजपेयी के साथ थे। उनकी सरकार में थे। बीच में बेमतलब का काम कर दिया। इधर-उधर कर दिया सब। अब यह संभव नहीं है। अब कभी नहीं इधर-उधर जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि 1995 से हम लोग साथ हैं, तब से साथ मिलकर काम कर रहे हैं। अब हम लोग इधर-उधर नहीं जाएंगे। पूरे तौर पर इनके साथ रहेंगे। कार्यक्रम का मुख्य बिंदु : -कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने तिलका मांझी की प्रतिमा भेंटकर स्वागत किया। -कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री, राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री सहित मंचासीन अतिथियों ने भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंती के अवसर पर भगवान बिरसा मुंडा का स्मारक चिह्न एवं स्मारक डाक टिकट जारी किया। -कार्यक्रम की शुरूआत के दौरान मंच के पास जनजातीय विरासत, वीर सपूतों की गाथा तथा जनजातीय नागरिकों की उद्यमिता पर आधारित लगाई गई प्रदर्शनी का प्रधानमंत्री, राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री ने अवलोकन किया।

लाओस में हो सकती है भारत-चीन रक्षा मंत्रियों की अहम मुलाकात

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह अगले हफ्ते लाओस में आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक (एडीएमएम प्लस) में भाग लेंगे, जिसमें उनके चीनी समकक्ष डोंग जून से मिलने की संभावना है। यह संभावित मुलाकात दोनों देशों के बीच अप्रैल 2023 के बाद मंत्री स्तर की पहली बातचीत होगी। अगर ऐसा होता है, तो इसे लद्दाख में पैट्रोलिंग अरेंजमेंट पर सहमति के बाद दोनों देशों के रक्षा संवाद को एक नई दिशा देने वाला कदम माना जा सकता है। इस मामले में विशेषज्ञों का मानना है कि इस मुलाकात से भारत और चीन के बीच संवाद को एक सकारात्मक संकेत मिलेगा। जाने-माने चीन मामलों के विशेषज्ञ हर्ष वी. पंत ने कहा कि गलवान संघर्ष के बाद से दोनों देशों के बीच गहरा अविश्वास बना हुआ है, जिससे रक्षा संवाद प्रभावित हुआ है। हालांकि, पंत के अनुसार, अगर यह बैठक होती है, तो इसे दोनों देशों के बीच विश्वास बहाली के एक प्रयास के रूप में देखा जाएगा। पिछले कुछ समय में भारत-चीन के बीच कई उच्चस्तरीय मुलाकातें हो चुकी हैं। हाल ही में कजान में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच बातचीत हुई थी। इसके बाद विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा था कि दोनों देशों ने सीमा विवाद के स्थायी समाधान के लिए विशेष प्रतिनिधि स्तर की वार्ता की आवश्यकता पर जोर दिया है। राजनाथ सिंह के इस दौरे से पहले हाल ही में उन्होंने चाणक्य डिफेंस डायलॉग में कहा था कि लद्दाख में पैट्रोलिंग अरेंजमेंट पर महीनों तक चली कूटनीतिक वार्ताओं का नतीजा है। जानकारों के अनुसार, लाओस में होने वाली संभावित मुलाकात से यह संकेत मिलेगा कि दोनों देश, विशेष रूप से भारत, रिश्तों को सामान्य बनाने की दिशा में सधे हुए कदमों से आगे बढ़ना चाह रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

21 से शुरू होगा नया गन्ना पेराई सत्र

ऋषिकेश, एजेंसी। शुगर मिल का नया गन्ना पेराई सत्र शुरू कराने के लिए बृहस्पतिवार को बॉयलर पूजा की जाएगी। साथ ही 21 नवंबर से नया गन्ना पेराई सत्र शुरू कराने के लिए तैयारियां तेज हो गई है। इस बार शुगर मिल को 63 गन्ना क्रय केंद्रों से आपूर्ति की जाएगी। डोईवाला शुगर मिल का नया गन्ना पेराई सत्र शुरू कराने के लिए प्रक्रिया शुरू हो गई है। बृहस्पतिवार को बॉयलर पूजा की जाएगी। बता दे कि गन्ना पेराई शुरू करने से पहले मिल का बॉयलर शुरू हो जाता है। जो मिल को चलाने में अहम भूमिका निभाता है। वहीं, दूसरी ओर गन्ना पेराई सत्र शुरू कराने के लिए सभी ट्रायल हो चुके है। मिल को इस बार 63 क्रय केंद्रों से गन्ना आपूर्ति मिलेगी। गन्ना क्रय केंद्रों पर तौल शुरू कराने के लिए सभी व्यवस्थाओं को मिल शुरू होने से पहले पुख्ता कर लिया जाएगा। बुधवार को शुगर मिल के अधिशासी निदेशक दिनेश प्रताप सिंह ने मिल के विभिन्न स्टेशनों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं को परखा। अधिशासी निदेशक दिनेश प्रताप सिंह ने बताया कि 21 नवंबर से मिल का नया गन्ना पेराई सत्र शुरू करना प्रस्तावित किया गया है। बॉयलर पूजा बृहस्पतिवार को की जाएगी।

माता-पिता और बुजुर्गों की करें सेवा - मोरारी बापू

ऋषिकेश, एजेंसी। प्रसिद्ध कथावाचक मोरारी बापू ने कहा कि परस्पर एक दूसरे में हरि को देखने से राग द्वेष मिट जाते हैं। हम सबको परस्पर मैत्री भाव कठिन लगे तो हम किसी से राग द्वेष न करें। उन्होंने युवा पीढ़ी से अपील करते हुए कहा कि माता-पिता और बुजुर्गों की सेवा करनी चाहिए। अगर वो जीवित नहीं है तो उनका खूब स्मरण करना चाहिए। मुनि की रेती स्थित श्री पूर्णानंद खेल मैदान में आयोजित श्रीराम कथा के सातवें दिन मोरारी बापू ने भक्तों को मानस ब्रह्म विचार कथा का श्रवण कराया। बापू ने कहा कि साधू संतों से सुना है कि खर-दूषण का वध करना नामुमकिन था। दोनों को राग द्वेष रूपी माना गया है। उनकी सेना के चौदह हजार सैनिक मरते ही नहीं थे। युद्ध के समय सैनिकों को एक दूसरे में राम दिखने लगे तो उन्होंने आपस में एक-दूसरे का वध कर दिया। कहा, ब्रह्म विचार वो उत्कृष्ट उच्चतम कोटि का है जो स्वयं ब्रह्म प्रकट करें। उदाहरण देते हुए बापू ने कहा कृष्ण स्वयं ब्रह्म है और गीता जो सार्वभौमिक स्वीकार्य है, उसके बारहवें अध्याय में आठ श्लोकों में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को ब्रह्म विचार प्रस्तुत किए हैं। जीवन में केवल संसार में दुख है ऐसा मत जानों। मृत्यु को वस्त्र बदलने की भांति समझो, जो नए जीवन लेने का आगाज है, मान अपमान से विचलित नहीं होना चाहिए।

समय से पूर्व जन्मे जुड़वा बच्चों को मिला नया जीवन

ऋषिकेश, एजेंसी। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के चिकित्सकों ने समय से पूर्व जन्मे जुड़वा अविकसित बच्चों को नया जीवन दिया। करीब तीन महीने तक भर्ती रखने के बाद जुड़वा बच्चों को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। अगस्त महीने में एम्स में एक महिला ने जुड़वा बच्चों को जन्म दिया था। महिला का केरल के इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) सेंटर में गर्भ धारण हुआ था। एम्स में सिजेरियन प्रसव हुआ था। समय से पूर्व (24 सप्ताह) जन्म होने के कारण नवजातों के अंग पूर्ण रूप से विकसित नहीं थे। खास तौर पर फेफड़े सांस लेने लायक विकसित नहीं थे। शिशुओं की देखभाल व चिकित्सा में जुटे विशेषज्ञ चिकित्सकों ने बताया कि पैदा हुए बच्चों का वजन 592 ग्राम और 670 ग्राम था।

छात्र-छात्राओं को दी एआई की जानकारी

ऋषिकेश, एजेंसी। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय रायवाला में पीएम श्री योजना के तहत कार्यशाला आयोजित की गई। विशेषज्ञों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डिजिटल लिटरेसी की जानकारी छात्र-छात्राओं को दी। आईटी विशेषज्ञ मनीष शर्मा ने छात्र-छात्राओं को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के महत्व और उसके उपयोग से संबंधित जानकारी दी। कक्षा 6 के छात्र-छात्राओं ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग और वर्चुअल रियलिटी कार्यशाला में बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया। कार्यशाला में कक्षा 7 के छात्र-छात्राओं को डिजिटल लिटरेसी और एप निर्माण से संबंधित जानकारी से अवगत कराया गया।

स्वच्छ आबोहवा में वायु प्रदूषण की धुंध! विशेषज्ञों ने बताई इसके पीछे की वजह

नैनीताल, एजेंसी। मैदानी भागों की तरह नैनीताल की स्वच्छ आबोहवा में धुंध से गुरुवार को वायु प्रदूषण की धुंध से शहर के पहाड़ धुंधले नजर आने लगे और विजिबिलिटी काफी कम हो गई। एरीज के मुताबिक तापमान में अचानक आई गिरावट के कारण नगर का वातावरण धुंधला गया।

नगर में सुबह के समय चटक धूप खिली हुई थी। आसमान नीले रंग में रंगा नजर आ रहा था। दोपहर होते ही आसमान की रौनक गायब हो गई और देखते ही देखते धुंध चारों ओर छा गई । शहर के पहाड़ वायु प्रदूषण में समाते चले गए। जिन्हें साफ दिखाई देना दूभर हो गया। दोपहर में छाई धुंध, स्थानीय लोगों के लिए अप्रत्याशित थी।

नगर में कोहरा छाना स्वाभाविक है, लेकिन धुंध का छा जाना, इस नगर की प्रकृति से मेल नहीं खाता है। कुछ इसी तरह के कयास लोगो द्वारा लगाए जा रहे थे। अलबत्ता वातावरण में शाम तक धुंध छाई रही। करीब पांच बजे बाद ही धुंध छंट पाई। आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान एरीज के निदेशक

डा मनीष नाजा ने बताया कि धुंध छाने की वजह तापमान में गिरावट है।

तापमान में अचानक गिरावट आने से वातावरण में मौजूद तमाम कार्बनिक कण वायुमंडल की परतों में फंसकर रह गए। उन्हें मुक्त होने का रास्ता नहीं मिल सका। जिस कारण समूचा वातावरण धुंध की चपेट में आ गया। वातावरण में इस तरह की परिस्थितियां स्वाभाविक हैं, जो भविष्य में भी बन सकती हैं। इधर नगर का अधिकतम तापमान 17 व न्यूनतम 14 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।

सीमांत में गुरुवार को मौसम ने अचानक करवट बदल डाली। यहां पूरे दिन मौसम में ठंडक रही। क्षेत्र में बुधवार तक केवल सुबह-शाम को ही ठंड हो रही थी, जबकि दिन में तेज धूप निकल रही थी, जिससे दिन में गर्मी का एहसास हो रहा था।

वहीं गुरुवार को पूरे दिन आसमान बादलों से ढका रहा। इस बीच ठंडी हवाएं भी चलीं, जिस कारण लोग पूरे दिन गर्म कपड़े पहने रहे। यहां थारु जीआसी के मौसम वेधशाला प्रभारी नरेंद्र सिंह रौतेला के मुताबिक गुरुवार को अधिकतम तापमान 27 डिग्री व न्यूनतम 15 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

उत्तराखंड पीसीएस मुख्य परीक्षा 2024 स्थगित, कोर्ट के आदेश के बाद आयोग ने लिया फैसला

नैनीताल, एजेंसी। हाई कोर्ट ने उत्तराखंड सम्मिलित राज्य सिविल-प्रवर सेवा परीक्षा, 2024 स्थगित करने के निर्देश दिए हैं। कोर्ट के आदेश के बाद उत्तराखंड राज्य लोक सेवा आयोग ने परीक्षा को स्थगित कर दिया है।

गुरुवार को कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी और न्यायमूर्ति विवेक भारती शर्मा की खंडपीठ में पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा में सफल उम्मीदवार हिमांशु तोमर की याचिका पर सुनवाई हुई।

याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि उत्तराखंड लोक सेवा आयोग की ओर से 14 मार्च, 2024 को 16 नवम्बर से 19 नवंबर के मध्य मुख्य परीक्षा का कार्यक्रम घोषित कर दिया गया। आरोप लगाया गया कि आयोग ने इसी माह चार नवंबर को हिन्दी के तीन प्रश्नपत्रों के पाठ्यक्रम में बदलाव कर दिया गया। इससे मुख्य परीक्षा में भाग लेने वाले अभ्यर्थियों के सामने परीक्षा में भाग लेना मुश्किल हो गया है।

अंतिम समय में हुए बदलाव से उन्हें पढ़ने का उपयुक्त समय भी नहीं मिला है। याचिकाकर्ता की ओर से इसे संविधान की धारा 14 और 16 का उल्लंघन मानते हुए आयोग के चार नवंबर के आदेश को रद करने की मांग की गयी। आयोग के अधिवक्ता की ओर से परीक्षा को लेकर 15 दिन की अंडरटेकिंग की अनुमति मांगी गई, जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया। जिसके बाद कोर्ट ने मामले को सुनने के बाद मुख्य परीक्षा स्थगित करने के आदेश पारित कर दिये।

बाद आयोग ने नोटिफिकेशन जारी कर परीक्षा को फिलहाल स्थगित कर दिया। साथ ही बताया कि मुख्य परीक्षा की नई तिथि जल्द घोषित की जाएगी।

केदारनाथ धाम को लेकर फैली ऐसी अफवाह कि मच गया हंगामा, तीर्थपुरोहितों को आना पड़ा आगे

रुद्रप्रयाग, एजेंसी। केदारनाथ उपचुनाव में विपक्ष की ओर से केदारनाथ मंदिर को दिल्ली में बनाने के मामले में फैलाई जा रही अफवाह पर कहा कि इस मामले में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने त्वरित कार्रवाई करते हुए कड़ा कानून बनाया, जिसके लिए वे सदैव उनके आभारी रहेंगे। केदार सभा के अध्यक्ष राजकुमार तिवारी ने कहा कि केदारनाथ धाम के नाम से दिल्ली में कुछ समय पूर्व जो केदारनाथ ट्रस्ट बना था। उस मामले में तब तीर्थ पुरोहितों की मुख्यमंत्री से वार्ता हुई थी, जिसके तत्काल बाद मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया था कि ऐसा नहीं होने दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने तीर्थ पुरोहितों की भावनाओं का सम्मान करते हुए इस मामले में कैबिनेट में प्रस्ताव रखा जिसके बाद चारधामों के नाम से देश मे कहीं भी मंदिर नहीं बनाने को लेकर कड़ा कानून बनाया गया, जिसके लिए समस्त तीर्थ पुरोहित मुख्यमंत्री के आभारी हैं। आचार्य संजय प्रसाद ने कहा कि दिल्ली में केदारनाथ नाम से मंदिर बनाये जाने का कोई मामला वर्तमान में है ही नहीं और केवल चुनाव के माहौल में राजनीतिक रोटियां सेकी जा रही हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने यह मामला संज्ञान में आने पर कड़ा कानून बनाया। आचार्य विनोद शुक्ला ने कहा कि केदारनाथ धाम का मंदिर दिल्ली में बनाये जाने को लेकर केवल झूठ फैलाया जा रहा है।

बाइक-कार भिड़त में घायल युवक की मौत

ऋषिकेश, एजेंसी। ऋषिकेश-देहरादून मार्ग पर बाइक और कार की भिड़ंत में घायल दूसरे युवक की भी मौत हो गई है। युवक को उपचार के लिए एम्स में भर्ती कराया गया था। बीते सोमवार की देर रात्रि को ऋषिकेश-देहरादून मार्ग पर रामा पैलेस सिनेमा हॉल के पास से बाइक पर सवार दो युवक तेज रफ्तार से इंद्रमणि बडोनी चौक की ओर जा रहे थे। इस दौरान एक कार चालक अपनी कार पीछे कर रहा था, जो अचानक तेज रफ्तार बाइक से टकरा गई। इस टक्कर से बाइक सड़क के दूसरी ओर जा गिरी। टक्कर इतनी भीषण थी कि बाइक के चिथड़े उड़ गए। घटना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल दोनों युवकों को तत्काल उपजिला चिकित्सालय पहुंचाया। जहां एक युवक यश प्रजापति (22) पुत्र अनिल प्रजापति निवासी गुमानीवाला, ऋषिकेश को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। वहीं दूसरे घायल ऋषि कुशवाह पुत्र दिनेश कुशवाह निवासी नेहरू ग्राम इंद्रानगर की भी उपचार के दौरान एम्स में मौत हो गई।

गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर नगर कीर्तन का किया आयोजन

ऊधम सिंह नगर, एजेंसी। गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व के मौके पर रुद्रपुर में सिख समाज के द्वारा नगर कीर्तन का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों की संख्या में सिख संगतों के द्वारा शिरकत की गई। इस दौरान पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था के इंतजाम किए गए। वहीं, एसएसपी मणिकांत मिश्रा ने खुद नगर कीर्तन में पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया और पुलिसकर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

प्राप्त सूचना के मुताबिक गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर बीते गुरुवार को सिख समाज एवं स्कूली बच्चों ने नगर कीर्तन निकाला। इस दौरान नगर कीर्तन में पंजाब की परंपराओं को दर्शाया गया। इसी के साथ ही स्कूली बच्चों एवं सिख धर्म के लोगों द्वारा सिख समाज की परंपरा से संबंधित जोशपूर्ण करतब दिखाए गए। ताकि आने वाली युवा पीढ़ियों को उनके धर्म के बारे में जानकारी हो। एसएसपी मणिकांत मिश्रा ने बताया कि प्रकाश पर्व के मौके पर शहर में नगर कीर्तन का आयोजन किया गया। जिसमें सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए गए। इस दौरान सिख समाज के द्वारा एसएसपी और एसपी सिटी को पगड़ी पहनाकर तथा सीओ को पटका उढ़ाकर सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने भी समस्त प्रदेशवासियों को गुरु नानक देव जी के आगमन पूर्व की बधाई दी है। न्याय और मानवता की राह पर चलने की प्रेरणा दी है। उन्होंने कहा कि गुरु नानक जी ने समाज की बुराइयों को दूर करने के लिए अपने उपदेशों एवं शिक्षा के माध्यम से लोगों को जागरूक किया है।

बिरसा मुंडा 150 वीं जयंती, पीएम मोदी का देश के जनजाति समुदाय से संवाद, हलदुखाता के लोगों ने भी सुना

कोटद्वार, एजेंसी। बिरसा मुंडा 150 वीं जयंती पर देश के प्रधामंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के जनजाति समुदाय के लोगो से संवाद किया। इसी क्रम में कोटद्वार क्षेत्र के अंतर्गत हलदुखाता में एवीएन स्कूल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बोक्सा समुदाय के लोगो ने प्रधानमंत्री के भाषण को सुना।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करते हुए विधायक पौड़ी राजकुमार पोरी ने कहा कि देश क विकास तभी संभव है जब हम पिछड़े हुए हमारे भाई- बहनों को साथ लेकर चलेंगे। कहा कि केंद्र सरकार ने जनजाति समुदाय के उत्थान के लिए अनेक योजनाओं को लागू किया है।

जिससे आदिवासी समुदाय के लोगो को समाज व विकास की मुख्य धारा में आने का अवसर मिला है। कहा कि आदिवासी क्षेत्र में सभी बुनियादी सुविधाओं को प्राथमिकता से धरातल पर उतारा जा रहा है।

उत्तराखण्ड गो सेवा आयोग के अध्यक्ष पं0 राजेन्द्र अणथ्वाल ने कहा कि जनजाति समुदाय के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। कहा कि जनजाति समुदाय को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए केंद्र व राज्य सरकार निरंतर प्रयासरत है।

धाम से 170 टन कूड़ा निकला, 100 टन बेचकर की 8 लाख की कमाई, नगर पंचायत बनीं मालामाल

चमोली, एजेंसी। गत वर्ष चमोली जिला प्रशासन की पहल पर देश के प्रथम गांव माणा में सफाई और पार्किंग का जिम्मा भी नगर पंचायत को सौंपा गया। इसके अलावा बीकेटीसी के सफाई कर्मियों की ओर से मंदिर परिसर की साफ-सफाई में हीला-हवाली की गई जिसके बाद मंदिर क्षेत्र की साफ-सफाई भी नगर पंचायत ही कर रहा है। इस वर्ष चारधाम यात्रा के दौरान बदरीनाथ धाम और आसपास से 170 टन अजैविका कूड़ा निकला। इसमें से 100 टन कूड़ा बेचकर नगर पंचायत बदरीनाथ ने लगभग 8 लाख रुपये की कमाई की है। इसके अलावा नगर पंचायत ने ईको पर्यटन शुल्क से 1.76 करोड़ रुपये की कमाई की है। बदरीनाथ धाम में साफ-सफाई और ईको पर्यटन का जिम्मा नगर पंचायत बदरीनाथ संभालता है। गत वर्ष चमोली जिला प्रशासन की पहल पर देश के प्रथम गांव माणा में सफाई और पार्किंग का जिम्मा भी नगर पंचायत को सौंपा गया। इसके अलावा बीकेटीसी के सफाई कर्मियों की ओर से मंदिर परिसर की साफ-सफाई में हीला-हवाली की गई जिसके बाद मंदिर क्षेत्र की साफ-सफाई भी नगर पंचायत ही कर रहा है। नगर पंचायत ने इस वर्ष ईको पर्यटन शुल्क के तहत हेली कंपनियों से 27 लाख 23 हजार रुपये, माणा में पार्किंग शुल्क से 29 लाख 48 हजार 80 रुपये और मंदिर समिति से 37 लाख 28 हजार रुपये की कमाई की। बदरीनाथ धाम क्षेत्र और आसपास इस वर्ष 170 टन से भी अधिक अजैविक कूड़ा एकत्रित किया गया। नगर पंचायत ने इसमें से 100 टन कूड़े की रिसाइकिल कर बिक्री की जिसे बेचकर 8 लाख रुपये की कमाई की। बदरीनाथ धाम नगर पंचायत के ईओ सुनील पुरोहित का कहना है कि इस यात्रा सीजन में 12 नवंबर तक 170 टन से भी अधिक अजैविक कूड़ा एकत्रित किया गया। धाम को साफ रखने के लिए सुबह से रात तक तीन बार सफाई की जाती है। क्यूआर कोड लगाने के उपरांत डीआरएस (डिजिटल रिफंड सिस्टम) प्रणाली अपनाई गई। इसके तहत श्रद्धालु व पर्यटकों को प्लास्टिक कचरा वापस लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

चोरी का मुकदमा दर्ज नहीं किए जाने के मामले में जांच के आदेश

ऋषिकेश, एजेंसी। तीन माह तक चोरी का मुकदमा दर्ज न किए जाने संबंधी मामले में एसपी देहात ने सीओ ऋषिकेश को जांच के आदेश दिए हैं। कोतवाली पुलिस ने तीन माह तक इसे दबाए रखा था। पीड़ित ने इस संबंध में सीएम पोर्टल में शिकायत की थी। जिसके बाद पुलिस ने बीते 11 नवंबर को मामला दर्ज किया था।

गंगा विहार कॉलोनी हरिद्वार रोड निवासी सुधांशु थपलियाल ने सीएम पोर्टल में शिकायत दर्ज की थी। थपलियाल ने बताया था कि वह बीते 29 जुलाई को अपने गांव गए थे। जब 10 अगस्त को लौटकर वापस आए तो देखा कि घर के मुख्य दरवाजे का ताला टूटा हुआ है। 112 के माध्यम से तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दी।

थपलियाल ने बताया कि सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और घर का निरीक्षण भी किया। इस संबंध में उन्होंने 12 अगस्त को त्रिवेणीघाट पुलिस चौकी में लिखित शिकायत दी। लेकिन पुलिस मुकदमा दर्ज नहीं कर रही है। थपलियाल ने बताया कि उनका घर स्थानीय विधायक व कैबिनेट मंत्री के घर के सामने हैं।

कैबिनेट मंत्री की सुरक्षा टीम मेरे घर के सामने ही रहती है। बावजूद इसके चोरों ने घटना को अंजाम दिया। थपलियाल ने सीएम को दी शिकायत में लिखा कि उसने पुलिस को सीसीटीवी फुटेज भी उपलब्ध कराए हैं। बावजूद इसके पुलिस मुकदमा दर्ज नहीं कर रही है।

बाद में सीएम के निर्देश पर पुलिस ने बीते रविवार को मामले में मुकदमा दर्ज किया था। अब एसपी देहात लोकजीत सिंह ने मामले में जांच के लिए सीओ ऋषिकेश को आदेश दिए हैं।

मूल निवासी हुए भूमिहीन, बाहर के लोगों ने कब्जाई जमीन

अल्मोड़ा, एजेंसी। जहां एक ओर संसाधनों के अभाव में पर्वतीय क्षेत्रों से पलायन बढ़ता चला गया। वहीं लचर भू-कानूनों का फायदा उठा बाहरी लोग लगातार उनकी खाली जमीनों पर काबिज होते रहे।

अधिकतर ने पहाड़ के पर्यटन क्षेत्रों में कृषि, बागवानी के नाम पर बेशकीमती भूमि खरीदी, कई पूंजीपतियों को लीज पर एकड़ों के हिसाब जमीनें दी गई। लेकिन आज तक उन जमीनों पर कृषि-बागवानी का कार्य नहीं हुआ। दो दशकों तक यह खेल स्थानीय नेताओं, प्रशासकों के जरिए चलता रहा। अब प्रशासन नियम विरुद्ध जमीन खरीदने वालों पर नोटिस देकर मुकदमा दर्ज करने की तैयारी कर रही है। अब तक 700 नाली से अधिक भूमि संबंधी मामला सामने आ चुका है। राज्य बनने के बाद से अल्मोड़ा जिले में पलायन तेजी से बढ़ा। पलायन के

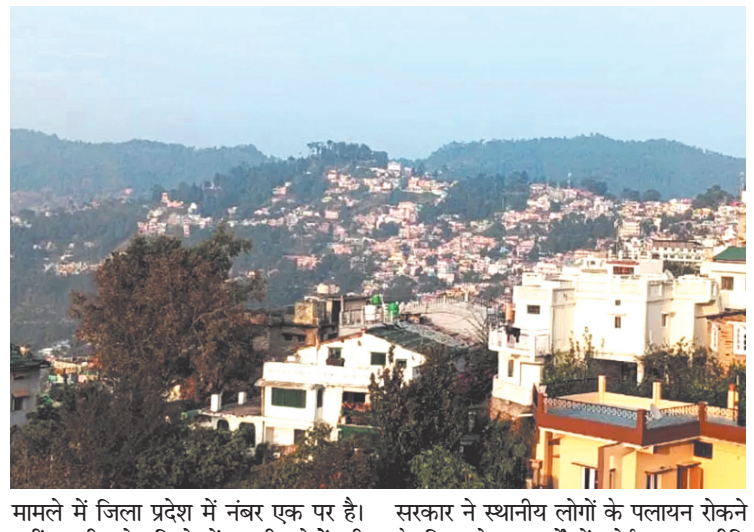

मामले में जिला प्रदेश में नंबर एक पर है। वहीं दूसरी ओर जिले में बाहरी लोगों की तादात भी इसी अनुपात में बढ़ती चली गई। सरकार ने स्थानीय लोगों के पलायन रोकने के लिए तो इन वर्षों में कोई कारगर नीति नहीं बनाई। लेकिन बाहरी राज्यों के पूंजीपतियों के लिए नीति जरूर तैयार कर दी। 2003 में बने नए भू-कानूनों ने बाहरी लोगों को उत्तराखंड में पांव पसारने का मौका दिया। जिसके बाद इन दो दशकों में तो बाढ़ जैसी आ गई। पूंजीपतियों के साथ नेताओं, प्रशासकों, बालीवुड स्टारों की नजर यहां के पर्यटन क्षेत्रों की जमीनों पर पड़ी। जिसके बाद बेतहाशा जमीनों की खरीद फरोख्त हुई। जिले के पर्यटन क्षेत्रों रानीखेत, मजखली, द्वाराहाट, लमगड़ा, कसारदेवी, बिनसर, मानिला, मार्चुला में आज स्थानीय लोगों की जमीनों में बाहरी क्षेत्रों के लोगों का कब्जा है। कईयों ने होटल, रिसार्ट बना लिए हैं। कई तैयारी कर रहे हैं। तय समय पर अपना इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करना होता है। लेकिन इन लोगों ने जमीन खरीदने के बाद एक कोठी बनाकर छोड़ दी। जिस प्रयोजन के लिए जमीन खरीदी वह कार्य नहीं किया। बीते 20 वर्षों से यह खेल चल रहा है।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com
राष्ट्रीय दैनिक प्रात:किरण
नई दिल्ली, शनिवार, 16 नवंबर, 2024

संक्षिप्त खबरें

आप के पूर्व विधायक हाजी इशराक खान ने थामा कांग्रेस का हाथ

नई दिल्ली । दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने आम आदमी पार्टी के सीलमपुर से पूर्व विधायक हाजी इशराक खान को कांग्रेस का पटका पहनाकर उनका कांग्रेस परिवार में शामिल होने पर स्वागत किया। हाजी इशराक खान के साथ इकराम हसन ने भी कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। श्री यादव ने कहा कि 2015-20 तक सीलमपुर से विधायक रहे इशराक खान का कांग्रेस की नीतियों में विश्वास व्यक्त करके कांग्रेस का हाथ थामने के बाद पार्टी मजबूत होगी। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव के अलावा कांग्रेस सचिव प्रभारी दानिश अबरार, दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री हारुन यूसूफ, डॉ. नरेन्द्र नाथ, मीडिया चेयरमेन एवं पूर्व विधायक अनिल भारद्वाज, बाबरपुर जिला अध्यक्ष राजकुमार जैन, निगम पार्षद और बाबरपुर जिला उपाध्यक्ष हाजी जरीफ मुख्य रुप से मौजूद थे।

कांग्रेस पार्टी का दामन थामने के बाद हाजी इशराक खान ने कहा कि मैं दिल्ली और देश में कांग्रेस पार्टी की नीतियों में पूर्ण विश्वास रखकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के जनता के हितों और अधिकारों के लिए जारी संघर्ष से प्रेरित होकर कांग्रेस पार्टी में शामिल हुआ हूं। मैं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेन्द्र यादव की दिल्ली में लोगों, अल्पसंख्यक, दलितों व गरीबों की समस्याओं और परेशानियों को सुनने और समझने के लिए जिस तरह काम कर रहे है मैं यादव जी कार्यशैली से प्रभावित होकर उनके नेतृत्व में सीलमपुर की जनता के कल्याण और हितों के लिए कांग्रेस का सिपाही बनकर काम करूंगा। मैं कांग्रेस नेतृत्व को मायूस नही होने दूंगा और पार्टी लाईन पर चलकर काम करूंगा। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र चुनाव के बाद बहुत कुछ बदलने वाला है।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि हाजी इशराक खान ने विधायक रहते हुए सीलमपुर विधानसभा में जन प्रतिनिधि के रुप में रहते हुए क्षेत्र के विकास और जनता के कल्याण के लिए अनेकों काम किए। दो बार हज कमेटी के चेयरमैन रहते हुए अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों के लिए काम किए। बेदाग राजनीति से पहले हाजी इशराक खान सामाजिक सेवा के जरिए लोगों के लिए काम करते थे। मुझे विश्वास है कि इनके पार्टी में शामिल होने के बाद आने वाले समय में दिल्ली की बेहतरी के लिए कांग्रेस के प्रति लोगों का रुझान बढ़ेगा, सब साथ मिलकर दिल्ली में बदलाव के लिए काम करेंगे। मैं विश्वास दिलाता हूं कि कांग्रेस पार्टी में शामिल होने के बाद हाजी इश्राक खान को पूर्ण सहयोग करके उनके अनुभव को कांग्रेस पार्टी अहमियत के तौर पर संगठन में जगह देगी।

बदरपुर में किराएदार और मकान मालिक के बीच जबदरस्त बहस

नई दिल्ली। दिल्ली के बदरपुर इलाके से एक सीसीटीवी फुटेज सामने आया है, सीसीटीवी में देखा जा रहा है, दो पक्षों के बीच जमकर लाठी डंडे चल रहे हैं. इस वीडियो में कुछ लड़के घर के गेट को तोड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं. लाठी डंडों से जमकर एक दूसरे की पिटाई कर रहे है.दिल्ली पुलिस के मुताबिक, सीसीटीवी बुधवार रात 9बजे के आसपास का है. ये झगड़ा किरायदार और मकान मालिक के बीच का है. जानकारी के मुताबिक सीसीटीवी में जो लड़के बाहर खड़े है वो किरायेदार हैं. दिल्ली पुलिस के मुताबिक एक झगड़ा किराएदार और मकान मालिक के बीच का है. वायरल सीसीटीवी पर संज्ञान लेते हुए पुलिस ने तीन लोगों को हिरासत में लिया है. अभी तक पुलिस को किराएदार और मकान मालिक किसी की तरफ से शिकायत नही मिली है.पुलिस का कहना है मामले में लीगल एक्शन लिया जा रहा है.

दिल्ली में अवैध प्रवासियों की बढ़ती संख्या पर एलजी सक्सेना का एक्शन, अधिकारियों को तत्काल जारी किए ये निर्देश

- पत्र में कहा गया, सड़क, फुटपाथ और पार्कों पर ऐसे लोगों द्वारा अतिक्रमण भी बढ़ रहा है।

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना ने दिल्ली में अवैध प्रवासियों की संख्या में अचानक वृद्धि के बारे में रिपोर्टों का संज्ञान लिया और तुरंत इसके उपाय सुनिश्चित करने के आदेश दिए। एलजी सक्सेना के प्रमुख सचिव ने मुख्य सचिव, पुलिस आयुक्त, आयुक्त एमसीडी और अध्यक्ष एनडीएमसी को इस संबंध में लेटर जारी किया है।

उन्होंने लिखा, मुख्य सचिव पहचान के दस्तावेजों के लिए आवेदन करने वाले लोगों के सत्यापन में अतिरिक्त सतर्कता बरतने के लिए जिला मजिस्ट्रेटों को निर्देश जारी कर सकते हैं। इसके अलावा पुलिस आयुक्त फील्ड स्तर के अधिकारियों को विशेष रूप से सड़क के किनारे और खाली सरकारी भूमि पर अतिक्रमण करने वालों का निरीक्षण करते समय अतिरिक्त सतर्क रहने के निर्देश भी जारी कर सकते हैं। इसके अलावा, दिल्ली पुलिस अवैध अप्रवासियों की पहचान करने के लिए एक महीने तक विशेष अभियान चलाएगी और केंद्रीय एजेंसियों के साथ समन्वय में आगे की कार्रवाई करेगी।

पत्र में कहा गया, सड़क, फुटपाथ और पार्कों पर ऐसे लोगों द्वारा अतिक्रमण भी बढ़ रहा है। ऐसी खबरें हैं कि आधार कार्ड, चुनाव पहचान पत्र आदि जैसे पहचान दस्तावेज फर्जी दस्तावेजों के आधार पर तैयार करने और अपनाने के प्रयास चल रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि इन अवैध प्रवासियों द्वारा इन दस्तावेजों को नागरिकता दस्तावेज के रूप में दावा किया जा रहा है।

उन्होंने कहा, अगर चुनाव पहचान पत्र अवैध अप्रवासियों को जारी किया जाता है, तो यह उन्हें हमारे देश में लोकतंत्र का सबसे शक्तिशाली अधिकार यानी वोट देने का अधिकार मिल जाएगा। अवैध अप्रवासियों को ऐसे अधिकार देना किसी भी भारतीय नागरिक द्वारा स्वीकार नहीं किया जा सकता है और ऐसे कदम राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए हानिकारक भी हो सकते हैं।

निरीक्षण करते समय अतिरिक्त सतर्कता बरतें

उन्होंने कहा कि मुख्य सचिव पहचान दस्तावेजों के लिए आवेदन करने वाले लोगों के सत्यापन में अतिरिक्त सतर्कता बरतने के लिए संभागीय आयुक्त के माध्यम से जिलाधिकारियों को निर्देश जारी कर सकते हैं। पत्र में कहा गया है कि पुलिस आयुक्त फील्ड स्तर के अधिकारियों को सड़क के किनारे और खाली सरकारी जमीन पर अतिक्रमण करने वालों का निरीक्षण करते समय विशेष रूप से अतिरिक्त सतर्क रहने के निर्देश भी जारी कर सकते हैं। दिल्ली पुलिस एक महीने तक विशेष अभियान चलाए

उन्होंने कहा कि दिल्ली पुलिस अवैध प्रवासियों की पहचान के लिए एक महीने तक विशेष अभियान चलाएगी और केंद्रीय एजेंसियों के साथ समन्वय में आगे की कार्रवाई करेगी। उन्होंने कहा कि सभी सरकारी एजेंसियों को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निदेर्शानुसार शहर में कहीं भी सार्वजनिक स्थानों पर कोई अनधिकृत कब्जा न हो।

वायु प्रदूषण से निपटने को दिल्ली में चलेंगी 106 अतिरिक्त बसें, मेट्रो अतिरिक्त फेरे लगाएगी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने शुक्रवार को कहा कि वायु गुणवत्ता खराब होने के कारण राजधानी में लागू किए गए चरणबद्ध प्रतिक्रिया कार्य योजना (ग्रैप) के तीसरे चरण के उपायों के तहत यहां 106 अतिरिक्त क्लस्टर बसें संचालित होंगी और मेट्रो ट्रेन 60 अतिरिक्त चक्कर लगाएगी। देश में राजधानी का प्रदूषण स्तर सबसे खराब दर्ज किए जाने के बाद वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने यहां ग्रैप के तीसरे चरण को लागू कर दिया। दिल्ली में लगातार दो दिन तक वायु गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में रही। दिल्ली में शुक्रवार को भी वायु गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में दर्ज की गई, जहां एक्यूआई 411 रहा।

राय ने एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि दिल्ली में ई-बस और सीएनजी से चलने वाली बस को छोड़कर अंतरराज्यीय बस के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसके अलावा बीएस 3 पेट्रोल, बीएस 4 डीजल चार पहिया वाहनों पर भी रोक लगाई गई है। मंत्री ने बताया कि सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने और निजी वाहनों के उपयोग को कम करने के उद्देश्य से दिल्ली परिवहन निगम 106 अतिरिक्त क्लस्टर बसें संचालित करेगा जबकि मेट्रो ट्रेन 60 अतिरिक्त चक्कर लगाएगी। मंत्री ने कहा कि यदि वायु गुणवत्ता और खराब होती है तो कृत्रिम बारिश जैसे आपातकालीन उपायों पर भी विचार किया जा सकता है और वह इस बारे में केंद्र सरकार के साथ बात करेंगे। उन्होंने बताया कि ग्रैप के तीसरे चरण के उपायों के तहत दिल्ली में निर्माण और किसी भी तरह की तोड़फोड़ की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। राय ने कहा, हम दिल्ली में ग्रैप-3 के तहत लागू उपायों को और अधिक प्रभावी बनाने पर काम कर रहे हैं। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे कम दूरी की यात्रा के लिए साइकिल का उपयोग करें, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें और जब भी संभव हो घर से ही काम करने सहित अन्य उपाय करें। पर्यावरण मंत्री ने बताया कि सर्दियों से संबंधित कार्य योजना को मजबूत करने के लिए एमसीडी, पीडब्ल्यूडी, सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग, परिवहन, डीटीसी, मेट्रो, शिक्षा और अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ शुक्रवार को एक अंतर-विभागीय बैठक की गई।

दिल्ली न्याय यात्रा का मकसद नफरत मिटाना : देवेन्द्र यादव

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली न्याय यात्रा के दूसरे चरण में शुक्रवार को आठवे दिन दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव के नेतृत्व में गोकुलपुरी विधानसभा के बैंक ऑफ बड़ोदा, मंडोली रोड से शुरु हुई। इस मौके पर देवेन्द्र यादव ने गुरु पूरब के अवसर पर दिल्ली न्याय यात्रा के योद्धाओं, शामिल लोगों और दिल्ली की जनता को दिल्ली कांग्रेस की ओर से शुभकामनाएं दी। गुरु नानक देव जी के जन्मदिन पर देवेन्द्र यादव ने दिलशाद गार्डन के बेबे नानक देव जी गुरुद्वारा में माथा टेक कर दिल्ली की खुशहाली की कामना की।

दिल्ली न्याय यात्रा के दौरान प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव का जगह-जगह भव्य स्वागत हुआ और यात्रा के शुरुआत में बाबरपुर जिला अध्यक्ष राजकुमार जैन ने भव्य स्वागत करते हुए प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव को चॉदी का मुकुट भी पहनवा। राज्यसभा सांसद रणदीप सिंह सुरजेवाला भी आज दिल्ली न्याय यात्रा का हिस्सा बने। उन्हें संविधान की कॉपी भी भेंट की गई। लगभग प्रतिदिन 25 किलोमीटर चलने वाली दिल्ली न्याय यात्रा आज नार्थ ईस्ट लोकसभा के बाबरपुर जिले के अंतर्गत गोकुलपुरी विधानसभा, मुस्तफाबाद विधानसभा और करावल नगर विधानसभा में निकाली गई।

दिल्ली न्याय यात्रा गोकुलपुरी विधानसभा में बैंक ऑफ बड़ोदा, मंडोली रोड से शुरू होकर सबोली चौक, सबोली रेलवे फाटक, मीत नगर 20 फुटा रोड़, मंगल बाजार रोड़, अमर कॉलोनी मेन रोड़, रविदास मंदिर लोनी गोल चक्कर, गोकुल पुर ऑटो स्टेंड, गोकुलपुरी चौक मदर डेयरी और दोपहर बाद बौध विहार, गोकुलपुरी होते हुए अरुण मॉडर्न पब्लिक स्कूल, ब्रिजपुरी मुस्तफाबाद विधानसभा, निमार्णाधीन डिस्पेंसरी, शिव विहार तिराहा, करावल नगर चौक, शेरपुर चौक मेन रोड़ करावल नगर से यात्रा निकलकर भजनपुरा चौक मेन करावल नगर रोड़ जाकर समापन हुआ।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि देश में नफरत, समाज और जातीय भेदभाव को खत्म करने के लिए जन नायक, सर्वप्रिय नेता राहुल गांधी जी ने जो भारत जोड़ा यात्रा और भारत जोड़ो न्याय यात्रा निकाली थी, उसी मकसद को चरितार्थ करने के लिए दिल्ली कांग्रेस पिछले 11 वर्षों से अन्याय झेल रहे दिल्लीवालों को न्याय दिलाने के लिए दिल्ली कांग्रेस दिल्ली न्याय यात्रा निकाल रही है जिसके पहले चरण में जनता का भरपूर समर्थन मिला और पार्टी के योद्धाओं व कांग्रेस समर्थकों की यात्रा में भागीदारी के बाद संगठन आज मजबूत स्थिति में खड़ा दिखाई देता है। श्री यादव ने कहा कि दिल्ली न्याय यात्रा को मिल रहे जनता के समर्थन और प्यार के बाद अहसास हो रहा है कि दिल्ली की जनता अब बदलाव के लिए तैयार है और दिल्ली में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद हम दिल्ली वालों के दुख, दर्द और परेशानियां का अंत करने में भागीदारी निभाएंगे।

श्री यादव के साथ दिल्ली न्याय यात्रा में रणदीप सिंह सुरजेवाला ने चलते हुए सब्जी मार्केट में जाकर लोगों से मिले और मंहगाई पर चर्चा भी की। लोगों ने बताया कि महंगाई अप्रत्याशित बढ़ रही है हमारे धंधे पर अधिक प्रभाव पड़ा है, हमारे साथ खरीदार भी महंगाई की मार झेल रहे है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में महंगाई इस कदर बढ़ रही है कि लोगों का बजट पूरी तरह से बिगड़ गया है। दिल्लीवाले महंगाई और बेरोजगारी की दोहरी मार झेल रहे है। सरकार में आते ही केजरीवाल 5 लाख और नरेन्द्र मोदी ने 2 करोड़ रोजगार देने का वायदा किया था, जो पूरी तरह फेल साबित हुआ। मुख्यमंत्री रहते हुए केजरीवाल ने युवाओं को रोजगार देने की जगह नशे की ओर धकेल दिया जबकि प्रधानमंत्री मोदी जी ने युवाओं को पकोड़े तलने के लिए छोड़ दिया। भाजपा और आम आदमी पार्टी देश और दिल्ली में महंगाई और बेरोजगारी पर नियंत्रण करने में पूरी तरह फेल साबित रही है।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि गंदगी, कूड़े, जगह-जगह नालिया और सीवर की समस्याएं झेल रहे दिल्लीवासी अरविन्द केजरीवाल का उनकी पदयात्राओं में तिरस्कार कर रहे है। लोगों का न्याय यात्रा के प्रति रुझान से दिखाई दे रहा है कि वो कांग्रेस को अपनी जरुरत के रुप में देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैं उम्मीद करता हूं कि न्याय योद्धा दिल्ली के दुख, दर्द को सुनने और परेशानियों को समझने की कोशिश करे। दिल्ली के हालात को जानने के लिए उनके दिलों को छूने वाली बातें करके उनसे भावनात्मक रुप से जुड़ने की कोशिश करें। दिल्ली की जनता के दिल्ली न्याय यात्रा के साथ जुड़ने के बाद यात्रा ऐतिहासिक सफलता की ओर बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि दिल्लीवालों के मिल रहे सहयोग और समर्थन के लिए दिल की गहराईयों से धन्यवाद करता हूं। श्री यादव ने कहा कि दिल्ली न्याय यात्रा 2025 के विधानसभा चुनाव में एक बड़ा बदलाव लेकर आऐगी।

दिल्ली में ऑफिस टाइमिंग बदली, सीएम आतिशी ने लिया बड़ा फैसला

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में वायु प्रदूषण बड़ी तेजी के साथ बढ़ता जा रहा है, जिसके रोकने में प्रयास में दिल्ली की आप सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया है। दिल्ली सरकार की तरफ से सरकारी ऑफिस के टाइमिंग में बदलाव कर दिया हैं। अब सभी सरकारी दफ्तरों के लिए अलग-अलग टाइमिंग होगी। जैसे एमसीडी के सभी ऑफिस सुबह 8.30 से शाम 5.00 बजे तक खुलेंगे। वहीं दूसरी, ओर सेंट्रल गवर्नमेंट के ऑफिस पहले की ही तरह सुबह 9.00 से शाम 5.00 होगी। वहीं दिल्ली सरकार के दफ्तरों की टाइमिंग सुबह 10 बजे से शाम 6.30 बजे होगी। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी की ओर से शुक्रवार को इसकी घोषणा की गई है। दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण बहुत तेजी के साथ बढ़ रहा है, जिसके बाद ऐसा फैसला किया है, आज से ग्रैप-3 भी लागू हो गया है। साथ ही दिल्ली में 5 वीं तक के सभी स्कूलों को अगले आदेश तक के लिए बंद कर दिया है। दिल्ली सरकार चाहती है कि दिल्ली की सड़कों पर कार बाइक का ट्रैफिक कैसे भी कम हो। साथ ही अधिक गाड़ियों के सड़कों पर आने से ट्रैफिक और प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है। सीएम आतिशी ने कहा कि प्रदूषण के मद्देनजर सड़कों पर वाहनों का ट्रैफिक कम करने के लिए दिल्ली के सरकारी कार्यालयों में अलग-अलग समय पर कामकाज होगा।

मंत्री गोपाल राय ने क्या कहा

वहीं दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने कहा कि प्रदूषण के मद्देनजर 106 बस शटल सेवा के रूप में चलेंगी, मेट्रो ट्रेन 60 अतिरिक्त चक्कर लगाएंगी। दिल्ली में पिछले कुछ दिनों से प्रदूषण का लेवल काफी बढ़ा हुआ है। शुक्रवार भी दिल्ली के कई इलाकों में एक्यूआई 400 के पार रहा है। दीवाली के बाद हवा की स्पीड कम होने से दिल्ली में धुंध देखी जा रही है।

जानें क्या है बदलाव

समय : एमसीडी सुबह 8.30 से शाम 5 बजे तक

केंद्र सरकार : सुबह 9 से शाम 5 बजे तक

दिल्ली सरकार : सुबह 10 बजे से शाम 6.30 बजे तक

मूलभूत सुविधाओं के लिए अभी भी तरस रहे हैं दिल्ली के छतरपुर के लोग

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली के छतरपुर इलाके में जनता से जुड़े मुद्दे पर जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों का रवैया हमेशा उदासीन रहा है। सड़क जाम से लेकर बारात घर के निर्माण और गंदे पानी की सप्लाई से लेकर मिनी स्टेडियम के निर्माण तक में सालों से स्थानीय लोगों में मायूसी बनी हुई है। पूरे छतरपुर इलाके में गंदे पानी की निकासी के लिए आवाज उठाई गई। यहां तक कि दिल्ली की तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने साल 2012 में जिस 200 बेड अस्पताल का फीता काटकर उदघाटन किया वहां इस समय लंबे लंबे पेड़ उग गए हैं और बनाने की ओर किसी का ध्यान नहीं गया है। हालांकि अदालत ने समय समय पर विभागीय अधिकारियों को फटकार लगाई है लेकिन जिस हिसाब से काम होना चाहिए उसके लिए अभी भी स्थानीय लोगों को मायूस ही रहना पड़ रहा है। हां, इस बीच कुछ मामले में स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता ऋषिपाल महाशय की मेहनत और अदालत में दिन रात चक्कर काटने के बाद कुछ सकारात्मक रुप देखने को जरूर मिल रहा है। यहां के असोला फतेपुर नाला 40 सालों से बीमारियों के लिए जाना जाता है। कैंसर जैसी बीमारियां यहां कई लोगों को अपनी चपेट में ले चुका है। बीते दिन दिल्ली हाई कोर्ट ने ऋषिपाल महाशय की याचिका पर फैसला सुनाया और इसे तुरंत साफ करने का निर्देश दिया। इसी प्रकार 70 सालों से सामुदायिक भवन के लिए तरस रहे लोगों को बीते हफ्ते ही दिल्ली हाई कोर्ट ने आदेश देकर तुरंत गांव की जमीन को कब्जे में लेकर निर्माण के आदेश दिए हैं। इसी तरह महाशय की कवायद के बाद भाटी माईंस कूड़ाघर को बंद किया गया। ऋषिपाल ने जौनापुर-मांडी सड़क के चौड़ीकरण के लिए पीडब्लूडी को आवेदन किया और फिर जौनापुर में सिंगापुर विश्वविद्यालय के निर्माण को रोके जाने पर तत्कालीन सांसद रमेश विधुड़ी के द्वारा संसद मे प्रश्न उठवाने और दिल्ली के मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल को लगातार पत्राचार करने, आयानगर गांव में संडे बाजार में पानी की समस्या के लिए और डेरा गांव में मिनी स्टेडियम के लिए महाशय ने लगातार कोर्ट से लेकर स्थानीय प्रशासन के पास गुहार लगाई है।

दिल्ली पंचायत संघ का आप के मेयर को वोट न देने वाले पार्षदों के प्रति आभार

नई दिल्ली। दिल्ली पंचायत संघ ने दिल्ली नगर निगम के मेयर चुनाव में ह्लआपह्न पार्टी के कुछ पार्षदों द्वारा अपनी पार्टी के खिलाफ वोट देने पर उनका आभार व्यक्त किया है। यह कदम गांवों के हाउस टैक्स माफी और ग्रामीण हितों की उपेक्षा के खिलाफ एक अहम संदेश है। पंचायत संघ के प्रमुख थान सिंह यादव ने इसे गांवों, गरीबों और किसानों के पक्ष में उठाया गया साहसिक कदम बताया।

पंचायत संघ प्रमुख थान सिंह यादव ने बताया कि आम आदमी पार्टी के ग्रामीण पृष्ठभूमि के पार्षदों से आग्रह किया था कि वे मेयर चुनाव में अपनी पार्टी के पार्षद को वोट ना दे, क्योंकि निवर्तमान में शैली ओबराय ने गांवो को हाउस टैक्स से मुक्त करने का वादा पूरा नहीं किया। उन्होंने ह्लआपह्न पार्टी के सभी पार्षदों और विधायकों से आग्रह किया कि वे दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पूर्व मेयर डॉ. शैली ओबरॉय द्वारा किए गए वादे–गांवों के हाउस टैक्स माफ करने–को नवनियुक्त मेयर से जल्द पूरा कराने के लिए आगे आएं।

पंचायत संघ प्रमुख थान सिंह यादव ने कहा कि यदि नवनियुक्त मेयर और सरकार इन मांगों को पूरा नहीं करते हैं, तो आगामी चुनाव में इसके खिलाफ भारी मतदान किया जाएगा। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि दिल्ली देहात के गरीब ग्रामीण किसानों की मांगों को पूरा कराने के लिए बड़े पैमाने पर आंदोलन चलाया जाएगा।

ग्रामीणों की मुख्य मांगें:

गांवों को हाउस टैक्स से मुक्ति: दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों को हाउस टैक्स से मुक्त किया जाए।

भवन उपनियम से बाहर: गांवों को नगर निगम के भवन उपनियमों से बाहर किया जाए। व्यावसायिक श्रेणी में नोटिफिकेशन: रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए गांवों को व्यावसायिक श्रेणी में अधिसूचित किया जाए।

बुक की गई संपत्तियों को फ्री किया जाए।

युवाओं को रोजगार: नगर निगम की सेवाओं में 100% आरक्षण के साथ युवाओं को नौकरियां दी जाएं।

सीमापुरी से तीन बार के विधायक और दलित नेता वीर सिंह धींगान आप में शामिल

नई दिल्ली । पूर्वी दिल्ली के सीमापुरी से तीन बार के विधायक रहे कांग्रेस के वरिष्ठ दलित नेता वीर सिंह धींगान शुक्रवार को आम आदमी पार्टी (आप) में शामिल हो गए। आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने उन्हें टोपी और पटका पहनाकर पार्टी की सदस्यता दिलाई। इस अवसर पर अरविंद केजरीवाल ने कहा कि वीर सिंह धींगान के आने से आम आदमी पार्टी की ओर से दलित समाज के लिए किए जा रहे कार्यो को मजबूती मिलेगी। दिल्ली में आम आदमी पार्टी अपने कामों की वजह से वोट मांगती है। इसी का नतीजा है कि आज दूसरी पार्टियों से अच्छे-अच्छे नेता हमारे साथ जुड़ रहे हैं। दिल्ली की जनता आम आदमी पार्टी के साथ मजबूती से खड़ी है और हम आने वाले चुनाव में प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रहे हैं। इससे पहले 10 नवंबर को सीलमपुर से पांच बार विधायक रहे कांग्रेस के बड़े नेता चौधरी मतीन अहमद आप में शामिल हुए थे। मतीन अहमद के बेटे और बहू भी कुछ दिन पहले कांग्रेस छोड़कर आप में शामिल हो गए थे। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में आप अपने कामों की वजह से वोट मांगती है। हम खुल के कहते हैं कि अगर काम किया है तो वोट देना, वरना हमें वोट मत देना। उन कामों का ही नतीजा है कि अच्छे-अच्छे लोग दूसरी पार्टियों से आज आम आदमी पार्टी की तरफ देख रहे हैं। एक तरह जहां जनता आम आदमी पार्टी के साथ खड़ी है दूसरी तरफ वहीं दूसरी पार्टियों के अच्छे नेता भी आम आदमी पार्टी में आना चाह रहे हैं। हमने पिछले हफ्ते भाजपा के कुछ नेताओं को शामिल कराया था। आज वीर सिंह धींगान हमारे परिवार में शामिल हुए। जो एक चलन दिख रहा है, इससे यही साफ जाहिर होता है कि आने वाले चुनाव के अंदर आम आदमी पार्टी बहुत मजबूती और अच्छे बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रही है।

उत्तर रेलवे

खुली ई–निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मंडल अभियंता/प्रथम, उत्तर रेलवे, नई दिल्ली द्वारा निम्न कार्य के लिए ई–टेंडर के माध्यम से निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं।

कार्य का नाम	सहायक मंडल अभियंता/करनाल के तहत एसएसई/डब्ल्यू/करनाल के अनुभाग में सुरक्षा कार्यों की मरम्मत, नीचे और ऊपर धारा पर पत्थर की पिचिंग को मजबूत करना, तटबंध के दोनों ओर, एबटमेंट, खंड में केयूएन–बीजेडके के बीच पुल संख्या 196 डब्ल्यूजेसी नहर किमी 126/13–17 की ड्रॉप दीवार और बेड फ्लोरिंग का निर्माण।
अनुमानित लागत	₹2,34,84,945.35
धरोहर राशि	₹2,67,400/- (यह नेट बैंकिंग या केवल भुगतान गेटवे के रूप में होना चाहिए। **नोट:** एफ.डी.आर. या डिमांड ड्राफ्ट के रूप में ई.एम.डी. स्वीकार नहीं की जाएगी। (रेलवे बोर्ड के पत्र संख्या 2015/सीई–1/सीटी/5/1 दिनांक 31.08.2016) के अनुसार आई.आर.ई.पी.एस. पर आमंत्रित निविदा के लिए।
समापन अवधि	12 महीने
ई–निविदा खोलने और प्रस्तुत करने के लिए दिनांक और समय	05.12.2024 को 15:00 बजे तक प्रस्तुत करने तथा निविदा खुलने का समय दिनांक 05.12.2024 को 15:00 बजे
निविदा की वेबसाइट जहां निविदा प्रपत्र खरीदा जा सकता है	www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है
समान प्रकार के कार्य	ट्रैक कार्य के अलावा कोई भी सिविल कार्य।

नोट: शपथ पत्र संलग्नक XXIV अनिवार्य रूप के रूप में निविदा शर्तों के साथ संलग्न नए प्रारूप में किया जाना चाहिए। और सभी सलंग्न दस्तावेज निविदाकर्ता द्वारा स्वयं सत्यापित किया जाना चाहिए।

सं.: 128–डब्ल्यू/280/निविदा सूचना/24–25/डब्ल्यू–I (NIT-51)
दिनांक: 13.11.2024 3527/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर सीएम आतिशी ने रकाबगंज गुरुद्वारा में दिल्लीवालों की खुशहाली के लिए प्रार्थना की

सभी देशवासियों को गुरु पर्व के पावन मौके पर लख लख बधाइयाँ–सीएम आतिशी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व के मौके पर दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने गुरुवार को श्री रकाबगंज साहिब गुरुद्वारा में मत्था टेक दिल्लीवालों की खुशहाली के लिए आशीर्वाद लिया। इस मौके पर सीएम आतिशी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को रुमाला साहिब भी भेंट किया और संगत के साथ कीर्तन में शामिल हुई।

इस मौके पर सीएम आतिशी ने गुरुपर्व के पावन मौके की बधाइयां देते हुए कहा कि, ह्लश्री गुरु नानक देव जी सैकड़ों साल पहले इस धरती पर आए लेकिन तब उन्होंने प्रेम, भाईचारा और बराबरी का जो सन्देश दिया वो आज के दौर में और भी ज्यादा जरुरी है

सीएम आतिशी ने कहा कि, श्री गुरु नानक देव जी ने हम सभी को बराबरी का रास्ता सिखायो उन्होंने सिखाया की कोई छोटा या बड़ा नहीं होता, सभी इंसान बराबर है।

उन्होंने कहा कि, आज के दौर में हम सभी श्री गुरु नानक देव जी के दिखाए रास्ते पर चले तो भारत को आगे बढ़ने से और दुनिया का नंबर. 1 देश बनने से कोई नहीं रोक सकता है। सीएम आतिशी ने अपने एक्स(ट्विटर) हैंडल पर साझा किया कि, धन धन श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व के मौके पर गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब में जाकर गुरु साहिब से दिल्लीवालों की खुशहाली के लिए आशीर्वाद लिया।

शादी-समारोह के लिए घर बैठे ले बिजली कनेक्शन

नोएडा। जिले में होने वाले शादी समारोह के लिए लोग अब घर बैठे ही बिजली कनेक्शन प्राप्त कर सकेंगे। इसके लिए उपभोक्ता को बिजली दफ्तर के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। उपभोक्ता ऑनलाइन ही कनेक्शन प्राप्त कर सकेंगे और ऑनलाइन ही कनेक्शन स्वीकृत हो जाएगा। उपभोक्ता की ओर से फीस जमा करने के बाद समारोह की तिथि पर बगैर मीटर के कनेक्शन चालू कर दिया जाएगा। इससे आयोजकों को डीजल जनरेटर चलाने की भी जरूरत नहीं होगी। इससे बढ़ते प्रदूषण को कम करने में भी मदद मिलेगी। विद्युत निगम के अधिकारियों के अनुसार, शादी-समारोह के लिए 20 किलोवाट तक के कनेक्शन के लिए उपभोक्ता को झटपट पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन करना होगा। अगर 20 किलोवाट से अधिक के लोड का कनेक्शन लेना है

JOTINDRA INFRASTRUCTURE LIMITED
(Formerly Known as JOTINDRA STEEL AND TUBES LIMITED)
CIN: L27104HR1970PLC005240
Registered Office: 14/3, MATHURA ROAD, FARIDABAD, HARYANA, 121003, IN
Ph. No:- 0129-24477806, E-mail Id : jotindrasteelandtubes@gmail.com, Web-site:http://jotindra.com/

Extract of Audited Consolidated Financial Results for the Quarter and Half year ended on 30 September, 2024

Rs. In Lakhs

S. No.	Particulars	Quarter Ended			Year ended
		30.09.2024	30.06.2024	30.09.2023	31.03.2024
		Un-audited	Un-audited	Un-audited	Audited
1	**Total income from operations**				
2	Net Profit/ (Loss) for the period (before Tax, Exceptional and/or Extraordinary items.)	1306.47	5160.59	1786.21	12534.36
3	Net Profit/ (Loss) for the period before tax (after Exceptional and/or Extraordinary items.)	15.91	2729.20	59.33	5080.44
4	Net Profit/ (Loss) for the period after tax (after Exceptional and/or Extraordinary items)	11.40	2596.20	46.46	5075.12
5	Total Comprehensive Income for the period [Comprising Profit/ (Loss) for the period (after tax) and Other Comprehensive Income (after tax)]	11.40	2596.20	46.46	5076.96
6	**Equity Share Capital**	487.46	487.46	487.46	487.46
7	Earnings Per Share (of Rs. 10/- each) (for continuing and discontinued operations)				
	(a) Basic	0.23	53.38	0.95	104.19
	(b) Diluted	0.23	53.38	0.95	104.19

The Standalone Financial Results of the Company:

Sl No.	Particulars	Quarter ended		
		30.09.2024	31.03.2024	30.06.2024
		Un-audited	Audited	Un-audited
1.	Total Income	1306.47	6893.38	5160.59
2.	Profit before Tax	18.5	4380.49	2731.03
3.	Profit after Tax	14.98	4409.91	2600.55
	Total Comprehensive Income	**14.98**	**4411.75**	**2600.55**

1. The above is an extract of the detailed format of Consolidated Audited Financial Results for the quarter/ half year ended on September 30, 2024, filed with the Mertopolitan Stock Exchange of India under Regulation 33 of the SEBI (Listing Obligations and Disclosure Requirements) Regulations, 2015. The full format of the Un-audited Financial Results for the quarter/ half year ended on September 30, 2024 is available on the Stock Exchange website viz. www.msei.in and on Company's website viz. http://jotindra.com/.
2. The above Un-audited financial results for the quarter / Half year ended on September 30, 2024 have been reviewed by the Audit Committee and have been approved by the Board of Directors in its meeting held on 14-11-2024.

JOTINDRA INFRASTRUCTURE LIMITED
(formerly Known as JOTINDRA STEEL AND TUBES LIMITED)
S/d
(AKHIL KUMAR SUREKA)
Managing Director
DIN : 00060206

Date: Faridabad.
Place: 14.11.2024

संक्षिप्त खबरें

चुनाव से पहले केजरीवाल ने कांग्रेस को दिया झटका

नई दिल्ली। दिल्ली में विधानसभा चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस पार्टी को एक और झटका लगा है। कांग्रेस के तीन बार के विधायक रहे वीर सिंह धींगान ने आम आदमी पार्टी की सदस्यता ले ली है।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने वीर सिंह को पार्टी का पटका और टोपी पहना कर स्वागत किया। सीमापुरी से विधायक रह चुके हैं। बता दें इस सीट से आप के विधायक रहे राजेंद्र पाल गौतम कुछ समय पहले कांग्रेस में जा चुके हैं। अरविंद केजरीवाल ने की प्रेसवार्ता कांग्रेस नेता को पार्टी ज्वाइन कराने के बाद अरविंद केजरीवाल ने प्रेसवार्ता को संबोधित किया। जिसमें उन्होंने कहा कि वीर सिंह धींगान जी कई वर्षों से जनता के लिए काम करते आये हैं। आज इनके आम आदमी पार्टी में शामिल होने से हमारे दलित उत्थान के काम को काफी मजबूती मिलेगी। पूर्व सीएम ने आगे कहा कि सीमापुरी क्षेत्र के अंदर धींगान जी ने काफी काम किया और आज हम सीमापुरी के भावी विधायक को अअढ में शामिल करा रहे हैं। आज पूरी दिल्ली की जनता अअढ के साथ खड़ी है और दूसरे दलों के अच्छे नेता हमारे साथ जुड़ रहे हैं। यह बताता है कि आगामी विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी प्रचंड बहुमत के साथ जीत रही है।

वहीं कांग्रेस छोड़ने वाले वीर सिंह धींगान ने कहा कि मैं आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल जी के कामों और नीतियों से प्रभावित होकर आज कांग्रेस छोड़ अअढ की सदस्यता ले रहा हूं। दिल्ली में आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल जी ही दलितों और पिछड़ों के लिए पूरी ईमानदारी से काम कर रहे हैं और आज से मैं अअढ के सदस्य के रूप में जनता की सेवा करूंगा।

वहीं अअढ के नेता और विधायक दुर्गेश पाठक ने कहा कि सीमापुरी विधानसभा से तीन बार के विधायक और दलित समाज के लिए वर्षों से काम करने वाले वीर सिंह धींगान जी आज आम आदमी पार्टी में शामिल हो रहे हैं। यह अअढ के लिए बेहद ही खुशी का दिन है।

गुरु के दरबार में मत्था टेक श्रद्धापूर्वक गुरुनानक जयंती मनाई

नोएडा । शहर में सिखों के पहले गुरु नानक देव की जयंती का 555वां प्रकाश पर्व शुक्रवार को उत्साह के साथ मनाया गया। सिख समाज के लोगों ने गुरुद्वारे में मत्था टेककर अरदास की और प्रसाद चखा। इससे पहले लोगों ने प्रभातफेरी निकाली और नगर कीर्तन में हिस्सा लिया। सेक्टर-18 स्थित गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा में प्रकाशोत्सव पर कीर्तन समागम हुआ। इस दौरान के शहर के गुरुद्वारे में शबद कीर्तन दरबार सजा सिख समाज के लोगों ने प्रकाश पर्व श्रद्धापूर्वक मनाया। सैकड़ों हजारों की संख्या में सिख समुदाय के बच्चे, बुजुर्ग, महिलाओं और पुरुषों सहित दूर दराज की संगतों ने शामिल होकर गुरुद्वारे में श्रद्धापूर्वक मत्था टेका। गुरुद्वारे में सत्संग कर गुरु गीतों से गुरु की महिमा का बखान किया। संगत ने सत्संग और गुरबाणी का पाठ कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

दिल्ली-एनसीआर में लगातार तीसरे दिन वायु गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में, ग्रैप-3 प्रतिबंध लागू

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय राजधानी में लगातार तीसरे दिन वायु गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में दर्ज की गई, जिसके कारण चरणबद्ध प्रतिक्रिया कार्य योजना (ग्रैप) के तीसरे चरण को शुक्रवार को लागू कर दिया गया।

समीर ऐप के अनुसार, राजधानी में सुबह नौ बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 411 दर्ज किया गया जो गंभीर श्रेणी में आता है। इससे पहले लगातार 14 दिन तक दिल्ली की वायु गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में रही।

राजधानी में वायु गुणवत्ता के लगातार खराब होने के कारण प्राधिकारियों को प्रदूषण रोधी योजना के तीसरे चरण के तहत तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लागू करने पड़े।

दिल्ली-एनसीआर के लिए ग्रैप को वायु गुणवत्ता के चार चरणों में विभाजित किया गया है चरण 1 खराब वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) के लिए जो 201 से 300 के बीच है। चरण 2 बहुत खराब एक्यूआई (301-400) के लिए, चरण 3 गंभीर एक्यूआई (401-450) के लिए और चरण 4 बेहद गंभीर एक्यूआई (450 से अधिक) के लिए होता है।

ग्रैप के तीसरे चरण के तहत दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में निर्माण गतिविधियों पर पाबंदी लगा दी गई है।

इसके तहत, एनसीआर से लगते राज्यों से आने वाली सभी अंतरराज्यीय बसों के यहां आने पर प्रतिबंध है। केवल इलेक्ट्रिक वाहनों, सीएनजी वाहनों और बीएस-4 और डीजल बसें ही यहां प्रवेश कर सकती हैं। इसके साथ ही निर्माण और तोड़फोड़ गतिविधियों पर भी कड़ा प्रतिबंध लगाया गया है।

ग्रैप के तीसरे चरण के तहत पांचवीं कक्षा तक के छात्र-छात्राओं के लिए ऑनलाइन कक्षाओं की व्यवस्था की गई है और प्रमुख सड़कों पर रोजाना पानी का छिड़काव किया जाएगा।

इस बीच, दिल्ली के 39 निगरानी स्टेशन में से कुल 27 स्टेशन ने वायु गुणवत्ता को गंभीर श्रेणी में दर्ज किया, जहां एक्यूआई 400 से अधिक रहा। अलीपुर, आनंद विहार, अशोक विहार, आया नगर, बवाना, सीआरआरआई मथुरा रोड, आईजीआई हवाईअड्डा, आईटीओ, जहांगीरपुरी, मंदिर मार्ग, मुंडका, नजफगढ़, नेहरू नगर, नॉर्थ कैंपस, ओखला फेज 2, पटपड़गंज, पंजाबी बाग, पूसा, आरके पुरम, रोहिणी और कई अन्य स्थानों पर एक्यूआई 400 से अधिक दर्ज किया गया।

मौसम विभाग के अनुसार, दिल्ली में इस मौसम का सबसे कम न्यूनतम तापमान (रात का तापमान) 15.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 2.6 डिग्री अधिक था।

इसने बताया कि राजधानी में घना कोहरा छाया रहा, जिससे शुक्रवार को सुबह सात बजे सफदरजंग में दृश्यता घटकर 400 मीटर रह गई।

दिल्ली में सुबह साढ़े आठ बजे आर्द्रता का स्तर 98 प्रतिशत दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने बताया कि राजधानी में दिन में घना कोहरा छाए रहने तथा अधिकतम तापमान 29 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। पिछले दो दिनों से दिल्ली की वायु गुणवत्ता देश में सबसे खराब रही।

दिल्ली पंचायत संघ का आप के मेयर को वोट न देने वाले पार्षदों के प्रति आभार

- नवनियुक्त मेयर से गांवों को हाउस टैक्स से मुक्त करने की मांगः थान सिंह यादव

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली पंचायत संघ ने दिल्ली नगर निगम के मेयर चुनाव में आप पार्टी के कुछ पार्षदों द्वारा अपनी पार्टी के खिलाफ वोट देने पर उनका आभार व्यक्त किया है। यह कदम गांवों के हाउस टैक्स माफी और ग्रामीण हितों की उपेक्षा के खिलाफ एक अहम संदेश है। पंचायत संघ के प्रमुख थान सिंह यादव ने इसे गांवों, गरीबों और किसानों के पक्ष में उठाया गया साहसिक कदम बताया।

पंचायत संघ प्रमुख थान सिंह यादव ने बताया कि आम आदमी पार्टी के ग्रामीण पृष्ठभूमि के पार्षदों से आग्रह किया था कि वे मेयर चुनाव में अपनी पार्टी के पार्षद को वोट ना दे, क्योंकि निवर्तमान में शैली ओबराय ने गांवो को हाउस टैक्स से मुक्त करने का वादा पूरा नहीं किया। उन्होंने आप पार्टी के सभी पार्षदों और विधायकों से आग्रह किया कि वे दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पूर्व मेयर डॉ. शैली ओबरॉय द्वारा किए गए वादे–गांवों के हाउस टैक्स माफ करने–को नवनियुक्त मेयर से जल्द पूरा कराने के लिए आगे आएं।

ग्रामीणों की मुख्य मांगें:

1. गांवों को हाउस टैक्स से मुक्तिः दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों को हाउस टैक्स से मुक्त किया जाए।

2. भवन उपनियम से बाहरः गांवों को नगर निगम के भवन उपनियमों से बाहर किया जाए।

3. व्यावसायिक श्रेणी में नोटिफिकेशनः रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए गांवों को व्यावसायिक श्रेणी में अधिसूचित किया जाए।

4. बुक की गई संपत्तियों को फ्री किया जाए।

5. युवाओं को रोजगारः नगर निगम की सेवाओं में 100% आरक्षण के साथ युवाओं को नौकरियां दी जाएं।

6. बारातघर का प्रावधानः हर गांव में बारातघर बनाए जाएं।

पंचायत संघ प्रमुख थान सिंह यादव ने कहा कि यदि नवनियुक्त मेयर और सरकार इन मांगों को पूरा नहीं करते हैं, तो आगामी चुनाव में इसके खिलाफ भारी मतदान किया जाएगा। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि दिल्ली देहात के गरीब ग्रामीण किसानों की मांगों को पूरा कराने के लिए बड़े पैमाने पर आंदोलन चलाया जाएगा।

सदर बाजार में बड़ी धूमधाम से मनाया गया गुरपुरब

- गुरपुरब के उपलक्ष पर फेडरेशन की ओर से लंगर का आयोजन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

गुरु नानक देव जी का प्रकाश उत्सव देश में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है और लंगर का आयोजन किया गया। इसी उपलक्ष्य पर सदर बाजार के व्यापारियों ने कुतुब रोड चौक पर फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड एसोसिएशन के चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा, अध्यक्ष राकेश यादव, वाइस चेयरमैन पवन खंडेलवाल, महासचिव सतपाल सिंह मांगा, कार्यवाहक अध्यक्ष चौधरी योगेंद्र सिंह, उपाध्याय राजकुमार गुप्ता, विष्णु, बरी मार्केट ट्रेडर्स के वरिष्ठ उपाध्यक्ष वीरेंद्र आर्य, कुलदीप सिंह, रमेश सचदेवा, सुनील पुरी सहित अनेक व्यापारी उपस्थित थे।

इस अवसर पर परमजीत सिंह पम्मा ने बताया कि हर वर्ष सदर बाजार में बड़ी धूमधाम से गुरपुरब मनाया जाता है जिसमें सभी धर्म के लोग शामिल होते हैं। इस अवसर पर आए हुए सभी व्यापारियों ने अपील की के गुरु नानक देव जी के बताए हुए मार्ग पर चले जिसमें आपसी भाईचारा बना रहे और फेडरेशन की ओर से सभी व्यापारियों का स्वागत भी किया गया।

भारत तेल व गैस की खोज और उत्पादन के लिए उपयुक्त स्थान

ग्रेटर नोएडा। एसोसिएशन ऑफ पेट्रोलियम जियोलॉजिस्ट (एपीजी) इंडिया की ओर से आयोजित इंडिया एक्सपो मार्ट में मेगा-भूविज्ञान सम्मेलन और प्रदर्शनी जीईओ इंडिया-2024 का शुक्रवार को शुभारंभ केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने किया। 15 से 17 नवंबर तक चलने वाले इस आयोजन में देश की बढ़ती ऊर्जा जरूरतों, ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जाने वाले उपायों पर चर्चा की जा रही है। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा, भारत तेल व गैस की खोज और उत्पादन के लिए उपयुक्त स्थान है। भारत जैसे विशाल देश में, बढ़ती अर्थव्यवस्था के अनुरूप ऊर्जा की मांग तेजी से बढ़ रही है। उन्होंने कहा, भारत में प्रतिदिन 67 मिलियन लोग पेट्रोल पंपों पर जाते हैं।

बाबा श्याम कों भेंट किया निमंत्रण पत्र

नई दिल्ली : ब्यूरो हेल्पिंग हैंड सोशल वेलफेयर ट्रस्ट के अध्यक्ष सतीश गर्ग एवं संस्था के पदाधिकारी व सदस्यों ने आगामी 16 दिसंबर को होने वाले भव्य श्याम संकीर्तन जिसमें श्याम जगत के मशहूर कलाकार गायक बाबा के चरणों में अपनी हाजिरी लगाएंगे उसका निमंत्रण पत्र श्याम खाटू जाकर बाबा के चरणों में अर्पण किया, वह सालासर बालाजी महाराज के दर्शन कर बाबा के चरणों में निमंत्रण पत्र अर्पण किया सतीश गर्ग ने बताया, 16 दिसंबर को होने वाले प्रोग्राम मशहूर कलाकारों के द्वारा बाबा श्याम का गुणगान किया जाएगा यात्रियों में हरिशंकर शर्मा,महेश जिंदल,सुभाष अग्रवाल, विक्की गर्ग आदि यात्रा में मौजूद रहे

विश्व मधुमेह दिवस पर यथार्थ हॉस्पिटल नोएडा नीले रंग में रोशन

नोएडा : (जीतेन्द्र शर्मा)

विश्व मधुमेह दिवस के अवसर पर यथार्थ अस्पताल नोएडा सेक्टर 110 में मधुमेह जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए अपनी बिल्डिंग को नीले रंग में रोशन किया अस्पताल की डायरेक्टर डॉक्टर मंजू त्यागी ने व्यापक स्वास्थ्य परीक्षण, जीवन शैली परामर्श, व आहार संबंधी मार्गदर्शन किया प्रेस को संबोधित करते हुए डॉ पल्लव मिश्रा, डॉ आलोक कुमार सिंह, डॉ सौरभ अग्रवाल,डॉ अंकुश सेठी, डॉ कनिका अग्रवाल ने मधुमेह के विषय में बचाव सम्बंधित जानकारी दी व बताया की हम किस प्रकार अपनी जीवन शैली में बदलाव करके इस बीमारी से बच सकते हैं, इस संबंध में अस्पताल ने बहुत सस्ते हेल्थ पैकेज भी लॉन्च किये

रिटायर्ड इंजीनियर साइबर ठगी का शिकार, 10 करोड़ से ज्यादा का लगा चूना

प्रतिबंधित दवाओं के पार्सल के नाम पर हुई ठगी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के रोहिणी के एक सेवानिवृत्त 70 वर्षीय इंजीनियर को साइबर धोखाधड़ी में फंसाया गया और 10 करोड़ और 30 लाख रुपये की धोखाधड़ी की गई। पुलिस अधिकारियों से मिली जानकारी के मुताबिक पीड़ित एक प्रतिष्ठित कॉलेज का पूर्व छात्र था और कई कंपनियों में शीर्ष पदों पर था और उसे ठगों से एक कूरियर के बारे में फोन आया था जो उसके नाम पर भेजा गया था।

जैसे ही पीड़ित ने कॉल अटेंड किया और ठगों के निदेर्शों का पालन किया। पीड़ित की निजी जानकारी मांगी गई जिसके बाद उसे धमकी दी गई और बताया गया कि उसके नाम पर ताइवान से प्रतिबंधित दवाओं का एक पार्सल आया है, और एफआईआर होगी। उसके खिलाफ मामला दर्ज कराया। इसके अलावा ठगों ने पीड़ित को धमकी दी कि बचने के लिए उसे खुद को एक कमरे में बंद करके अपने मोबाइल या लैपटॉप के कैमरे के सामने बैठना होगा।

निदेर्शों का पालन करते हुए एक पुलिसकर्मी ने खुद को मुंबई पुलिस बताकर पीड़ित से बात की और मदद करने के नाम पर उससे अपने बैंक खाते में 10 करोड़ 30 लाख रुपये जमा कराए, जिन्हें ठगों ने अलग-अलग बैंक खातों में ट्रांसफर कर लिया। बड़ी धोखाधड़ी का एहसास होने पर पीड़ित ने मदद के लिए पुलिस से संपर्क किया, जिसके तुरंत बाद मामला साइबर टीम को सौंप दिया गया। साइबर टीम ने अब तक 60 लाख रुपये की रकम फ्रीज कर दी है। बाकी रकम का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है। आगे की जांच चल रही है।

गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब में केजरीवाल ने मत्था टेक कहा, हम गुरुनानक के बताए रास्ते पर चल रहे

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

गुरुनानक देव जी के 555वें प्रकाश पर्व पर आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने नई दिल्ली स्थित गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब में मत्था टेका और सभी देशवासियों समेत पूरी दुनिया के लोगों को गुरुनानक जयंती की शुभकामनाएं दी। अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि गुरु पर्व के पावन अवसर पर गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब में मत्था टेका और प्रार्थना कर गुरु महाराज जी से सभी की सुख-समृद्धि और खुशहाल जीवन की कामना की। उन्होंने कहा कि हम गुरुनानक के बताए रास्ते पर चल रहे हैं। गुरुनानक महाराज ने जो भी संदेश दिया है, उसी के हिसाब से हम सभी को अपने जीवन को ढालना है। इस दौरान विषय जरनैल सिंह भी मौजूद रहे। गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब में मत्था टेक प्रार्थना करने के उपरांत आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि गुरुपर्व के अवसर पर मैं सभी देशवासियों और पूरी दुनिया में सभी लोगों को बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं। गुरुनानक जी महाराज ने जो भी संदेश दिया है उसी संदेश के हिसाब से हमें अपने जीवन को ढालना है। श्री गुरु ग्रंथ में जो भी रास्ता बताया गया है, जो भी संदेश दिया गया है उसी के हिसाब से हमें अपना जीवन पालन करना है। सब लोग श्री गुरुनानक जी के बताए हुए रास्ते पर चलें। गुरुजी महाराज सबकी मनोकामना पूरी करें।सबके दुख दूर करें और सबको बरकत दें। सबको स्वस्थ और खुश रखें। मैं प्रार्थना करता हूं कि गुरु जी महाराज सब पर अपना आशीर्वाद बनाए रखें। ऐसी कामना करता हूं।

कांग्रेस, भाजपा नेताओं का आप में शामिल होना विधानसभा चुनाव में जीत के संकेत : केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

आप के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को कहा कि अन्य दलों के नेताओं का आम आदमी पार्टी (आप) में शामिल होने का रुझान इस बात का संकेत है कि पार्टी तीसरी बार बड़े बहुमत के साथ सत्ता में लौटने वाली है। दिल्ली के तीन बार के विधायक वीर सिंह धींगान का आप में स्वागत करने के बाद केजरीवाल ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि पार्टी ने हमेशा प्रदर्शन के आधार पर शहर में वोट मांगे हैं और यही कारण है कि अन्य दलों के अच्छे नेता आम आदमी के साथ जुड़ना चाहते हैं।

केजरीवाल ने कहा कि पार्टी फरवरी में होने वाले विधानसभा चुनावों में अच्छे उम्मीदवार उतारने की तैयारी में है क्योंकि न तो आप और न ही देश किसी की जागीर है। हम इस बात पर जोर देंगे कि केवल अच्छे लोगों को ही टिकट मिले।

केजरीवाल ने दक्षिण-पूर्वी दिल्ली स्थित सराय काले खां चौक का नाम बदलकर बिरसा मुंडा चौक करने के फैसले का भी स्वागत किया। उन्होंने कहा, ह्लहम इस फैसले का स्वागत करते हैं। यह अच्छी बात है।

सीमापुरी से कांग्रेस के पूर्व विधायक 71 वर्षीय धिंगान ने कहा कि वह आप में शामिल हो रहे हैं, क्योंकि गुरुवार को महापौर चुनाव का बहिष्कार करने के कांग्रेस के फैसले से वह आहत हैं। मेरा मानना है कि बहिष्कार से अप्रत्यक्ष रूप से भाजपा को मदद मिली।

उन्होंने कहा, अगर कांग्रेस वाकई धर्मनिरपेक्ष है तो उसे आप उम्मीदवार का समर्थन करना चाहिए था। मुझे कांग्रेस और भाजपा के बीच पर्दे के पीछे की सांठगांठ के बारे में जानकारी नहीं है, लेकिन कांग्रेस द्वारा भाजपा को जिताने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

धींगान ने कहा कि कांग्रेस और भाजपा दोनों ही भ्रष्टाचार में लिप्त हैं और लोगों के कल्याण की अनदेखी कर रहे हैं।

दलितों की सेवा के लिए केजरीवाल की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि अन्य पार्टियों के लोग दलितों के कल्याण के बारे में केवल बातें करते हैं लेकिन पूर्व मुख्यमंत्री द्वारा किया गया कार्य अद्वितीय है।

केजरीवाल ने कहा कि धींगान के पार्टी में शामिल होने से आप को दलित वर्गों के कल्याण के लिए अपने काम का विस्तार करने में मदद मिलेगी। मुझे उम्मीद है कि हम सीमापुरी से भावी विधायक का अपनी पार्टी में स्वागत कर रहे हैं।

दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गुरु नानक देव जी का प्रकाश पर्व श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया

नई दिल्ली । दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने आज पहली पातशाही श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश पर्व श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर दिल्ली गुरुद्वारा कमेटी के प्रबंध अंतर्गत विभिन्न गुरुद्वारा साहिबानों में गुरमति समागम आयोजित किए गए, जहां अमृत वेले से ही संगतों ने बड़ी संख्या में नतमस्तक होकर गुरु साहिब का आशीर्वाद प्राप्त किया। मुख्य कार्यक्रम भाई लखी शाह वंजारा हॉल, गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब परिसर में हुआ, जहां रागी सिंहों ने गुरु की इलाही कीर्तन के रसभरे सुरों से संगतों को निहाल किया। इस मौके पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कमेटी के प्रधान सरदार हरमीत सिंह कालका और जनरल सेक्रेटरी सरदार जगदीप सिंह काहलों ने कहा कि गुरु नानक देव जी ने अपनी शिक्षाओं से समाज से अज्ञानता का अंधकार दूर किया। उन्होंने कहा कि गुरु साहिब ने सबसे पहले यह उपदेश दिया कि ह्लअव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत के सब बंदे...ह्व जिसका अर्थ है कि परमात्मा एक है और सभी उसी की रौशनी से उपजे बंदे हैं। उन्होंने कहा कि गुरु साहिब ने सार्वभौमिक एकता की बात की और सभी को आपस में एकजुट होकर भलाई का सिद्धांत सिखाया। गुरु साहिब ने किरत करो, नाम जपो और वंड छको का सिद्धांत दिया और स्वयं करतारपुर साहिब की पवित्र धरती पर 18 साल खेती करके यह बताया कि हमारे लिए अपने हाथों से मेहनत करना सबसे पहले है। उन्होंने कहा कि जब दुनिया में न कोई साधन था और न ही कोई मार्गदर्शन, उस समय गुरु नानक देव जी ने चार उदासियां करके 34,000 किलोमीटर की यात्रा तय कर समाज को परमात्मा से जोड़ने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि गुरु साहिब जहां भी गए, उन्होंने गुरबाणी की रचना की, दीवान सजाए और दुनिया को सच्चाई का रास्ता दिखाया। चाहे वह वली कंधारी हो या सज्जन ठग, सभी गुरु के सिख बने। कार्यक्रम में उपस्थित दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को संबोधित करते हुए सरदार कालका और सरदार काहलों ने यह भी कहा कि आज के युग में सिख समुदाय के साथ बहुत अन्याय हो रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे बंदी सिंह जेलों में बंद हैं और सरकारें हमारी बात नहीं सुन रही हैं, चाहे वह केंद्र सरकार हो, दिल्ली सरकार हो या पंजाब सरकार। उन्होंने कहा कि बंदी सिंहों ने भावनात्मक तौर पर बहकर अपनी कौम के लिए बदला लेने के काम किए, लेकिन आज सजाएं पूरी होने के कई वर्षों बाद भी उन्हें जेलों में कैद रखा गया है। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन धर्म प्रचार कमेटी के चेयरमैन सरदार जसप्रीत सिंह करमसर ने किया। समारोह में अन्य प्रमुख सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक हस्तियों के अलावा दिल्ली कमेटी के अधिकारी और सदस्य भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

डूसू चुनाव के नतीजे की डेट फाइनल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली हाईकोर्ट ने दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव को लेकर बड़ी राहत दी है। डूसू चुनाव के 21 नवंबर को घोषित किए जाएंगे। दिल्ली विश्वविद्यालय के एक अधिकारी ने कहा कि 21 नवंबर को होने वाली मतगणना के लिए तैयारियां चल रही हैं। सफाई का ज्यादातर काम पूरा हो चुका है। पारदर्शिता बनाए रखने के लिए ईवीएम और मतपत्र चुनाव आयोग की टीम की मौजूदगी में खोले जाएंगे।

अधिकारी ने आगे कहा कि केंद्रीय पैनल और कॉलेज प्रतिनिधियों दोनों के लिए वोटों की गिनती सुबह 8:30 बजे डीयू कॉन्फ्रेंस सेंटर में चुनाव आयोग की टीम की मौजूदगी में शुरू होगी। हालांकि, पहले यह परिणाम वोटिंग के अगले दिन घोषित होने थे, लेकिन चुनाव प्रचार के दौरान नियमों के उल्लंघन के कारण दिल्ली उच्च न्यायालय ने मतगणना पर रोक लगा दी थी। सोमवार को दिए गए अपने फैसले में, हाईकोर्ट ने सशर्त रोक हटाते हुए मतगणना जारी रखने की अनुमति दे दी, बशर्ते कि चुनाव प्रचार से जुड़ी सारी गड़बड़ियां साफ कर दी जाएँ।

दस सालों में सबसे कम हुए मतदान

इस साल, डूसू चुनाव में कुल 1.45 लाख पात्र मतदाताओं में से केवल 51,379 छात्रों ने मतदान किया, जो पिछले 10 वर्षों में सबसे कम मतदान प्रतिशत है। डीयूएसयू के केंद्रीय पैनल के लिए मतदान, जिसमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव और संयुक्त सचिव के पद शामिल हैं, ईवीएम का उपयोग करके आयोजित किया गया था, जबकि कॉलेज प्रतिनिधियों के चुनाव के लिए मतपत्रों का उपयोग किया गया था। ईवीएम पर पुलिस की कड़ी निगरानी

डूसू चुनाव में इस्तेमाल की गईं, 500 ईवीएम को परीक्षा विभाग में बनाए गए स्ट्रांग रूम में सुरक्षित रखा गया है। यहां 24 घंटे पुलिस का एक दल ईवीएम की निगरानी कर रहा है। इसके अलावा, कॉलेजों में मतपेटियों को भी सुरक्षित रखा गया है। डूसू के केंद्रीय पैनल के चुनाव के लिए ईवीएम का उपयोग किया गया, जबकि कॉलेज प्रतिनिधियों के चुनाव के लिए मतपत्रों का उपयोग किया गया।

सुबह 8:30 बजे से शुरू होगी मतगणना

निर्वाचन आयोग की टीम की मौजूदगी में 21 नवंबर को सुबह 8:30 बजे से मतगणना शुरू होगी। विश्वविद्यालय के एक अधिकारी ने बताया कि सफाई का अधिकांश काम पहले ही पूरा हो चुका है, और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए ईवीएम और मतपत्रों को आयोग की निगरानी में खोला जाएगा।

चार पदों के लिए हुए थे चुनाव

डूसू के केंद्रीय पैनल में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव और संयुक्त सचिव के पद शामिल हैं। उन पदों के लिए मतदान ईवीएम के माध्यम से किया गया, जबकि कॉलेज प्रतिनिधियों के चुनाव के लिए मतपत्रों का उपयोग किया गया।

रूबी एक दिन के लिए एसीपी बनीं

नोएडा। मिशन शक्ति फेस 5 अभियान के तहत कंपोजिट विद्यालय पर्थला खंजरपुर की कक्षा सात की छात्रा कुमारी रूबी को सेक्टर-49 एसीपी कार्यालय का एक दिन के लिए सांकेतिक रूप से सहायक पुलिस आयुक्त बनाया गया। इस अवसर पर सहायक पुलिस आयुक्त के रूप में रूबी ने कमिश्नरेट ऑफिस में कार्यालय में क्रियाकलापों को देखा और समझा। इसके साथ ही दिन प्रतिदिन की एफआईआर के बारे में समझा। इसके साथ ही महिला डेस्क की पुलिसकर्मियों से महिलाओं से संबंधित घटनाओं के बारे में जानकारी ली और पुलिस की कार्यप्रणाली को जाना। सहायक पुलिस आयुक्त ट्विंकल जैन के द्वारा बच्चों को आईपीएस सेवा के बारे में जानकारी दी गई। इसके साथ स्कूल की कक्षा आठ की छात्रा अवनी ने एक दिन के लिए सेक्टर-49 थाना प्रभारी का कार्यभार संभाला और कक्षा आठ की ही सुनैना ने चौकी प्रभारी सेक्टर-122 का कार्यभार संभाला। इस मौके पर नोडल बालिका शिक्षा अर्चना पांडेय बिसरख मौजूद रहीं।

सीपीडब्ल्यूडी करेगा केजरीवाल के आवास में साज-सज्जा खर्च की जांच

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सरकारी आवास में साज-सज्जा पर खर्च की जांच करेगा।

केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) ने शुक्रवार को नेता प्रतिपक्ष विजेन्द्र गुप्ता की शिकायत का संज्ञान लेते हुए अरविंद केजरीवाल के सरकारी आवास 6, फ्लैग स्टाफ रोड में साज-सज्जा पर खर्च किए गए कथित करोड़ों रुपये की जांच करने का आदेश सीपीडब्ल्यूडी के मुख्य सतर्कता अधिकारी (सीवीओ) को दिया है।

इस संदर्भ में नेता प्रतिपक्ष ने 21 अक्टूबर को सीवीसी में शिकायत दर्ज कराई थी। इसमें उन्होंने कहा था कि केजरीवाल ने मुख्यमंत्री आवास पर आंतरिक साज-सज्जा और सुविधाओं पर अत्यधिक खर्च किया गया। इसमें उच्च स्तर के भ्रष्टाचार की बू आती है और तत्काल जांच की आवश्यकता है। गुप्ता ने कहा कि केजरीवाल ने अपने घर में 77 लाख के टीवी, 50 लाख का रेशमी कालीन, 42 लाख की पीतल की रेलिंग, 20 लाख का स्पा सेंटर, 18 लाख का हॉट वॉटर जेनरेटर, 12-12 लाख की टॉयलेट सीट पर करोड़ों रुपए बेदर्दी से खर्च कर दिए। उन्होंने कहा कि केजरीवाल के घर पर 50 स्प्लिट एसी, 250 टन का सेंट्रलाइज्ड एसी सिस्टम, 934 लीटर कैपेसिटी वाला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से चलने वाला फ्रिज, बोश कंपनी के 75 स्पीकर, 5 रेकलाइनिंग सोफे, तीन डाइनिंग टेबल, किंग साइज के 8 बेड, 75 आरामदायक कुर्सियां, 76 टेबल, 24 सोफा सेट, एक डाइनिंग रूम, दो ड्राइंग रूम, तीन मीटिंग रूम, 12 टॉयलेट, दो किचन, 8 बेडरूम की सुविधाओं वाले इस ह्यआम आदमीह्व के घर के आगे सात सितारा होटल भी पानी भरते हैं।

उन्होंने कहा कि केजरीवाल ने अपने शीश महल के सिर्फ बाथरूम पर जनता की खून पसीने की कमाई के 15 करोड़ रुपये खर्च कर दिए, 5.30 करोड़ रुपये के पर्दे लगवा लिए, ऑटोमेटिक खिड़कियों पर 70 लाख रुपये खर्च किए। शिकायती पत्र पर जांच के आदेश होने के बाद विजेंद्र गुप्ता का कहना है कि जांच पूरी होने के बाद जो रिपोर्ट आएगी, वह आम आदमी का मुखौटा पहन कर पिछले 10 साल तक दिल्ली की जनता को धोखा देने वाले केजरीवाल को बेनकाब कर देगी। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी के पाप का घड़ा अब भर चुका है और अगले विधानसभा चुनाव में उनके प्रत्याशियों की जमानत जब्त करवा कर दिल्ली की जनता इन्हें सत्ता से बाहर कर देगी।

संक्षिप्त खबरें

बाइक में ई रिक्शा चालक ने मारी टक्कर

जमुई [झाझा] बाइक से अपने घर से आ रहे एक युवक के बाइक में एक ई रिक्शा चालक के द्वारा टक्कर मार दिया गया जिससे बाइक से गिरकर युवक घायल हो गया। जिसका इलाज रेफरल अस्पताल झाझा में किया गया। घायल युवक की पहचान रांगाकला गांव के रहने वाले भीम यादव के रूप में हुई है। घायल युवक ने बताया कि बाइक लेकर अपने घर से निकलकर मुख्य मार्ग पर आया तो सामने से आ रहे ई रिक्शा चालक अपना वाहन अनियंत्रित करते हुए मेरे बाइक में जोरदार टक्कर मार दिया।

विद्यालय में चोरी की प्राथमिकी दर्ज

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र स्थित नवसृजित प्राथमिक विद्यालय चोकीचोर में हुई चोरी को लेकर प्रभारी प्रधानाचार्य के द्वारा दिये गए आवेदन पर थाना में पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर ली है। प्रभारी प्रधानाचार्य शम्भू यादव ने बताया कि विद्यालय से अज्ञात चोरों ने सरकारी कागजात, गैस चूल्हा, चावल, बर्तन आदि की चोरी कर ली है।

जिनको किसी ने नहीं पूछा मोदी उन्हें पूजता है : पीएम मोदी जमुई से दी 6640 करोड़ के योजनाओं की सौगात

प्रात : किरण, संवाददाता

बिहार के जमुई जिले में जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 6640 करोड़ की योजनाओं की का उद्घाटन और शिलान्यास किया. वहीं इस दौरान पीएम नरेंद्र मोदी बिरसा मुंडा की 150 जयंती पर 150 रुपये के स्मारक सिक्के और 5 रुपये का स्मारक डाक टिकट का भी विमोचन किया. इस दौरान पीएम मोदी ने बिरसा मुंडा के वंशज बुद्धराम मुंडा और मंडल मुर्मू को पीएम ने सम्मानित किया. भगवान बिरसा मुंडा अमर रहे के नारे के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन की शुरूआत की. इस अवसर पर पीएम मोदी ने कहा कि बिरसा मुंडा जी और सिद्दों कान्हू जी के वंशज आज हमारे बीच हैं. यह हमारे लिए सम्मान की बात है. पीएम मोदी ने कहा कि आज देश के कई राज्यों के मंत्री और मुख्यमंत्री भी इस कार्यक्रम में वर्चुअल जुड़ने वाले का अभिवादन करता हूं. वहीं पीएम मोदी ने कहा कि आज कार्तिक पूर्णिमा है, देव दीपावली है, गुरुनानक जयंती है और आज भगवान बिरसा मुंडा की जयंती है. इस अवसर पर सभी देशवासियों को बधाई देता हूं. पीएम मोदी ने कहा कि आज आदिवासी समाज के लिए केंद्र की सरकार कई योजनाएं चला रही है, जिसका उन्हें फायदा मिल रहा है, जिन्हें किसी ने नहीं पूछा उसे मोदी पूजता है.पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज जनजातीय गौरव दिवस मनाया जा रहा है. इसके लिए भी बधाई. मैं पिछले साल आज के दिन धरती आबा बिरसा मुंडा के गांव में था. आज उत्सव का माहौल है आज जनजातीय गौरव दिवस मनाया जा रहा है. ये गर्व की बात है. आज जमुई से एक करोड़ लोग वर्चुअल जुड़े है उन सबको बहुत बधाई. पीएम मोदी ने कहा कि आज 6 हजार करोड़ से भी अधिक की कई योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन हुआ है. आज सड़क, स्कूल, आदिवासी संस्कृति से जुड़ी कई सेंटर सहित कई तोहफे मिले हैं।

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के शुभारंभ का साक्षी बना जमुई

जमुईः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंती के दौरान आयोजित जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर पूरे देश के जनजातीय समुदाय के लोगों को 6600 करोड़ से अधिक की योजनाओं का सौगात दिया। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रिमोट दबा कर इस अभियान का शुभारंभ जमुई के खैरा प्रखंड स्थित बल्लोपुर से किया।

नरेंद्र मोदी ने दो जनजातीय अनुसंधान संस्थान, दो जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय, 35 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय, आश्रम विद्यालय के उन्नयन हेतु परियोजना का शुभारंभ किया। इसके अलावा 6 सेंटर ऑफ कंपीटेंसी, 30 मोबाइल मेडिकल यूनिट, 304 नए छात्रावास, 1.16 लाख नए पक्के आवास, 300 वन धन विकास केंद्र, 150 नए बहुउद्देशीय केंद्र की स्वीकृति प्रदान की। इसके अलावा 66 नए छात्रावास की स्वीकृति भी प्रदान की। इस दौरान भगवान बिरसा मुंडा की स्मृति में सिक्का जारी किया और डाक टिकट का भी लोकार्पण किया। इस मौके पर राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी,चिराग पासवान,जुएल उरांव,गिरिराज सिंह,दुर्गा दास,पूर्व केंद्रीय मंत्री करिया मुंडा,अर्जुन मुंडा,सांसद संजय झा,अरुण भारती,उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी,विजय सिन्हा,कैबिनेट मंत्री सुमित सिंह,दिलीप जायसवाल,जनक राम,विधायक श्रेयसी सिंह मौजूद थी।

कार्तिक उधापन सह साप्ताहिक ज्ञान महायज्ञ सोनो मे हवन पुजन के साथ संपन्न

प्रात : किरण, संवाददाता

सोनो जमुई : सोनो प्रखंड के दर्जनों गाँव में आयोजित कार्तिक उधापन सह श्रीमद भागवत साप्ताहिक ज्ञान महायज्ञ का समापन शुक्रवार को विद्वान पंडितों द्वारा विधिवत हवन ओर पुजन के साथ किया गया है । गंदर पंचायत के काली पहाड़ी गाँव निवासी शिक्षक सह समाज सेवी कपिलदेव प्रसाद माथुरी के निजी आवास पर आयोजित कार्तिक उधापन मे बृंदावन से आये विद्वान पंडित आचार्य श्री बृजमोहन शास्त्री के द्वारा गुरुवार को अंतिम दिन तुलसी विवाह कार्यक्रम आयोजित किया गया ।जिसमें तुलसी भगवान को पालकी पर बेठाकर ग्राम काली पहाड़ी से हरनिटांड़ के रास्ते बटिया बाजार होते हुए बाबा झुमराज मंदीर पहुंचकर पुजा अर्चना के बाद पुनः वापस लोट गई । इस दौरान ढोल बाजे के साथ एवं डीजे की धुन पर झुमते हुए बड़ी संख्या में श्रधालु गण साथ साथ चल रहे थे । तत्पश्चात पुर्व की भांति कथा प्रवचन का शुभारंभ किया गया । जिसमे बृजमोहन शास्त्री के द्वारा उच्चारित भगवान श्रीकृष्ण लिलायों पर आधारित प्रवचनों को सुन श्रोतागण भाव विभोर हो उठे । इसी प्रकार दहियारी ग्राम निवासी पंकज बरनवाल के आवास पर आयोजित कार्तिक उधापन सह श्रीमद भागवत कथा ज्ञान महायज्ञ का समापन धुमधाम के साथ एवं आचार्य श्री टुनटुन पांडेय के द्वारा विधिवत हवन पूजन के साथ संपन्न हो गया है । तेलियादह गाँव में बंदुका प्रसाद यादव एवं दहियारी ग्राम में चंद्रीका यादव सहित बड़ी संख्या में आयोजित कार्तिक उधापन का समापन हो गया है। महायज्ञ की समापन के बाद गृह स्वामियों द्वारा यज्ञ भोजन का आयोजन किया गया जिसमें हजारों लोगों ने यज्ञ भोज में शामिल होकर प्रसाद रुपी पुड़ी , सब्जी , तड़का , बुंदिया , रसगुल्ला आदि भरपेट भोजन ग्रहण कर तृप्त हुए । ज्ञात हो कि कार्तिक उधापन सह श्रीमद भागवत कथा ज्ञान महायज्ञ के आयोजन से पुरे एक सप्ताह तक सोनो प्रखंड छेत्रों मे भक्तिमय का माहौल बना रहा ।

अधिकार मित्र पारा विधिक स्वयं सेवकों के 100 पदों पर किया जाएगा चयन : सचिव

मुंगेर। अधिकार मित्र पारा विधिक स्वयं सेवकों के 100 पदों पर चयन किया जाएगा। इसके लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर ने विधिवत प्रेस के माध्यम से विज्ञापन जारी किया है। अधिकार मित्र पारा विधिक स्वयं सेवकों से आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए हैं। इसकी जानकारी जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर के सचिव दिनेश कुमार के द्वारा दी गई है। उन्होंने बताया कि इसके लिए सेवा निवृत शिक्षक सहित सेवानिवृत्त सरकारी सेवक वरिष्ठ नागरिक एम एस डब्लु छात्र आंगनवाड़ी कार्यकर्ता डॉक्टर विधि छात्र गैर सरकारी संगठन एवं क्लब के सदस्य गैर राजनीतिक सदस्य स्वयंसेवा समूह मैत्री समूह जीविका आदि के सदस्य एवं अन्य व्यक्ति जो स्वयं सेवा में रुचि रखते हों तथा जिन्हें विधिक सेवा प्राधिकार ठीक समक्षे आदि के सदस्य विद्वान अधिवक्ताओं को छोड़ कर आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए। इसके लिए शैक्षणिक योग्यता मैट्रिक तथा कंप्यूटर में दक्ष रखी गई है। आवेदन प्राप्ति की तिथि 30 नवंबर 2024 है।

प्रखंड स्तरीय एकदिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

- प्रखंड के कई स्कूलों के बच्चों ने योग प्रशिक्षण में लिया भाग
- योग से शरीर रहता है निरोगः- प्रशिक्षक

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई/ई० अलीगंजः--इंडिपेंडेंट स्कूल एंड चिल्ड्रन वेलफेयर एसोसिएशन के द्वारा प्रखंड स्तरीय एकदिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन विवेकानंद विधा कांसेप्ट स्कूल दरखा के प्रांगण किया गया। जिसमें विवेकानंद विद्यापीठ कॉन्सेप्ट स्कूल दरखा, सरस्वती विद्या मंदिर मिजार्गंज, राठौर एलीमिटेड स्कूल मिजार्गंज, नमन विद्या पब्लिक स्कूल ,सेंट मैरी पब्लिक स्कूल अलीगंज,केरला इंग्लिश स्कूल आढ़ा, डीएमसी कॉन्सेप्ट स्कूल,अलीगंज सरस्वती शिशु मंदिर महतपुर, महिमा कॉन्सेप्ट स्कूल बालीडीह ,ज्ञान दीप पब्लिक स्कूल महना के बच्चों ने भाग लिया,इस शिविर का इंडिपेंडेंट स्कूल एंड चिल्ड्रन वेलफेयर एसोसिएशन के जिला सचिव सह योग प्रशिक्षक मनोज कुमार सिंह, राज्य प्रतिनिधि आनंद लाल पाठक ,राज्य महासचिव सह जिला सलाहकार अजीत कुमार,विवेकानंद के डायरेक्टर कृष्णानंद प्रसाद,प्रखंड अध्यक्ष अशोक कुमार,ऋतुराज सिन्हा अजय कुमार,वेद प्रकाश,ने संयुक्त रूप से विधिवत फिता काटकर शिविर का उद्घाटन किया। वहीं विवेकानंद डायरेक्टर कृष्णानंद प्रसाद, द्वारा उपस्थित अतिथियों को अंगवस्त्र एवं फूल माला पहनाकर स्वागत किया गया। वहीं विवेकानंद स्कूल के प्राचार्य अभय मोहित ने सभी उपस्थित स्कूल के डायरेक्टर को माला पहनाकर एवं मोमेंटो देकर उनका स्वागत किया।वहीं योग प्रशिक्षक मनोज कुमार ने सभी उपस्थित बच्चों के बीच विभिन्न योग आसनों का प्रशिक्षण प्राणायाम, ध्यान की विधियां, दिनचर्या में योग को शामिल करने की टिप्स,के साथ प्रशिक्षण दिया गया। वहीं उन्होंने उपस्थित सभी बच्चों एवं शिक्षकों को जीवन में योग की महत्व से जुड़ी बातों तथा योग से होने वाले लाभों के बारे में चर्चा की गई। वहीं उन्होंने कहा की योग करने से अनेक फायदे हैं जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। शारीरिक मजबूती,रक्त परिसंचरण में सुधार, मोटापा घटाना,पाचन तंत्र में सुधार शरीर के दर्द से राहत मानसिक फायदेः दीघार्युः नियमित योग करने से जीवन लंबा और स्वस्थ रहता है। नियमित योग अभ्यास करने से शरीर, मन और आत्मा में सामंजस्य स्थापित होता है,शिविर की समाप्ति के बाद योग प्रशिक्षक मनोज कुमार सिन्हा के द्वारा योग शिविर में भाग लेने वाले बच्चों को योग प्रशिक्षण सर्टिफिकेट दे दिया गया। मौके पर मनोज कुमार सिंह ,अजीत कुमार, कृष्णानंद प्रसाद ,ऋतुराज सिन्हा,आनंद लाल पाठक अशोक कुमार,वेद प्रकाश, अभय मोहित, अजय कुमार, प्रियांशु कुमार,राहुल कुमार, जॉनी जोसेफ, आर के सिंह, दिवाकर कुमार,गिरीश पाण्डेय,प्रभाकर कुमार,एवं छात्र-छात्र उपस्थित थे।

रोचक रहा लायंस क्लब कबड्डी लौना का फाइनल मुकाबला

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (मुंगेर)। तारापुर प्रखंड के लौंना गांव स्थित त्रिलोकीनाथ मंदिर के प्रांगण में लाइंस कबड्डी क्लब लौना के तत्वाधान में आयोजित लौना प्रीमियर लीग सीजन सीजन 5 का समारोहपूर्वक आयोजन किया गया । इस आयोजन में महिला वर्ग में बेगूसराय टीम ने साहेबगंज टीम को 32, 18 के अंतर से हराकर ट्रॉफी पर कब्जा जमाया । वहीं पुरुष वर्ग में मुंगेर जिला कबड्डी संघ ने लोन कबड्डी टीम को 55, 4 7 के अंतर से पराजित का ट्रॉफी पर कब्जा जमाया । महिला वर्ग में बेस्ट डिफेंडर का अवार्ड काजल कुमारी को दिया गया । एवं बेस्ट रेडर का अवार्ड अंजली कुमारी को तो वहीं पुरुष वर्ग में बेस रीडर का पुरस्कार करण को एवं बेस्ट डिफेंडर का पुरस्कार मुंगेर के अंकेश रहे महिला वर्ग के टीम को ट्रॉफी वितरण राजद के प्रदेश सचिव जितेंद्र कुशवाहा के द्वारा दिया गया। एवं पुरुष वर्ग मुंगेर के कप्तान अविनाश कुमार एवं कोच प्रहलाद कुमार को तारापुर के विधायक राजीव कुमार सिंह द्वारा ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया । इस अवसर पर तारापुर अनुमंडल पदाधिकारी राकेश रंजन , पूर्व मुखिया संजय कुमार सिंह जनसुराग के युवा जिला अध्यक्ष समीर मधुकर सामाजिक कार्यकर्ता रामदेव सिंह कमेटी के अध्यक्ष अनुज सिंह सदस्य छोटू बृजेश सुमित, अमित, मोनू सूरज इत्यादि के अलावे हजारों की संख्या में महिला पुरुष उपस्थित होकर कबड्डी का भरपूर आनंद उठाया ।

तकनीकी शिक्षा सामाजिक रूपरेखा को बदल देगा : प्राचार्य खुशबू रानी

प्रात : किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। आज डिजिटल युग में तकनीकी शिक्षा देश की दशा और दिशा बदलकर देश को उच्च शिखर पर पहुंचा देगा देश की सामाजिक और आर्थिक दशा में बदलाव होगा हमारे देश को तकनीकी शिक्षा में विश्व के पटल पर स्थान प्राप्त कर लेगा यह बात राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज की प्राचार्य श्रीमती खुशबू रानी ने कॉलेज में गत गुरुवार को अभिभावकों शिक्षकों की संगोष्ठी में कहा । प्राचार्य ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि यह संगोष्ठी बच्चों की शैक्षणिक प्रगति व्यवहारिक विकास और कल्याण के बारे में जानकारी साझा करने का एक मंच के रूप में काम करती है अभिभावकों ने बच्चों और शिक्षकों के उज्जवल भविष्य को लेकर अपने स्तर से सहयोग शिक्षकों को करने की अपील की एक अभिभावक अंकित कुमार ने कॉलेज कर्मचारियों की आपत्ती युक्त सोशल मीडिया पर वायरल होने वाली वीडियो के संबंध में कहा कि यह संस्थान तक उनकी शिक्षा का मंदिर है जहां के वातावरण को पवित्र और सुलभ बनाना प्राचार्य , शिक्षक और कर्मचारियों का कर्तव्य है कर्मचारियों का उत्तम चरित्र और व्यवहार ही छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य तय करेगा किसी भी शैक्षणिक संस्थान में गुणवत्ता युक्त शिक्षा उत्तम व्यवहार और शैक्षणिक माहौल बनाना यह कॉलेज प्रबंधन पर निर्भर करता है अभिभावकों ने आगे कहा कि अभिभावक अपने-अपने बच्चों को कॉलेज के प्राचार्य शिक्षक और कर्मचारियों के भरोसे हॉस्टल में डाल देते हैं अब इन बच्चों के चरित्र निर्माण अनुशासन और उच्च शिक्षा आहार व्यवहार के सांचे में डालना कॉलेज प्रबंधन का दायित्व बनता है यह नहीं की कॉलेज प्रबंधन की लापरवाही और भ्रष्टाचार के कारण कर्मचारी भ्रष्ट आचरण से हॉस्टल से रहने वाले छात्र-छात्राओं को भ्रष्ट आचरण का प्रभाव पड़े और उन छात्र-छात्राओं का भविष्य अंधकार की अग्नि में जलकर राख हो जाए उन्होंने कहा कि कॉलेज में प्रसारित एक वीडियो वायरल हुआ है ऐसे कर्मचारियों पर कार्रवाई करना कॉलेज प्रबंधन को करना चाहिए और आज तक नहीं कार्रवाई होना या कॉलेज प्रबंधन के लिए प्रश्न चिन्ह लगा रहा है कॉलेज प्राचार्या और पॉलिटेक्निक विभाग बिहार पटना के लिए सर्वनाक बात है इससे पूर्व कॉलेज की प्राचार्य खुशबू रानी शिक्षक और 10 12 आए अभिभावकों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर संगोष्ठी का स्वभाव आरंभ किया इलेक्ट्रिक कल छात्र राहुल कुमार ने इस संगोष्ठी की अध्यक्षता की।

बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंती मनाया गया, जनजातीय गौरव दिवस

पारंपरिक जनजातीय परिधानों में बच्चों ने किया प्रतिभाग

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। आदिवासियों के देवता जल,जंगल और जमीन के महानायक भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंती पर शुक्रवार को जनजातीय गौरव दिवस मनाया गया। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न विद्यालयों में कार्यकम आयोजित किए गए। इस अवसर पर गिद्धौर के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय एवं कन्या मध्य विद्यालय की छात्राओं द्वारा मानव श्रृंखला बनाया गया। जिसमें छोटी छोटी बच्चियों ने पारंपरिक जनजातीय परिधानों में प्रतिभाग किया। गिद्धौरझजमुई एनएच पर मानव श्रृंखला में शामिल बच्चियों की सबने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। वहीं उत्क्रमित मध्य विद्यालय पतसंडा एवं उत्क्रमित मध्य विद्यालय बंझुलिया में भी भगवान बिरसा मुंडा की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों द्वारा उन्हें नमन किया गया। इस मौके पर प्रधानाध्यापक युगल किशोर रजक,प्रधानाध्यापक रंजीत कुमार राम,शिक्षक प्रदीप प्रभाकर,जयकांत सिंह सहित अन्य शिक्षक एवं अभिभावक मौजूद रहे।

बुजुर्ग के साथ कि गई मारपीट

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] घर पर गाली गलौज किये जाने का विरोध करना एक बुजुर्ग को महंगा पड़ गया जिसके बाद उसी के गोतिया के द्वारा बुजुर्ग व्यक्ति के साथ मारपीट कर घायल कर दिया। मामला थानाक्षेत्र के सोहजाना गांव का है। मारपीट में घायल बुजुर्ग को लोगों की मदद से इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया गया जहां डॉक्टर के द्वारा घायल का इलाज किया। घायल की पहचान भीम यादव के रूप में हुई है। घायल ने बताया कि कमलेश यादव, श्याम यादव, सुधीर यादव एवं अन्य दो लोग घर पर आकर गन्दी गन्दी गाली दे रहा था जिसका विरोध किया तो वे लोग लाठी डंडा से मारपीट करने लगा।

गिद्धौर में आयोजित श्रीमद भागवत कथा का हुआ समापन

- तुलसी विवाह के साथ संपन्न हुआ भागवत कथा
- श्रीमद भागवत कथा के आयोजन से बही भक्ति रसधारा

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। गिद्धौर के पतसंडा पंचायत के वार्ड नंबर दस यादव टोला में जानकी देवी द्वारा आयोजित समस्त गांव वसियों के कल्याण हेतु श्रीमद भागवत कथा का समापन गुरूवार की रात्रि तुलसी विवाह कर संपन्न कराया गया। शुक्रवार की सुबह श्रीमद भागवत कथा वाचन करने आए आचार्य दामोदर पांडेय द्वारा हवन पूणार्हुति का आयोजन करवाया गया। जिसमें समस्त पतसंडा गांव वासीयो ने भाग ले अपने अपने अवगुणों को त्याग कर सदगुण को सत्कार करने का संकल्प लिया। श्रीमद भागवत कथा वाचक आचार्य दामोदर पांडेय ने भागवत पूणार्हुति के दौरान श्रोताओं से कहा की श्रीमद भागवत कथा के श्रवण मात्र से ही मनुष्य के सारे मानसिक व आत्मीय विकारों का अंत हो जाता है। उनोन्हे कृष्ण सुदामा के प्रेम व मित्रता का कथा समापन के दौरान वर्णन किया। व किस तरह से सुदामा जी पे भगवान वासुदेव अपनी कृपा बरसायी उन प्रसंगों से कथा सुन रहे भक्तों को अवगत कराया गया। वहीं कथा के दौरान झारखंड के सुप्रसिद्ध भजन गायक महेन्द्र यादव ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति कर श्रोताओं को आनंद की अनुभूति कराते हुए भक्ति के भवसागर में डुबो दिया। इस मौके पर कैलाश यादव,विजय कुमार,अजीत कुमार,पप्पू चौरसिया,मनोज यादव,शंभू यादव,छोटू कुमार,रिना देवी,अन्नु कुमारी,सुषमा देवी,अर्पणा राज,अभिषेक कुमार,सुधीर यादव,दशरथ यादव,नुनेश्वर यादव,अंकित कुमार सहित दर्जनों श्रोतागण श्रीमद भागवत कथा का श्रवण करने के लिए मौजूद थे।

महापुरुष किसी जाति या धर्म कि नहीं बल्कि वह पूरे समाज और पूरी मानवता के धरोहर होते हैं : प्रदेश उपाध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (मुंगेर) युगो युगो से हम भारतवासी महापुरुषों की पूजा और वंदना याद करते आए हैं महापुरुष किसी जाति के नहीं होते बल्कि वह पूरी मानवता के धरोहर होते हैं और हमारे समाज के एक क्रांतिकारी वीर होते हैं उपर्युक्त बातें राष्ट्रीय राजपूत करणी सेवा के प्रदेश उपाध्यक्ष रामकुमार सिंह ने वीर कुमार सिंह की 248 बाई जयंती पर वीर कुंवर सिंह कॉल कॉलोनी स्थित उनके प्रतिमा पर माल्या अर्पण करते हुए कही उन्होंने कहा कि 80 वर्ष की उम्र में भी अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का गिल भूखा था वीर कुंवर सिंह सिंह ने क्रांति की मसाला जलाने में लग गए थे उनसे प्रेरित होकर सैकड़ो युवा अपनी कुबार्नी देने के लिए आजादी की लड़ाई में आगे आए थे मुख्य अतिथि सीपी शरद पवार के प्रदेश महासचिव संजय केसरी एवं मुंगेर विकास मंच के अध्यक्ष सुबह तांती उपस्थित थे श्री केसरी ने कहा कि बाबू वीर कुंवर सिंह ने 80 वर्ष की उम्र में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल फुक्के हुए आंदोलन का जो शंखनाद से प्रेरित होकर सैकड़ो युवाओं ने क्रांति की मिसाल जलाने में लग गए आज भी इस देश को जरूरत है क्रांति की सुबोध तांती ने कहा कि वीर कुंवर सिंह को जो सम्मान सरकार के द्वारा मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाया है ।

कांग्रेस की सरकार बनी तो मुस्लिम और अपर कास्ट के डिप्टी सीएम होंगे शाहनवाज आलम

प्रात : किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। महागठबंधन की सरकार अगर बिहार में बनी तो तेजस्वी यादव मुख्यमंत्री होंगे वहीं मुसलमान और अपर कास्ट के एक-एक उपमुख्यमंत्री कांग्रेस देंगे उपर्युक्त बातें कांग्रेस राष्ट्रीय सचिव सह बिहार प्रभारी शाहनवाज आलम ने नगर के मुलुडकडांड स्थित कांग्रेस नेता राजेश कुमार मिश्रा के आवास पर पत्रकारों से कही उन्होंने कहा कि इस बार सोशल इंजीनियरिंग पर विशेष फोकस है मुस्लिम समाज और अपर कास्ट को उचित प्रतिनिधित्व मिले इसको लेकर कांग्रेस बिहार में कृत संकल्पित है उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने स्पेशल पैकेज की बात कह कर चुक है । कांग्रेस पार्टी हमेशा अनुसूचित जनजाति अनुसूचित जाति और दलित अति पिछड़ा अल्पसंख्यकों के हितों के लिए काम की है। उन्होंने कहा कि गांव गांव जाकर कांग्रेस की नीतियों को आम लोगों को सिद्धांत से अवगत कराये इस मौके पर अन्य कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

20 नवंबर को आयोजित की जाएगी निबंधन एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन शिविर

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। दिव्यांग आवेदकों के लिए एनसीएस पोर्टल पर निबंधन एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन शिविर आगामी 20 नवंबर 2024 को आयोजित की जाएगी इसको लेकर जिला नियोजनालय मुंगेर के द्वारा सभी आवश्यक तैयारी कर लिया है। इस संबंध में प्रभारी जिला नियोजन प्राधिकारी राणा अमितेष ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि दिव्यांग आवेदकों के लिए आगामी 20 नवंबर 2024 को समय 11:00 बजे पूर्वाह्न में दिव्यांग आवेदकों के लिए निशुल्क के एनसीएस पोर्टल पर निबंधन एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन शिविर के आयोजन ।

आशा दिवस के अवसर पर सभी आशा दीदीयों को प्रशिक्षण दिया गया

बरियारपुर (मुंगेर)।आशा दिवस के अवसर पर सभी आशा दीदीयों को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बरियारपुर के प्रांगण में एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्षता बी सी एम अफताब ने किया मंच संचालन आशा मौवलाइजर राम बाबु ने किया उन्होंने बताया सभी आशा दीदीयों के अपने क्षेत्र में प्रातः परिभ्रमण कर 0 से पाँच वर्ष के बच्चे इस घर में है तो दो बच्चे तक रह रहे उन्हें पोलियो के खुराक पिला दी गई है। उस मकान मे ढ निशान लिखी जायेगी।

बुलडोजर न्यायाधीश नहीं

बुलडोजर न तो न्याय है और न ही न्यायाधीश का कोई पर्याय है। बुलडोजर की कार्रवाई और किसी के घर को मलबा करने की जबरन कवायद पर सर्वोच्च अदालत ने जो फैसला दिया है, वह मील-पत्थर, ऐतिहासिक और दूरदर्शी है। सर्वोच्च अदालत ने कुछ दिशा-निर्देश तय किए हैं, जो देश भर में लागू होंगे। संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत घर को भी एक अधिकार माना गया है, लिहाजा किसी आरोपित या सजायाफ्ता व्यक्ति के घर को ध्वस्त करना मौलिक अधिकार का उल्लंघन, हनन है। अपराध-शास्त्र का बुनियादी सिद्धांत यह है कि जिसने अपराध किया है, उसी को सजा दी जाए, लेकिन देश के आधा दर्जन राज्यों में इस सिद्धांत की अनदेखी की जाती रही है। बुलडोजर को सजा देने अथवा राजनीतिक खुन्नस का ऐसा हथियार बनाया गया है कि घर ढहाने से कथित अपराधी का पूरा परिवार प्रभावित होता है। वे बेघर हो गए। मुआवजे के तौर पर सरकार ने जिन आवासों की पेशकश की, वे 5-7 परिजनों के लिए अपर्याप्त थे। सरकारों ने बुलडोजर की कार्रवाई को ही अपना कानून तय कर लिया, लिहाजा उसे बुलडोजर न्याय का नाम दिया गया। उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बुलडोजर बाबा कहा गया और मप्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ह्यबुलडोजर मामाह्ल के नाम से लोकप्रिय हुए। बुलडोजर को अपराधियों में सरकारी खौफ का विकल्प बना दिया गया। कथित माफिया, डॉन, गुंडों के अवैध निर्माण मलबा किए गए। इनमें अतीक अहमद, मुफ्तार अंसारी, आजम खान सरीखों के नाम लिए जा सकते हैं, जो बार-बार जनप्रतिनिधि भी चुने गए और विधानसभा, संसद के सदस्य तक बनते रहे। जब 2017 में योगी आदित्यनाथ उप्र के मुख्यमंत्री चुने गए, तब उन्होंने ऐलान किया था कि अपराधियों, माफिया किस्म के लोगों के अवैध निर्माण ढहाए जाएंगे। यह कार्रवाई एक कानूनी सीमा के दायरे में ही की जा सकती है और इसकी एक निश्चित कानूनी प्रक्रिया होनी चाहिए। बुलडोजर कार्रवाई को कोई भी सरकार प्रतिशोध का पर्याय नहीं बना सकती, लिहाजा अब जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस केवी विश्वनाथन की न्यायिक पीठ को फैसला देना पड़ा है कि कार्यपालिका (यानी सरकार और नौकरशाही) न्यायाधीश नहीं हो सकती। अब किसी अवैध निर्माण को ढहाने की कार्रवाई करनी होगी, तो सरकार को साबित करना होगा कि अमुक निर्माण अवैध किन आधारों पर है? क्या उसे ध्वस्त करना ही अंतिम विकल्प है? क्या जुमार्ना वसूल कर उस अवैध निर्माण को नियमित नहीं किया जा सकता? न्यायिक पीठ का कहना है-आम नागरिक के लिए अपना घर बनाना सालों की मेहनत और सपनों का नतीजा है। कानून का शासन लोकतांत्रिक सरकार की नींव है। कानून का राज यह सुनिश्चित करता है कि लोगों को पता हो कि उनकी संपत्ति मनमाने ढंग से नहीं छीनी जाएगी। सजा के नाम पर किसी का आशियाना छीनने की अनुमति हमारा संविधान नहीं देता है। पीठ ने यह भी कहा है कि जब सरकार का अधिकारी नैसर्गिक न्याय के सिद्धांतों से अलग, उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना ही, काम करता है, तो बुलडोजर कार्रवाई का भयावह दृश्य अराजक स्थिति की याद दिलाता है, जहां ह्यताकतवर ही जीतेगा। बहरहाल न्यायिक पीठ ने दिशा-निर्देश तय किए हैं कि निर्माण को ध्वस्त करने का नोटिस ह्यरजिस्टर्ड डाकह्ल से भेजना होगा और निर्माण पर भी चिपकाना होगा। उसकी सम्यक जानकारी जिले के डीएम को देना अनिवार्य होगा। इस प्रक्रिया के दौरान तीन महीने की अवधि में ह्यपोर्टलह्ल भी बनाना होगा, ताकि सभी को संपूर्ण जानकारियां मिल सकें। न्यायिक पीठ ने न तो किसी मुख्यमंत्री को ह्यदोषीह्ल करार दिया है और न ही बुलडोजर कार्रवाई पर कोई रोक लगाई है। बुलडोजर की कार्रवाई भी हिंदू-मुसलमान की जाती रही है। सवाल है कि इस सुप्रीम फैसले के बाद बुलडोजर के पहिए और नुकीले दांत क्या थम जाएंगे? आश्रय के अधिकार पर तानाशाही नहीं की जा सकती।

असहिष्णुता शांति ही नहीं, स्वास्थ्य के लिये भी घातक

व्यक्तियों, समाजों एवं राष्ट्रों की एक दूसरे के लिये बढ़ती असहिष्णुता ही युद्ध, नफरत एवं द्वेष का कारण है, यही साम्प्रदायिक हिंसा एवं उन्माद का भी कारण है। असहिष्णुता, घृणास्पद भाषण और दूसरों के प्रति भय, नफरत, घृणा एवं द्वेष न केवल संघर्ष और युद्धों का एक शक्तिशाली प्रेरक है, बल्कि इसका मुख्य कारण भी है। जबकि सहिष्णुता वह बाध्यकारी शक्ति है जो हमारे बहुसांस्कृतिक, बहुजातीय और बहुधार्मिक समाज को एकजुट करती है। असहिष्णुता केवल सामाजिक एवं राजनैतिक ताने-बाने को ही छिन्न-भिन्न नहीं करती है, बल्कि इसका देश की अर्थव्यवस्था, उसके विकास एवं अंतर्राष्ट्रीय छवि पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वैश्वीकरण के युग में अंतर्राष्ट्रीय वित्त एवं व्यापार व्यवस्था को मजबूती देने के लिये सहिष्णुता की बड़ी जरूरत है। यह व्यक्तिगत जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। इसीलिये हर साल 16 नवंबर के दिन पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय सहनशीलता दिवस मनाया जाता है। दरअसल, बदलते लाइफस्टाइल और सामाजिक माहौल की वजह से लोगों के अंदर सहनशीलता लगातार घटती जा रही है। सामाजिक माहौल ना बिगड़े और लोग एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहें, इसी संकल्प के साथ यह दिवस मनाया जाता है। 1995 में महात्मा गांधी की 125वीं जयंती पर संयुक्त राष्ट्र ने सहनशीलता वर्ष मनाया था। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1996 में औपचारिक तौर पर प्रस्ताव पास कर अंतरराष्ट्रीय सहनशीलता दिवस की शुरूआत की थी। असहिष्णुता की मनोवैज्ञानिक विवेचना यह दर्शाती है कि यह मुख्यतः अनजान कारकों एवं स्थितियों के प्रति संदेह से भरे रवैये से उपजती है। ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थिति किसी भी समाज के लिये स्वस्थ मनोदशा का प्रतीक नहीं हो सकती। साथ ही, परस्पर सद्भाव एवं सम्मान के स्थान पर प्रतियोगिता तथा द्वेष से संचालित समाज अंततः बिखराव की तरफ बढ़ने को अभिशप्त होता है। फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को अक्षुण्ण रखने के लिये भी असहिष्णुता के स्तर को नियंत्रण में रखना बहुत आवश्यक है। सहनशीलता का शाब्दिक अर्थ है शरीर और मन की अनुकूलता और प्रतिकूलता को सहन करना। मानव व्यक्तित्व के विकास और उन्नयन का मुख्य आधार तत्व सहिष्णुता है। स्वयं के विरूद्ध किसी भी आलोचना को स्वीकार नहीं करना मोटे रूप में असहिष्णुता है। बताया जाता है कि सहिष्णुता मनुष्य को दयालु और सहनशील बनाती है वहीं असहिष्णुता मनुष्य को दम्भी या अहंकारी बनाती है। अहंकार अंधकार का मार्ग है जो मनुष्य और समाज का सर्वनाश कर देती है। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर छोटी-छोटी बातों पर लड़ाई-झगड़ा आम हो गया है। इतना ही नहीं लोग रिश्ते-नाते भूलकर भी जान लेने और देने पर उतारू हो रहे हैं। सहनशीलता का जिंदगी में बहुत महत्त्व है। जिसने जीवन में सहन करना सीख लिया वह जिंदगी की हर जंग जीत सकता है। सहिष्णुता जीवन शक्ति का पर्याय है। विश्व के देशों में सहनशीलता का निरंतर क्षरण हो रहा है। शासक एक दूसरे के विरुद्ध ऐसे बयान जारी कर रहे हैं जिससे विश्व में कटुता और असहिष्णुता का बाजार गर्म हो रहा है। इसी से युद्ध हो रहे हैं। रूस-यूक्रेन हो या हमास-इजरायल लम्बे समय से युद्ध से झूलस रहे हैं। इजरायल और हमास के बीच पिछले एक साल से लगातार युद्ध चल रहा है. जिसमें अब तक हजारों लोगों की जाने जा चुकी हैं। वहीं रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध से समूचे विश्व की अर्थ-व्यवस्था प्रभावित है। बात विश्व की ही नहीं, राष्ट्र एवं समाज की भी है, हर ओर छोटी-छोटी बातों पर उत्तेतना, आक्रोश, हिंसा, नफरत, द्वेष के परिदृश्य व्याप्त है। विश्व सहनशीलता दिवस मनाने के पीछे यह तर्क दिया जा रहा है कि मानव समुदाय एक दूसरे का सम्मान करें और उन भावनाओं को पुष्ट करें जिससे किसी भी स्थिति में सहिष्णुता को हानि नहीं पहुंचे। ईसा मसीह ने अपने अनुयायियों से कहा, हिंसा का प्रतिकार कभी हिंसा से नहीं करना, बल्कि सहिष्णुता से करना और अगर कोई तुम्हारे एक अंग पर प्रहार करे तो दूसरा अंग भी उसके आगे कर देना। आततायियों द्वारा सलीब पर चढ़ाए जाते हुए भी ईसा मसीह ने कहा, हे ईश्वर, इन्हें क्षमा कर देना क्योंकि ये नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। प्राचीन काल और मध्य युग में अहिंसा और सहिष्णुता की जो बातें मनु, बुद्ध, महावीर और नानक ने कही उसी की नई इबारत गांधीजी ने लिखी। किसी भी उद्देश्य के लिए किसी भी पक्ष द्वारा हिंसक मार्ग के अनुसरण को उन्होंने यह कह कर नकारा कि सात्विक दृष्टि से जब सब एक ही परमात्मा के अंश है।

क्यों दूर रहे उपचुनाव से ज्योतिरादित्य सिंधिया और कमलनाथ

इसी दौरान मध्य प्रदेश में कमलनाथ की सरकार बनी और सवा साल बाद 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपने समर्थक विधायकों के साथ कांग्रेस छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया। इस कथा का क्षेपक यह रहा कि हमेशा सिंधिया के साथ रहने वाले रावत सिंधिया के साथ भाजपा में शामिल नहीं हुए। इसके बाद वर्ष 2023 में रावत फिर से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़े और विधायक बन गए। इसके बाद अचानक उन्होंने भाजपा का दामन थाम लिया। इन पांच सालों में घटनाक्रम तेजी से बदलता रहा और रामनिवास रावत तथा ज्योतिरादित्य सिंधिया के बीच दूरियां तेजी से बढ़ती गई।

पवन वर्मा
लेखक

मध्यप्रदेश की राजनीति में ज्योतिरादित्य सिंधिया और कमलनाथ काफी कद्दावर नेता माने जाते हैं। ज्योतिरादित्य सिंधिया पहले कांग्रेस में थे फिर वे भाजपा में आ गए और वर्तमान में वे केंद्र सरकार में मंत्री हैं। केंद्र में मंत्री होने के बाद भी वे मध्यप्रदेश की राजनीति में अप्रसांगिक नहीं है। यहां उनका रुतबा और दबदबा दोनों बरकरार है। वहीं कई बार केंद्रीय मंत्री और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे कमलनाथ के कद का तो मध्यप्रदेश कांग्रेस में आज कोई नेता है ही नहीं। ऐसे में हाल ही में हुए विधानसभा के उपचुनावों से इन दोनों नेताओं की अनुपस्थिति प्रदेश की राजनीति में चर्चा का विषय बन गई है। प्रदेश में संभवतः ऐसा पहली बार हुआ है जब ये दो दिग्गज नेता चुनाव प्रचार से नदारद रहे। मध्य प्रदेश के दो विधानसभा क्षेत्रों में 13 नवंबर को मतदान हुआ है। इसमें एक क्षेत्र केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के प्रभाव वाले ग्वालियर-चंबल में है, जबकि दूसरा विधानसभा क्षेत्र केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के प्रभाव क्षेत्र का है। शिवराज सिंह चौहान ने तो अपने दबदबे वाले क्षेत्र में जमकर प्रचार किया यहां तक कि उनके पुत्र कार्तिकेय चौहान ने भी भाजपा प्रत्याशी के लिए प्रचार किया लेकिन दूसरे केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपने को उपचुनाव के प्रचार से दूर रखा। अब राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा जोरशोर से चल रही है कि आखिर भाजपा और कांग्रेस में ऐसा क्या हुआ कि दोनों ही दल के प्रमुख नेताओं में शामिल सिंधिया और कमलनाथ ने इन उपचुनावों में प्रचार से दूरी बना ली। सिंधिया और रावत की दूरियां लोकसभा चुनाव के दौरान विजयपुर से कांग्रेस विधायक रामनिवास रावत भाजपा में शामिल हो गए थे। बाद में उन्होंने विधानसभा से इस्तीफा दिया। उनके इस्तीफा देने से विजयपुर सीट रिक्त हुई और इस पर उपचुनाव हुआ। इस बार रावत को भाजपा ने अपना प्रत्याशी बनाया। रामनिवास रावत, सिंधिया राजघराने के करीबी माने जाते थे। पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं ज्योतिरादित्य सिंधिया के पिता माधवराव सिंधिया के वे करीबी थे। माधवराव सिंधिया के निधन के बाद वे ज्योतिरादित्य सिंधिया के नजदीक हो गए। कांग्रेस में राम निवास रावत को हमेशा से सिंधिया गुट का ही माना गया। वर्ष 2018 में रामनिवास रावत को कांग्रेस ने मध्य प्रदेश कांग्रेस का कार्यवाहक अध्यक्ष बना दिया। वर्ष 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में रामनिवास रावत विजयपुर सीट से कांग्रेस प्रत्याशी थे, लेकिन वे चुनाव हार गए थे। इसी दौरान मध्य प्रदेश में कमलनाथ की सरकार बनी और सवा साल बाद 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपने समर्थक विधायकों के साथ कांग्रेस छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया। इस कथा का क्षेपक यह रहा कि हमेशा सिंधिया के साथ रहने वाले रावत सिंधिया के साथ भाजपा में शामिल नहीं हुए। इसके बाद वर्ष 2023 में रावत फिर से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़े और विधायक बन गए। इसके बाद अचानक उन्होंने भाजपा का दामन थाम लिया। इन पांच सालों में घटनाक्रम तेजी से बदलता रहा और रामनिवास रावत तथा ज्योतिरादित्य सिंधिया के बीच दूरियां तेजी से बढ़ती गई, जिसका नतीजा यह हुआ कि रावत के भाजपा में आने के बाद भी सिंधिया उनके चुनाव में प्रचार के लिए विजयपुर नहीं आए। हालांकि सिंधिया से दूरी होने के बाद रावत मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के करीबी हो गए। इसके चलते मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उन्हें न सिर्फ अपने मंत्रिमंडल ने शामिल किया, बल्कि उन्हें वन विभाग जैसा महत्वपूर्ण विभाग भी दिया। यह विभाग भाजपा के एक आदिवासी वर्ग से आने वाले मंत्री नागर सिंह चौहान के पास था। उनसे यह विभाग वापस लिया गया और रामनिवास रावत को यह अहम विभाग दिया गया। इन सबमें खास बात यह भी रही कि रावत को मंत्री तब बनाया गया जब वे विधायक भी नहीं थे। मुख्यमंत्री की प्रतिष्ठा दांव पर विजयपुर उपचुनाव में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की प्रतिष्ठा इसलिए भी दांव पर लगी हुई है, क्योंकि विजयपुर से कांग्रेस विधायक रामनिवास रावत को भाजपा में लाने का काम स्वयं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ही किया था। इस विधानसभा क्षेत्र को कांग्रेस का मजबूत गढ़ माना जाता रहा है। यहां से 1980 के बाद से भाजपा सिर्फ तीन बार ही विधानसभा का चुनाव जीत सकी। हालांकि रावत इस सीट से 6 बार विधायक रह चुके हैं। ऐसे में सिंधिया का इस सीट पर प्रचार के लिए नहीं आना प्रदेश भाजपा की राजनीति में सब ठीक चल रहा है इस पर सवाल खड़े कर रहा है। क्या नाराज है कमलनाथ इधर कमलनाथ जो एक साल पहले तक मध्य प्रदेश कांग्रेस के सर्वेसर्वा हुए करते थे, अब कांग्रेसी दृश्यपटल से ओझल से दिखाई देते हैं। वे इन उपचुनावों में कहीं दिखाई ही नहीं दिए। उनका प्रचार का कार्यक्रम तय जरुर हुआ था, लेकिन एक दिन पहले उनका एक संदेश प्रदेश कांग्रेस के नेताओं को मिला कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है इसलिए वे अपना दौरा रद्द कर रहे हैं। मध्य प्रदेश में कांग्रेस के विधानसभा चुनाव हारने के बाद से कमलनाथ कांग्रेस में हाशिए पर माने जा रहे हैं। उन्हें आनन फानन में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पद से हटाया गया। कांग्रेस ने उन्हें मल्लिकार्जुन खड़गे की टीम में भी जगह नहीं दी। हालांकि इन सबके बीच उनके बेटे नकुलनाथ को जरूर पार्टी ने छिंदवाड़ा से लोकसभा का प्रत्याशी बनाया, लेकिन तब भी पार्टी के बड़े नेताओं ने छिंदवाड़ा से दूरी बनाए रखी। परिणामस्वरुप कमलनाथ अपने बेटे को चुनाव भी नहीं जिता पाए। इन सबसे लगता है कि कमलनाथ कहीं न कहीं अपनी पार्टी के इस व्यवहार से नाराज है। इसी बीच प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने अपनी टीम का गठन कर दिया, उसमें भी कमलनाथ के समर्थकों को वह वजन नहीं दिया गया, जिसकी उम्मीद उनके समर्थकों को थी। बीच-बीच में यह भी खबरें चलती रही कि कमलनाथ भाजपा में जा रहे हैं, इन सभी खबरों का कमलनाथ लगातार खंडन करते रहे। अब उनके उपचुनाव में प्रचार नहीं करने को लेकर भी तरह तरह की चचाएं प्रदेश में चल रही है और अमूमन शांत रहने वाली मध्यप्रदेश की राजनीति में दोनों प्रमुख दलों के नेताओं की चुनाव प्रचार में खामोशियां काफी कुछ कह रही हैं।

गाँवों में भारत में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा लागू करने में बाधाएँ

ग्रामीण भारत में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा को मजबूत करना सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (यूएचसी) प्राप्त करने और ग्रामीण स्वास्थ्य परिणामों में सुधार के लिए आवश्यक है। केंद्रित बुनियादी ढांचे का विकास, कार्यबल प्रोत्साहन और डिजिटल नवाचार मौजूदा अंतराल को पाट सकते हैं, जिससे सभी के लिए स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित हो सकती है। तब भी उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, उन्हें खराब गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा मिलती है और अक्सर इस प्रक्रिया में वे कर्ज में डूब जाते हैं। ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा की पहुँच बढ़ाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपकरण, टेलीमेडिसिन, अभी भी महत्त्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रहा है।

प्रियंका सौरभ
लेखक

प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा किसी भी स्वास्थ्य प्रणाली की नींव होती है, खासकर ग्रामीण भारत में, जहाँ 65 फीसदी से ज्यादा आबादी रहती है। फिर भी, ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी स्वास्थ्य सेवाएँ देने में लगातार चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अपर्याप्त बुनियादी ढाँचाः ज्यादातर ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा केंद्रों में बिजली, स्वच्छ पानी और उपकरण जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। ग्रामीण स्वास्थ्य सांख्यिकी 2021 के अनुसार, 8 फीसदी से ज्यादा स्वास्थ्य सेवा केंद्र बिना बिजली के काम करते हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा केंद्रों में डॉक्टरों और नर्सों सहित प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मियों की भारी कमी है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय 2022 के अनुसार भारत में स्वास्थ्य सेवा केंद्रों में डॉक्टरों की 23 फीसदी कमी है। लंबी दूरी और खराब परिवहन नेटवर्क के कारण दूरदराज के इलाकों में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, जिससे मरीजों की स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच प्रभावित होती है। उत्तराखंड जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के 40 फीसदी से ज्यादा गाँवों में नजदीकी स्वास्थ्य सेवा केंद्र तक पहुँच नहीं है। कम साक्षरता स्तर और स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जागरूकता की कमी के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं का कम उपयोग होता है। बिहार जैसे राज्यों में कम जागरूकता के कारण टीकाकरण दर कम बनी हुई है। भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद का 1.3 फीसदी स्वास्थ्य सेवा पर खर्च करता है (आर्थिक सर्वेक्षण 2023), जो ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे और सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए अपर्याप्त है। पीएचसी में बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने, बिजली, स्वच्छ पानी और आवश्यक उपकरण सुनिश्चित करने में निवेश करें। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों को उन्नत करने के लिए अतिरिक्त धन आवंटित कर सकता है। डॉक्टरों और नर्सों के लिए उच्च वेतन, आवास और ग्रामीण भत्ते जैसे प्रोत्साहनों के माध्यम से भर्ती और प्रतिधारण को बढ़ाएँ। तमिलनाडु जैसे राज्य ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने के लिए डॉक्टरों को प्रोत्साहित करने के लिए ग्रामीण सेवा लाभ प्रदान करते हैं। दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए टेलीमेडिसिन और मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयों के उपयोग का विस्तार करें। ग्रामीण भारत में टेलीकंसल्टेशन प्रदान करने के लिए ई-संजीवनी का सफलतापूर्वक उपयोग किया गया है। मातृ और बाल स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में समुदाय-आधारित जागरूकता कार्यक्रम चलाएँ। ग्रामीण इलाकों में मातृ देखभाल को बढ़ावा देने में आशा कार्यकर्ता प्रभावी रही हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा पर ध्यान केंद्रित करते हुए राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 द्वारा अनुशंसित सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय को सकल घरेलू उत्पाद के कम से कम 2.5 फीसदी तक बढ़ाएँ। थाईलैंड जैसे देशों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य में निरंतर निवेश के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच में सुधार किया है। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा में चुनौतियाँ सिर्फ. मरीजों तक सीमित नहीं हैं; वे स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के कंधों पर भी भारी बोझ डालती हैं। डॉक्टरों के सामने आने वाली कठोर वास्तविकता हैं-हिंसा, अपर्याप्त आवास और ढहते बुनियादी ढाँचे। ये कारक यहाँ सरकारी अस्पतालों में काम करने के लिए कई लोगों को रोकते हैं। विशेषज्ञों को लाने के प्रयासों के बावजूद, ऐसे पेशेवरों की कमी का मतलब अक्सर यह होता है कि मरीजों को इलाज के लिए ज़िला अस्पतालों में भेजा जाना चाहिए। ह्लकोविड-19 महामारी हमारी प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए एक चेतावनी थी, फिर भी इस क्षेत्र में कोई अतिरिक्त निवेश नहीं हुआ है। सुलभ, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव में, ग्रामीण भारत के लोग, विशेष रूप से पहाड़ों, जंगलों और रेगिस्तानों में रहने वाले लोग, बीमारी का सामना करने पर खुद का ख़्याल रखना जारी रखते हैं-अक्सर बीमारी के गंभीर होने तक देखभाल में देरी करते हैं, बिल्कुल भी देखभाल नहीं करते हैं या अनौपचारिक, खराब गुणवत्ता वाले प्रदाताओं से देखभाल लेते हैं। जब वे स्वास्थ्य सेवा लेने में सक्षम होते हैं, तब भी उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, उन्हें खराब गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा मिलती है और अक्सर इस प्रक्रिया में वे कर्ज में डूब जाते हैं। ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा की पहुँच बढ़ाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपकरण, टेलीमेडिसिन, अभी भी महत्त्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रहा है। विशेषज्ञों की उपलब्धता को सरिखित करना, यह सुनिश्चित करना कि रोगियों को इंटरनेट और बिजली जैसे आवश्यक बुनियादी ढाँचे तक पहुँच हो और विशेषज्ञों द्वारा अक्सर सामना की जाने वाली भारी नैदानिक ज़िम्मेदारियों का प्रबंधन करना, ये सभी बाधाएँ हैं जिनका समाधान करने की आवश्यकता है। एआई टेलीमेडिसिन परामर्शों को अनुकूलित करके, उपलब्धता के आधार पर मामलों को सही केंद्रों तक पहुँचाकर और एक जिला-व्यापी, एआई-सक्षम, हब-एंड-स्पोक मॉडल का समर्थन करके इस प्रक्रिया को सुव्यवस्थित कर सकता है जो नियुक्ति संतुष्टि दरों में सुधार कर सकता। इसके अलावा, एआई की क्षमता ऑडिटिंग और धोखाधड़ी नियंत्रण तंत्र में सुधार तक फैली हुई है, जो आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) जैसे कार्यक्रमों में संसाधन रिसाव को रोकने के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करके कि संसाधनों का प्रभावी और नैतिक रूप से उपयोग किया जाता है, एआई ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणालियों की समग्र अखंडता को मजबूत करने में मदद कर सकता है।

बदलते भारत की बदलती तस्वीर

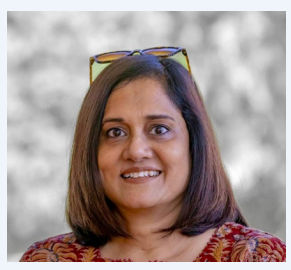

जया वर्मा सिन्हा

विविधताओं से भरा अपना देश निराला है। अपने यहाँ, चीजों को अलग नजरिए से देखने की प्रशस्त परंपरा रही है। हमारे लिए गंगा और गोदावरी सिर्फ. नदियों के नाम नहीं, जीवन दायिनी माँ के पयार्यी हैं। संगीत, कानों को सुख देने का सिर्फ. साधन नहीं, सुरों की साधना का जरिया है ।कुछ वैसे ही, हम देशवासियों के लिए, भारतीय रेल, महज एक अदद इंजन और डेढ़ दर्जन डिब्बों से लैस गाड़ी नहीं, घर परिवार से दूर जीविकार्जन कर रहे हमारे श्रमिकों, किसानों, जवानों और करोड़ों नागरिकों का अपने परिवारों और प्रियजनों से भावनात्मक रिश्तों को जोड़ता एक पुल है। पूरब से पश्चिम, और उत्तर से दक्षिण बिछी पटरियों पर सिर्फ.हमारी ट्रेनें नहीं दौड़तीं - उनसे होकर रिश्तों के एहसास गुजरते हैं। विराट भारत देश की विविधताओं को अपने अंतर में समेटे, भारतीय रेल, भारत सरकार की प्रतिनिधि भी है, और देशवासियों की आकांक्षाओं का प्रतीक भी ! इन आकांक्षाओं की अग्नि परीक्षा हर साल त्योहारों के मौसम में होती है, जब परिवार से दूर जीवन यापन कर रहे करोड़ों देशवासी अपने घरों को लौटते हैं। महानगरों की गुमनामी भरी ज़िन्दगी में, साल भर की जी तोड़ मेहनत के बाद, अपनों से मिलने के अरमान लिए ये मेहनतकश एक विशाल समूह में निकल पड़ते हैं रेल के सफर पर। संख्या इतनी ज्यादा, कि अगर आपने उस परिवेश में कभी काम ना किया हो, तो देखते ही हाथ-पाँव फूल जायें। और, अगर बात त्योहार और विशेष दिनों में उमड़ते जन-सैलाब की हो, तो सिर्फ.रेल संचालन से बात नहीं बनती। आपको रेलवे स्टेशन पर आये लोगों के सुचारू रूप से ठहरने, टिकट खरीदने, जलपान आदि की भी पर्याप्त व्यवस्था करनी होती है। इसके लिए रेल अधिकारी-कर्मचारियों के अलावा स्वयं सेवी संगठनों का भी सहयोग मिलता है। भारतीय रेल प्रशासन को करोड़ों की संख्या में आये यात्रियों को अपने गंतव्यों तक पहुँचने का कई दशकों का अनुभव है, पर अब सारी कोशिश इस अनुभव को क्रमशः सुखद बनाने की है। अगर विदेशी मेहमानों से कभी इस विषय पर चर्चा हो, तो वे दांतों तले उँगलियाँ दबा लेते हैं। यातायात प्रबंधन की जानकारी रखने वाले कई साथी, यह सुनकर कि त्योहारों के दौरान रेलवे ने एक लाख सत्तर हजार ट्रेनों के फेरों के अलावा 7,700 विशेष ट्रेनों का संचालन किया, हैरत में पड़ जाते हैं। अब आप, सूरत के पास स्थित औद्योगिक शहर ऊधना को ही ले लीजिये - यहाँ के रेलवे स्टेशन से प्रतिदिन औसतन सात-आठ हजार यात्रियों का आवागमन होता है - चार नवंबर को इस छोटे से स्टेशन पर चालीस हजार से ज्यादा की भीड़ उमड़ आयी। अगर, रेलवे प्रशासन ने एक टीम की तरह काम करते हुए उचित व्यवस्थाएँ ना की होती, तो यात्रियों की परेशानी का अन्दाज लगाना भी मुश्किल होता। त्योहार के दौरान, देश भर में सबसे अधिक आवागमन नई दिल्ली स्टेशन से हुआ। इस अवधि में सिर्फ.इस स्टेशन से, यात्रियों की माँग पर एक दिन मे 64 स्पेशल और 19 अनारक्षित ट्रेनों का संचालन किया गया। विदेशी मेहमानों से भरी एक सभा में जब त्योहारों में रेल यात्रा की चर्चा हुई, तो एक राजनयिक यह सुनकर दंग रह गये कि इस साल अकेले छठ महापर्व के पहले, 4 नवम्बर को, लगभग 3 करोड़ लोग ट्रेन से अपने गंतव्यों तक गये, और त्योहार के दिनों में तो रेलवे ने लगभग 25 करोड़ यात्रियों को यात्रा करने में मदद की। संबंधित राजनयिक ने, हल्की मुस्कान के साथ कहा कि पाकिस्तान की कुल आबादी से ज्यादा लोगों ने तो महज कुछ दिनों में ही आपकी ट्रेनों में यात्रा की ! भारतीय रेल को यह एहसास है कि देश के पूर्वी हिस्सों से बड़ी संख्या में उद्योग केंद्रों में श्रम कर रहे हमारे इन भाई-बहनों का देश के निर्माण में अहम किरदार है। जम्मू की अटल टनल से लेकर मुंबई की सी-लिंक तक, और बेंगलुरु की आई-टी प्रतिष्ठानों से लेकर दिल्ली के निमार्णाधीन भवनों तक को, पूरब की मिट्टी में रचे बसे लोगों ने अपने हाथों से गढ़ा है।

संक्षिप्त खबरें

किसान संगठन के शिविर में बालाओं ने लगाए ठुमके, वीडियो वायरल

अमरोहा। तिगरी गंगा मेले में लगे एक किसान संगठन के शिविर में बालाओं ने ठुमके लगाए। कुछ लोग उन पर नोट उड़ा रहे हैं। उनके ठुमके लगाए जाने की वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। बृहस्पतिवार शाम सोशल मीडिया पर वायरल हुई वीडियो में दिखाई दे रहा है कि एक किसान संगठन का शिविर तिगरी गंगा मेले में लगा है। उसमें एक महिला कलाकार डांस कर रही है। कुछ लोग मंच से खड़े होकर उस पर नोट बरसाने लगते हैं। तभी मंच पर मौजूद कुछ लोग नोट बरसा रहे शख्स को रोकने की कोशिश करते हैं। जिस पर विवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। लोग समझा कर मामला निपटा देते हैं। इसके बाद दूसरी महिला कलाकार डांस करती है। गंगा मेले में लगे शिविर में बालाओं के ठुमके की वीडियो देख हर कोई हैरत में है।

लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के सदस्य का पासपोर्ट बनाने के मामले में एक पुलिसकर्मी निलंबित

मेरठ, । मेरठ जिले में कंकरखेड़ा थाने के एक पुलिसकर्मी को फर्जी पते पर कुख्यात माफिया लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के एक सदस्य का पासपोर्ट सत्यापन करने के आरोप में निलंबित कर दिया गया है। पुलिस के एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। मेरठ के पुलिस अधीक्षक (नगर) आयुष विक्रम सिंह ने शुक्रवार को बताया कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) ने आरोपी आरक्षी संदेश कुमार को निलंबित कर दिया है। उन्होंने बताया कि प्रीतम सिंह बराड़ नामक बदमाश लॉरेंस बिश्नोई गिरोह से जुड़ा बताया जा रहा है और वह राजस्थान पुलिस के लिए भी वांछित है। सिंह ने बताया कि जांच में पाया गया कि बराड़ का पासपोर्ट कंकरखेड़ा थानाक्षेत्र से बनाया गया था और इस प्रक्रिया में पते का सत्यापन नहीं किया गया था। उनके अनुसार इस गड़बड़ी में कंकरखेड़ा थाने के आरक्षी संदेश कुमार को लिप्त पाया गया। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि संदेश कुमार को एसएसपी ने निलंबित कर दिया है और इसके खिलाफ अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में बुजुर्ग अपने घर में मृत मिला

शाहजहांपुर । उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में 65 वर्षीय एक व्यक्ति अपने घर में मृत मिला जिसके सिर पर गंभीर चोट के निशान थे। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। घटना खुटार क्षेत्र के रौतापुरकलां गांव की है। पुलिस ने बताया कि प्रारंभिक जांच में पता चला कि रामसेवक की किसी भारी चीज से वार कर उस समय हत्या कर दी गई जब वह सो रहा था। पुलिस क्षेत्राधिकारी (पुवायां) निष्ठा उपाध्याय ने बताया, ह्यह्यअज्ञात हमलावर के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। स्थानीय पुलिस ने हमलावर को पकड़ने के लिए टीमें गठित कर दी हैं।ह्ल उन्होंने बताया कि हत्या की वजह अभी स्पष्ट नहीं है और अधिकारी मामले की गहनता से जांच कर रहे हैं।

सहारनपुर में पेंड्रोल क्लिप खोलकर पटरी पर रखी, हादसा टला, अधिकारी मौके पर पहुंचे

सहारनपुर । उत्तर प्रदेश के सहारनपुर-अंबाला रेल खंड पर सरसावा रेलवे स्टेशन के समीप कथित तौर पर पेंड्रोल क्लिप खोलकर पटरी पर रख दी गई जिसकी सूचना मिलने पर रेलगाड़ियों का परिचालन रोक दिया गया। अधिकारियों शुक्रवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि घटना बृहस्पतिवार रात की है जब रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के गश्ती दल ने सरसावा रेलवे स्टेशन के निकट खंभा नंबर-199 के पास ह्यपेंड्रोल क्लिपह्ल को पटरियों के ऊपर रखा देखा, जिसके बाद उन्होंने तुरंत उच्चाधिकारियों को इसकी सूचना दी। पेंड्रोल क्लिप स्लीपर और पटरियों को आपस में जोड़ने का काम करती है इसके न होने से हादसे का खतरा हो सकता है। अंबाला मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम), राजकीय रेलवे पुलिस, आरपीएफ के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे। आरपीएफ ने अज्ञात के खिलाफ रेलवे अधिनियम की प्रासंगिक धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। डीआरएम मंदीप सिह ने कहा, इस बात की जांच की जा रही है कि यह किसी की शरारत है या किसी ने साजिश के तहत पेंड्रोल क्लिप को खोलकर पटरियों पर रख दिया। उत्तर प्रदेश में पहले भी इस तरह की रेलगाड़ियों को पलटाने की कोशिश की घटनाएं सामने आ चुकी हैं।

कीटनाशक पदार्थ का सेवन करने वाले युवक की मौत

धनौरा।कीटनाशक पदार्थ का सेवन करने वाले युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई। परिजनों ने गंगा घाट पर शव का अंतिम संस्कार कर दिया। कस्बे के एक मोहल्ले के निवासी युवक का बुधवार रात अपने परिजनों से किसी बात को लेकर विवाद हो गया था। युवक ने गुस्से में आकर घर में रखे कीटनाशक पदार्थ का सेवन कर लिया, जिससे उसकी हालत बिगड़ गई। परिजन उसे उपचार के लिए निजी चिकित्सक के यहां ले गए।

ऐतिहासिक गंगा मेले मे बॉलीवुड म्यूजिकल नाइट एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन

प्रात: किरण, संवाददाता

अमरोहा/तिगरी धाम। ऐतिहासिक गंगा मेले में कार्तिक पूर्णिमा स्नान की पूर्व संध्या पर श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय की ओर से ह्लअखिल भारतीय कवि सम्मेलनह्ल एवं ह्लबॉलीवुड म्यूजिकल नाइटह्ल का शानदार आयोजन किया गया। जिसमें एक दर्जन से अधिक पुलिस/ प्रशासनिक/ न्यायिक अधिकारियों के साथ तमाम जनप्रतिनिधियों समेत कई हजार श्रोताओं/ दर्शकों ने जमकर इस सांस्कृतिक आयोजन का आनंद लिया। कवि सम्मेलन एवं बॉलीवुड नाइट्स की दीवानगी का आलम यह था कि शाम 6:00 बजे शुरू हुआ इस शानदार सांस्कृतिक आयोजन सुबह 3:00 तक चला। श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय/ संस्थान की ओर से आयोजित ह्लअखिल भारतीय कवि सम्मेलनह्ल एवं ह्लबॉलीवुड म्यूजिकल नाइटह्ल का शुभारंभ जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री जफर अहमद, जिलाधिकारी श्रीमती निधि गुप्ता वत्स, पुलिस अधीक्षक श्री कुमार अनुपम सिंह, वेंकटेश्वरा समूह अध्यक्ष डॉ सुधीर गिरी, प्रतिकुलाधिपति डॉ राजीव त्यागी, सीडीओ अश्वनी मिश्रा, मुख्य मेला अधिकारी/ अपर जिलाधिकारी माया शंकर यादव आदि ने मां गंगा की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया।इसके बाद शुरू हुई ह्लबॉलीवुड म्यूजिकल नाइटह्ल में मशहूर सा रे गा मा फीमेल प्लेबैक सिंगर निवेदिता नंदा एवं मशहूर टी सीरीज सिंगर मनोज वर्मा ने ह्लअपनी तो जैसे तैसे कट जाएगी आपका क्या होगा जनाबे अली... और ह्लओ हंसिनी मेरी हंसिनी कहां उड़ चली.. तुमसे बढ़कर दुनिया में ना देखा कोई और जुबा पर आज दिल की बात आ गई..... तू माने या ना माने दिलदारा असते तेनु रब मानिया... समेत बॉलीवुड एवं पंजाबी गीतों पर एक से बढ़कर एक शानदार प्रस्तुति देकर सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया।रात 10:00 बजे देश के विख्यात कवि डॉ दिनेश रघुवंशी के संचालन में शुरू हुए ह्लअखिल भारतीय कवि सम्मेलनह्ल में बरेली से आए देश के ओज के बेहतरीन कवि डॉ राहुल अवस्थी ने ह्लदाल ना गल पाएगी दुश्मन हाथ मारेंगे भारत के- चाले ना चल पाएंगे राफेल चलेंगे भारत के। प्राणों से प्यार है- यह देश हमारा है..... सुना कर सभी में जोश भर दिया। इसके बाद राजस्थान के दौसा से आई श्रृंगार रस की कवित्री सपना सोनी ने ह्लजमीन पर चांद मेरे सामने उतर आया, जिसे निहार मेरे दिल में प्यार भर आया। खुदा से तेरे सिवा और कुछ नहीं मांगा, जिधर भी देखो मुझे तू ही तू नजर आया.... सुना कर खूब वह वाही लूटी। कपिल शर्मा शो एवं लाफ्टर चैंपियन सीजन 2 के विजेता कानपुर से आए हेमंत पांडे ने राजनीति एवं प्रेम पर अपने शानदार व्यंग्य से सबको हंसा हंसा कर लोटपोट कर दिया। देश के महान कवि डॉ दिनेश रघुवंशी ने किसानों एवं जवानों की पीड़ा कुछ यूं व्यक्त की... हमेशा तन गए आगे जो तोपों की दहानों के, कोई कीमत नहीं होती क्या प्राणों की जवानों के। बड़े लोगों की औलादे तो कैंडल मार्च करती है, जो अपने प्राण देते हैं वह बेटे हैं किसानों के.... सुनाकर सभी की आंखें नम कर दी। इसके साथ ही ओज के युवा कवि मोहित शौर्य, आगरा से आए हास्य कवि पवन आगरी, ओज के राहुल शर्मा स्थानीय कवि डॉ यतीन्द्र कटारिया, हास्य/ श्रृंगार की कवित्री ममता शर्मा आदि ने भी शानदार काव्य पाठ कर श्रोताओं को मंत्र मुक्त कर दिया।

कार्तिक पूर्णिमा: श्रद्धालुओं ने लगाई आस्था की डुबकी, हर-हर गंगे के जयघोष से गूंज उठे घाट

प्रात : किरण, संवाददाता

अमरोहा/गजरौला। तिगरी गंगा मेले में कई दिन से डेरा डाले 25 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने कार्तिक पूर्णिमा के दिन मुख्य स्नान पर डुबकी लगाकर पुण्य कमाया। पतित पावनी किनारे ही धार्मिक अनुष्ठान कराए। तड़के ही स्नान का क्रम शुरू हो गया था।कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा की रेती में लगा तिगरी गंगा मेला आस्था और श्रद्धा का प्रतीक है। देवोत्थान एकादशी पर गंगा मेले के शुभारंभ से लाखों श्रद्धालु मुख्य स्नान तक डुबकी लगाते हैं। पतित पावनी में प्रतिदिन स्नान कर पुण्य कमाने के लिए श्रद्धालुओं ने दस दिन पहले ही डेरा डाल दिया था। तंबू लगाकर परिवार सहित गंगा किनारे रह रहे थे। शुक्रवार को कार्तिक पूर्णिमा होने के कारण गंगा किनारे स्नान घाटों पर 25 लाख से अधिक श्रद्धालु उमड़े। पूर्णिमा के दिन पर्वी पर स्नान कर पुण्य कमाने के लिए श्रद्धालु रात तीन बजे से ही डेरों से उठ गए थे। उन्होंने गंगा स्नान घाटों की तरफ रुख कर दिया। तड़के चार बजे से सभी स्नान घाटों पर श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा। दूर-दूर तक गंगा में डुबकी लगा रहा आस्था का समुद्र दिखाई दे रहा था। गंगा तट हर हर गंगे के उदघोष संग गूंज उठे। पतित पावनी में स्नान कर श्रद्धालुओं ने गंगा किनारे ही धार्मिक अनुष्ठान कराए। इस दौरान सुरक्षा के लिए पुलिस कर्मी मुस्तैद रहे। मोटर बोट से गंगा जल में गश्त करते रहे। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने तिगरी गंगा मेले का भ्रमण किया। उन्होंने मेले में पुलिस के इंटीग्रेटिड कंट्रोल रुम से लेकर मनोरंजन क्षेत्र का भ्रमण कर मेला प्रभारी एडीएम न्यायिक माया शंकर यादव व मेला मजिस्ट्रेट एसडीएम चंद्रकांता से मेले के बारे में जानकारी ली। मेले की भव्यता को देख बोले बहुत सुंदर है तिगरी गंगा का मेला। मुख्य चुनाव आयुक्त बृहस्पतिवार दोपहर हापुड़ जिले के गढ़मुक्तेश्वर के गंगा मेले में आए थे। वह गढ़ गंगा मेले से नाव द्वारा तिगरी गंगा मेले में आए। यहां उन्होंने कार्तिक पूर्णिमा पर लगे तिगरी गंगा मेले का सेक्टर-1 से भ्रमण शुरू किया। किसी वाहन में सवार होने की बजाय पैदल ही भ्रमण करते रहे। पुलिस के इंटीग्रटिड कंट्रोल रूम में जाकर देखा कि मेले के गतिविधियों की किस तरह निगरानी की जा रही है। मनोरंजन क्षेत्र में गए। जानकारी ली कि मनोरंजन के कितने साधन हैं। इस दौरान उन्होंने मेला प्रभारी एडीएम न्यायिक माया शंकर यादव व मेला मजिस्ट्रेट एवं एसडीएम चंद्रकांता से जानकारी ली कि मेले में कितने लाख श्रद्धालु आए हैं। किस-किस जिले से श्रद्धालु आते हैं। मेले में कोई अव्यवस्था तो नहीं है। भव्यता को देख उन्होंने कहा कि पतित पावनी किनारे बसा मेला मन को भा रहा है।

गोल्डन बैल्स स्कूल में मनाया गया बाल दिवस और गुरु नानक जन्म दिवस

प्रात : किरण, संवाददाता

स्योहारा। ठाकुरद्वारा रोड स्थित गोल्डन बैल्स इंटरनेशनल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में बाल दिवस और गुरुनानक जन्म दिवस मनाया गया। बाल दिवस के अवसर पर प्रातःकाल अध्यापक गण के द्वारा प्रार्थना कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। जिसमें सभी अध्यापक ने अपनी-अपनी प्रस्तुति दी। बाल दिवस के इस शुभ अवसर पर स्कूल प्रबंधक सरदार गुरविंदर सिंह, निर्देशिका तवलीन कौर और प्रधानाचार्य शेखर ने सभी बच्चों को बाल दिवस की शुभकामनाएं दी। इस मौके पर प्रबंधक सरदार गुरविंदर सिंह ने बताया कि इस दिन पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म हुआ था। पंडित जवाहरलाल नेहरू हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे। वे बच्चों से बेहद प्यार करते थे तथा बच्चों को देश का भविष्य मानते थे। इसलिए उन्होंने अपने जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया। सिख धर्म के संस्थापक गुरुनानक जी के जन्म दिवस के अवसर पर स्कूल में सबद कीर्तन कराया गया। जिसमें ओमानंद, ज्ञानी जी, स्कूल निर्देशिका तवलीन कौर और छात्र -छात्राओं की मुख्य भूमिका रही। अवसर पर स्कूल मैनेजमेंट की तरफ से बच्चों को फल और स्लाइस पैकेट का भी वितरण किया गया। इस अवसर पर सरदार रमन, सरदार सुखम, सरदार ज्ञानी, शिवम, लवीना, निगारिश जमाल, सारा चौधरी, सीमा, अनुज, मयंक, दिशा, गौरव, सुप्रिया, पवन, अनम, रुकैया आदि शिक्षक मौजूद रहे।

विरासत और आदर्शों से प्रेरणा लेने वाला समाज कभी गुलाम नहीं हो सकता: सीएम योगी

प्रात : किरण, संवाददाता

- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ श्री गुरु नानक देव जी महाराज के 555वें प्रकाश पर्व में हुए शामिल

लखनऊ, । ईश्वर की आराधना के प्रति श्री गुरु नानक देव जी ने हम सभी को लगातार प्रेरित किया। साथ ही सन्मार्ग पर चलने का संदेश दिया। यही परंपरा आगे चलकर भक्ति से शक्ति के तेज पुंज के रूप में बदल गई और गुरु गोविंद सिंह महाराज के नेतृत्व में इसे नए आयाम मिले। गुरु गोविंद सिंह महाराज और उनके चार साहिबजादों के बलिदान की गाथा से हर भारतवासी गौरवान्वित महसूस करता है। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को आलमबाग एवं गुरुद्वारा पटेल नगर में श्री गुरु नानक देव जी महाराज के 555वें प्रकाश पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में कही। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 5 वर्ष पूर्व गुरु नानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व पर मुख्यमंत्री आवास पर कीर्तन यात्रा का आयोजन किया गया था। उन्होंने इसे सौभाग्यशाली बताया। उन्होंने कहा कि पिछले चार वर्षों से गुरु गोविंद सिंह जी के चार साहिबजादों की वीर बलिदानी दिवस को वीर बाल दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 दिसंबर की तिथि को वीर बाल दिवस मनाने की घोषणा कर, इसे राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम घोषित किया। यह कार्यक्रम आज की युवा पीढ़ी को देश और धर्म से जोड़ने के लिए प्रेरणा का कार्य करेगी। सीएम योगी ने कहा कि ये महान परंपराएं समाज और राष्ट्र को अपनी विरासत से जोड़ने के साथ प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती हैं। उन्होंने कहा कि अपनी विरासत और आदर्शों से प्रेरणा लेने वाला समाज कभी गुलाम नहीं हो सकता है। कार्यक्रम के अंत में सीएम योगी ने प्रदेशवासियों को गुरु नानक देव के प्रकाश पर्व की बधाई देते हुए कहा कि उनके आदर्शों से प्रेरित होकर समाज और राष्ट्र के हित में कार्य करने की उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

बाप बेटे ने अपमान का बदला लेने के लिए की थी कबाड़ी कारोबारी की हत्या

प्रातः किरण संवाददाता

गाजियाबाद, । शंकर विहार स्थित रब्बानी मस्जिद के पास बुधवार रात कबाड़ कारोबारी नन्हें की हत्या के मामले में पुलिस ने आरोपी पिता जाकिर और उसके बेटे शाकिर को गिरफ्तार कर लिया है। दोनों ने बाइक खड़ी करने के विवाद और अपमान का बदला लेने के लिए हत्या करने की बात स्वीकार की है। एसीपी इंदिरापुरम स्वतंत्र कुमार सिंह ने बताया कि रब्बानी मस्जिद के पास रहने वाले जाकिर और उसके बेटे शाकिर को पुलिस ने इंदिरापुरम अंडरपास नहर पटरी के पास से गिरफ्तार किया है। पूछताछ में दोनों ने बताया कि नन्हें आए दिन नाली की सफाई और वहां बाइक खड़ा करने पर झगड़ा करता था। बुधवार को भी झगड़ा हुआ था और नन्हें व उसके पक्ष के लोगों ने उनका काफी अपमान किया था। उसका बदला लेने के लिए दोनों ने नन्हें और उसके बेटे सलमान को चाकू मारा था। पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर वारदात में इस्तेमाल हुआ चाकू भी बरामद कर लिया है। एसीपी ने बताया कि नन्हें के पुत्र आसिफ की तहरीर पर जाकिर और शाकिर समेत कई लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर किया गया है। फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की दो टीमें दबिश दे

कुंभ नगरी में आवागमन की सुविधा देने के साथ महाकुंभ की गाथा और प्रयाग का महात्म्य भी बताएंगे शहर के ई-रिक्शा चालक

- पर्यटन विभाग ने शुरू की शहर के रिक्शा चालकों की संस्कार की पाठशाला
- स्वच्छता दूत, प्लास्टिक मुक्त महाकुंभ और डिजिटल इंडिया अभियान के वाहक बनेंगे ई रिक्शा

प्रातः किरण संवाददाता

चालक प्रयागराज, । उत्तर प्रदेश की योगी सरकार प्रदेश में पारम्परिक भारतीय मूल्यों और ह्यअतिथि देवो भवःह्ल की संकल्पना को साथ लेते हुए पर्यटकों को बेहतर सुविधाएं और वातावरण प्रदान कर रही है। प्रयागराज महाकुंभ इसके लिए बड़ा मंच प्रदान कर रहा है। प्रयागराज शहर के ई रिक्शा चालकों को संस्कारवान बनाने की आज से हुई शुरूआत इसी का हिस्सा है। पर्यटन विभाग को इसकी जिम्मेदारी दी गई। शहर के 1000 ई रिक्शा चालकों को संस्कारवान बनाने की पाठशाला शुरू महाकुंभ आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों की प्रयागराज पहुंचने पर सबसे पहले भेंट होती है यहां टैक्सी चालक या ई रिक्शा चालकों से। इन चालकों के बर्ताव, आगंतुकों से संवाद और उनके तौर तरीके से भी कुंभ नगरी की छवि तय करेंगे। ऐसे में इनकी सॉफ्ट स्किल की ट्रेनिंग की जरूरत को देखते हुए आज से ई रिक्शा चालकों की ट्रेनिंग भी पर्यटन विभाग की तरफ से शुरू हुई है। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी अपराजिता सिंह बताती हैं कि एक हजार ई रिक्शा चालकों का प्रशिक्षण देने का अभियान आज से शुरू हुआ है। पहले दिन सौ ई रिक्शा चालकों को प्रशिक्षण दिया गया है। इस अभियान का उद्देश्य रिक्शा चालकों का स्किल डेवलेपमेंट और उनके बर्ताव को आगंतुकों के प्रति और बेहतर बनाना है। मान्यवर कांशीराम पर्यटन प्रबन्ध संस्थान, लखनऊ की अगुवाई में इन रिक्शा चालकों को ट्रेनिंग दी जा रही है। जिसके लिए उसकी एसओपी बनाई गई है। कुंभ मेला प्रशासन के मुताबिक ये रिक्शे कुंभ क्षेत्र के अंदर और बाहर चलाए जाएंगे जिनके लिए कलर कोडिंग भी की जायेगी। मान्यवर कांशीराम पर्यटन प्रबंध संस्थान की तरफ से शहर के होटल राही इलावर्त में यह ट्रेनिंग शुरू हुई है। कांशीराम पर्यटन प्रबंध संस्थान के असिस्टेंट प्रोफेसर प्रखर तिवारी का कहना है कि पर्यटकों के साथ व्यवहार के प्रति संवेदनशील बनाने और पर्यटक स्थलों एवं मार्गों की जानकारी देने के साथ स्वच्छता की जानकारी देने के लिए इनका प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इन रिक्शा चालकों को महाकुंभ की कहानियां और प्रयाग के महात्म्य का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है ताकि ये लोग महाकुंभ आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को गंतव्य स्थल तक पहुंचाने के साथ प्रयागराज के पर्यटक स्थलों की भी रोचक अंदाज में जानकारी दे सकें।

इसी क्रम में आज इन्हें यातायात के नियमों, स्वच्छता, अच्छे बर्ताव और डिजिटल भुगतान का भी प्रशिक्षण दिया गया है।

इन ई रिक्शा चालकों को ट्रेनिंग देने के पहले एक फॉर्म भी पर्यटन विभाग की तरफ से उनकी बुनियादी जानकारी के लिए भरवाया गया है।

प्रयागराज ई रिक्शा एसोसिएशन के उपाध्यक्ष रघुनाथ द्विवेदी का कहना है।

कि यह फॉर्म ई रिक्शा चालकों को दे दिया गया है।

जिसमें उल्लेखित शर्तों का पालन करने पर ही उनको ट्रेनिंग का प्रमाणपत्र और रिक्शे का क्यू आर कोड मिलेगा जिसे वो अपने रिक्शे में अपनी पहचान के लिए लगा सकेंगे ।

यह ट्रेनिंग वहीं रिक्शा चालक कर सकेंगे जिनके रिक्शे चाइना मेड नहीं हैं।

ट्रेनिंग लेने आए मोहम्मद इसरार खान

आयोग के आंशिक निर्णय के बाद धीमा पड़ा छात्र आंदोलन

प्रातः किरण संवाददाता

प्रयागराज, । प्रांतीय सिविल सेवा (पीसीएस) की प्रारंभिक परीक्षा एक ही दिन कराने के उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) के निर्णय के बाद आयोग के कार्यालय के सामने जारी छात्र आंदोलन शुक्रवार को धीमा पड़ता नजर आया।

छात्र शिव कुमार मौर्य ने बताया कि छात्र प्रदर्शनकारियों की संख्या कल तक 10,000 से अधिक थी लेकिन शुक्रवार सुबह यह कम होकर सैकड़ों में रह गई।

तथा प्रदर्शनकारी छात्रों की संख्या कम होने के बाद आयोग के सामने की एक सड़क लोगों के आवागमन के लिए खोल दी गई।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) ने अभ्यर्थियों की मांगों को स्वीकार करते हुए बृहस्पतिवार को समीक्षा अधिकारी (आरओ) और सहायक समीक्षा अधिकारी (एआरओ) परीक्षा स्थगित कर दी और प्रांतीय सिविल सेवा (पीसीएस) प्रारंभिक परीक्षा को पुराने पैटर्न पर आयोजित करने की घोषणा की।

पीसीएस की तैयारी कर रहे छात्र गणेश द्विवेदी ने कहा कि सरकार ने पीसीएस की परीक्षा एक दिन में कराने का बहुत अच्छा निर्णय किया है जिससे पीसीएस की परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों में बहुत खुशी है।

वहीं एक अन्य छात्र मयंक जैन ने कहा कि उन्हें उम्मीद है।

कि सरकार आरओ-एआरओ की परीक्षा पर भी जल्द निर्णय करेगी।

और इसी मांग को लेकर छात्र धरने पर बैठे हैं क्योंकि यदि इस आंदोलन के दौरान इस पर निर्णय नहीं लिया गया तो यह ठंडे बस्ते में चला जाएगा।

छात्र दीपक सिंह ने कहा कि यह फैसला (पीसीएस परीक्षा एक दिन में कराने का) सही समय पर लिया गया है।

और इस निर्णय से छात्रों का भविष्य सुरक्षित होगा एवं वे निश्चिंतता से परीक्षा की तैयारी कर सकेंगे।

इसी तरह, एक अन्य छात्र देवेंद्र प्रजापति ने कहा, हमें मुख्यमंत्री पर पूरा भरोसा है कि वह आयोग को आरओ-एआरओ पर भी जल्द निर्णय करने का निर्देश देंगे जिससे इस परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्र निश्चिंतता के साथ तैयारी कर सकेंगे।

गंगा स्नान मेले में चौ.गजेंद्र टिकैत ने फीता काटकर किया उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

स्योहारा।क्षेत्र के गांव किवाड़ में लगने वाले गंगा स्नान मेला का किसान नेता चौधरी गजेंद्र सिंह टिकैत ने फीता काटकर उद्घाटन किया। ये मेला लगातार 24 वर्षों से लगता चला आ रहा है। स्योहारा क्षेत्र के ग्राम किवाड़ में करोल नदी सिंबल वाले बाबा के स्थान पर लगातार 24 वर्षों से कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा स्नान मेला लगता चलाआ रहा है इस शुभ अवसर पर भारतीय किसान यूनियन के ब्लॉक अध्यक्ष चौधरी गजेन्द्र सिंह टिकैत ने मेले का फीता काटकर शुभारंभ किया क्षेत्र के कई गांवो के लोग मेले में हिस्सा लेते हैं सिंबल वाले बाबा जी की लोगो मे बहुत मान्यता है। मेले में तरह-तरह की दुकान लगाई जाती हैं यह मेला साल में एक बार एक दिन के लिए लगता है। इस अवसर पर गजराम सिह ,अमित चोधरी ,सोनू चोधरी , दीपचन्द त्यागी,
विनय त्यागी ,राजेन्द्र सैनी विकास ,जयवीर सिहं आदी मोजूद रहे।

भाजपा सरकार कर रही है संविधान को कमजोर : अखिलेश यादव

प्रात : किरण संवाददाता

अलीगढ़ । समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शुक्रवार को उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार की तीखी आलोचना करते हुए उसपर संविधान को कमजोर करने का आरोप लगाया और अपनी पार्टी के लोकतंत्र की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रहने का दावा किया। खैर विधानसभा क्षेत्र से सपा प्रत्याशी डॉ. चारू कैन के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए यादव ने कहा, मुठभेड़ करने वाली सरकार संविधान पर भरोसा नहीं करती। उन्होंने कहा,हमने लोगों को संविधान के बारे में शिक्षित करने का काम किया है और इंडिया गठबंधन को व्यापक समर्थन मिला है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि सत्तारूढ़ पार्टी इसमें दखल नहीं दे सकती। उन्होंने कहा, हम, समाजवादी पार्टी, संविधान और अपने लोकतंत्र की रक्षा करना जारी रखेंगे। यादव ने राज्य के नेतृत्व पर भी कटाक्ष करते हुए कहा, ह्यह्यसाधु-संत कम बोलते हैं, लेकिन कलयुग (वर्तमान युग) में वे अधिक बोल रहे हैं। यह टिप्पणी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर इशारा थी। यादव ने कहा, जिनके बारे में हमने सोचा था कि वह सच बोलेंगे, वह झूठ के सौदागर बन गए हैं। उन्होंने दावा किया, हमारे मुख्यमंत्री समाज में विस्फोटक (बारूद) बिछा रहे हैं, लेकिन उन्हें नहीं पता कि उनकी कुर्सी ही खतरे में है। उनकी कुर्सी के नीचे सुरंग खोदी जा रही है, और वह भी खतरे में हैं। उन्होंने भाजपा सरकार पर अपने व्यापारिक सहयोगियों को लाभ पहुंचाने के लिए महंगाई बढ़ाने और युवाओं को स्थायी रोजगार देने में विफल रहने तथा इसके बजाय सार्वजनिक संसाधनों को बर्बाद करने का भी आरोप लगाया। उन्होंने उत्तर प्रदेश को ट्रिलियन-डॉलर अर्थव्यवस्था में बदलने के राज्य सरकार के दावे की आलोचना करते हुए कहा, वह एक ट्रिलियन-डॉलर अर्थव्यवस्था का वादा करते हैं, लेकिन हमारे युवाओं के लिए रोजगार पैदा करने का उनका कोई इरादा नहीं है। वह गरीबों को भ्रमित करने और ध्यान भटकाने के लिए ऐसे दावे करते हैं। खैर में उपचुनाव 20 नवंबर को है।

सड़क हादसे में मां-बेटे समेत तीन की मौत, परिवार में मचा कोहराम

प्रात : किरण संवाददाता

रजबपुर। नेशनल हाईवे पर आगे चल रही पिकअप में पीछे से बाइक घुस गई। इस हादसे में रोहित (26) उसकी महेन्द्री (46) और रोहित के दोस्त राजीव (25) की मौत हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस में जांच पड़ताल की। तीनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत की खबर से चीखपुकार मच गई। पुलिस ने उत्तराखंड नंबर पिकअप के अज्ञात चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। यह हादसा रजबपुर थानाक्षेत्र में नेशनल हाईवे पर बृहस्पतिवार की रात हुआ। अमरोहा देहात थानाक्षेत्र के कल्याणपुरा गांव में वेदप्रकाश और उदल सिंह के परिवार रहते हैं। दोनों परिवार के लोग तिगरी मेला गए थे। कार्तिक पूर्णिमा से पहले बृहस्पतिवार की रात अचानक वेद प्रकाश की पत्नी महेंद्री की तबीयत बिगड़ गई। लिहाजा, उनका बेटा रोहित, मां महेंद्री को गांव के ही रहने वाले दोस्त राजीव पुत्र उदल सिंह के साथ बाइक पर बैठाकर तिगरी मेले से दवाई दिलाने अमरोहा आ रहे थे जैसे ही उनकी बाइक रजबपुर थानाक्षेत्र में हाईवे स्थित नॉर्दन पब्लिक स्कूल के सामने पहुंची, तभी उसके आगे तेज रफ्तार से चल रही पिकअप के चालक ने अचानक ब्रेक लगा दिए। बाइक चला रहा राजीव कुछ समझ पाता तब तक बाइक पीछे से पिकअप में घुस गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि राजीव और रोहित की मौके पर मौत हो गई। जबकि महेन्द्री गम्भीर रूप से घायल हो गईं। हादसे के बाद लोगों की भीड़ जमा हो गई। आरोपी चालक पिकअप छोड़कर भाग निकला। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई और घायल महेन्द्री को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने उन्हें भी मृत घोषित कर दिया। एक ही गांव के तीन लोगों की मौत की खबर मिलते ही चीखपुकार मच गई। तिगरी मेले से दोनों परिवार के लोग वापस लौट आए और पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे। शुक्रवार को पोस्टमार्टम करने के बाद परिजनों ने तीनों शवों का अंतिम संस्कार कर दिया है।

संक्षिप्त खबरें

गुरुपर्व पर गुरुद्वारे में शबद कीर्तन का आयोजन

धनौरा गुरुद्वारा श्रीगुरु सिंह सभा के संयोजन में श्रीगुरुनानक देव जी महाराज के प्रकाश पर्व पर शबद कीर्तन और लंगर का आयोजन किया गया। निशान साहिब को चोला चढ़ाया गया। शुक्रवार सुबह रागी जत्थे ने गुरुद्वारे में शबद कीर्तन का गायन कर संगत को निहाल किया। निशान साहिब को चोला चढ़ाकर गुरु के अटूट लंगर का आयोजन किया। बड़ी संख्या में संगत ने लंगर में प्रसाद ग्रहण किया। इस दौरान मनजीत सिंह, सुरजीत सिंह, दुर्जेंद्र सिंह कोकी, चरनजीत सिंह, जसवीर सिंह, सर्वजीत सिंह, त्रिवेंद्र सिंह आदि रहे।

गंगा मेले में स्काउट गाइड ने 506 बिछड़ों को अपनों से मिलाया

गजरौला।भारत स्काउट और गाइड जनपद अमरोहा ने तिगरी गंगा मेले में बच्चों, महिलाओं, वृद्धों की सहायता के लिए निशुल्क सेवा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के तहत सूचना, सहायता एवं खोया पाया केंद्र का संचालन डीएम निधि गुप्ता वत्स एवं अपर जिलाधिकारी माया शंकर यादव के निर्देशन में किया गया। जिसमें 28 विद्यालयों के 430 स्काउट्स ने अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सेवा की। स्काउट्स ने नौ नवंबर से 15 नवंबर तक कुल 506 बच्चों, महिलाओं एवं वृद्धजनों को अपनों से मिलाने का काम किया। शिक्षक विधायक डा. हरि सिंह ढिल्लो, जिलाधिकारी निधि गुप्ता वत्स, अपर जिलाधिकारी मायाशंकर यादव एवं अपर जिलाधिकारी ब्रजेश कुमार त्रिपाठी, मुख्य विकास अधिकारी अश्वनी कुमार मिश्र, जिला विद्यालय निरीक्षक विष्णु प्रताप सिंह व बेसिक शिक्षा अधिकारी डा. मोनिका ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया। इस दौरान डा. जीपीसिंह, अनिलकुमार, अजयकुमार, अतुलकुमारकौशिक, डा.जोगिन्द्रसिंह, अजय चौहान, सतपाल सिंह, अंकित कुमार, अमनकुमार, विनोदकुमार, नरेंद्र कुमार आदि ने सहयोग किया।

नमो भारत शॉर्ट फिल्म मेकिंग प्रतियोगिता में भाग लेकर जीतिए लाखों के ईनाम

गाजियाबाद, । एनसीआरटीसी नमो भारत शॉर्ट फिल्म मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन कर रही है। प्रतियोगिता में किसी भी क्षेत्र के कंटेंट क्रिएटर और फिल्म निर्माता शामिल हो सकते हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आवेदकों को नमो भारत शॉर्ट फिल्म मेकिंग प्रतियोगिता के साथ स्र१@ल्लू१३.ल्ल पर ईमेल करना होगा। ईमेल में आवेदक का पूरा नाम, 100 शब्दों की संक्षिप्त कहानी और फिल्म की अनुमानित अवधि शामिल होनी चाहिए। सबमिशन की अंतिम तिथि 20 दिसंबर है। मीडिया प्रभारी ने बताया कि इसमें भागीदारी के फिल्म निर्माता शॉर्ट फिल्म बनाने के लिए शैली या कहानी का चयन खुद कर सकते हैं, इसपर कोई प्रतिबंध नहीं है, शॉर्ट फिल्म में आरआरटीएस स्टेशन और नमो भारत ट्रेन रचनात्मक रूप में दिखाई देनी चाहिए। उन्होंने बताया कि आरआरटीएस स्टेशनों और नमो भारत ट्रेनों में शूटिंग पूरी तरह से निशुल्क है। प्रतियोगिता कॉलेज के छात्रों, स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं और सभी क्षेत्रों के महत्वाकांक्षी कंटेंट निर्माताओं के लिए खुली है। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले शीर्ष तीन विजेताओं को क्रमशः 1,50,000 रुपये, 1,00,000 रुपये और 50,000 रुपये के नकद पुरस्कार दिए जाएंगे। विजेता फिल्मों को एनसीआरटीसी के डिजिटल प्लेटफार्म पर भी दिखाया जा सकता है।

सनी की बल्लेबाजी से संडे राइडर्स ने उदयभान क्रिकेट एकेडमी को हराया

गाजियाबाद, । ड्रीम पार्क क्रिकेट ग्राउंड पर शुक्रवार को खेले गए मैच में संडे राइडर्स ने कप्तान सनी की बल्लेबाजी से उदयभान क्रिकेट एकेडमी को पांच विकेट से हरा दिया। मैन ऑफ द मैच चुने सनी भाटी ने 84 रन की महत्वपूर्ण पारी खेली। मोरटी स्थित ड्रीम पार्क क्रिकेट ग्राउंड पर अनुज त्यागी टी 20 मेमोरियल टूनामेंट खेला जा रहा है। शुक्रवार को उदयभान क्रिकेट एकेडमी और संडे राइडर्स के बीच मुकाबला खेला गया। पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लेते हुए उदयभान क्रिकेट एकेडमी ने 20 ओवर में चार विकेट पर 214 रन का स्कोर बनाया। वरुण यादव ने सबसे ज्यादा 79, यश ने 45,अलीजान आलम ने 33 रन बनाए। विपक्षी टीम की ओर से प्रवीण कुमार ने दो विकेट और अंकित ने एक विकेट लिया। लक्ष्य की हासिल करने मैदान पर उतरी संडे राइडर्स की टीम ने 19.2 ओवर में पांच विकेट पर 220 रन बना मैच जीत लिया। सनी भाटी ने शानदार पारी खेलते हुए 84 रन बनाए।इसके अलावा विशाल सिंह ने 61,अमन ने 48 रन का अहम योगदान दिया। गेंदबाज आशीष ने दो और अरुण ने एक विकेट झटका।84 रन की शानदार पारी खेलने के लिए सनी भाटी को मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया।

कृषि को उद्यम से जोड़कर बढ़ाई जाए किसानों की आय : योगी आदित्यनाथ

- सीएम योगी ने कृषि एवं प्रौद्योगिकी के महाकुंभ कृषि भारत 2024 का उद्घाटन करते हुए कही यह बात
- सीएम योगी ने कृषि क्षेत्रों में आधुनिक तकनीक, डिजिटल एग्रीकल्चर के विकास के साथ ही नेचुरल फार्मिंग को बढ़ाने पर भी दिया जोर

प्रात : किरण, संवाददाता

लखनऊ,। किसानों को सूदखोरी के चंगुल से मुक्त करके स्वावलंबन की दिशा में अग्रसर कर सकें, इस दिशा में ढेर सारे प्रयास देश में 10 वर्षों के अंदर हुए। अभी भी बेहतरी की गुंजाइश है। बेहतर तकनीक का उपयोग करते हुए हम कैसे कृषि क्षेत्र को आगे बढ़ा सकते हैं इस पर फोकस करना होगा। देश के अंदर अलग-अलग राज्यों के अपने अनुभव होंगे, अलग अलग एग्रीकल्चरल क्लाइमेटिक जोन के अनुसार देश के विभिन्न क्षेत्रों ने उल्लेखनीय प्रगति की, विश्व में भी विषम परिस्थितियों के बीच ऐसा हुआ है। ऐसे में, अगर बेस्ट प्रैक्टिसेस को शेयर करते हैं तो बहुत कुछ हम लोग एक-दूसरे से सीख सकते हैं। यह बातें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को कृषि भारत 2024 कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में कही। कृषि व प्रौद्योगिकी के इस 4 दिनी महाकुंभ का आयोजन वृंदावन योजना मैदान में किया जा रहा है। उन्होंने कृषि को उद्यमिता से जोड़ने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल पर फोकस किया। कार्यक्रम से पूर्व सीएम योगी ने कंट्री पार्टनर नीदरलैंड्स के साथ द्विपक्षीय बैठक में भी हिस्सा लिया जिसमें नीदरलैंड्स के उप कृषि मंत्री जैन कीस गोएट, नीदरलैंड्स की राजदूत मारिसा गेराड्र्स की उपस्थिति में प्रतिनिधि मंडल संग बैठक की। उत्तर प्रदेश सरकार और नीदरलैंड्स के बीच 2 एमओयू भी साइन किए गए हैं और प्रदर्शनी के विभिन्न स्टॉल्स का सीएम योगी ने आवलोकन भी किया। 20,000 वर्ग मीटर क्षेत्र में कृषि भारत प्रदर्शनी का आयोजन हो रहा है जहां कृषि के सतत विकास व नवाचार को किया शोकेस किया जा रहा है। कृषि, डेयरी, खाद्य प्रसंस्करण से जुड़े उपकरण व कृषि सेवाओं और प्रौद्योगिकी से जुड़ी अन्य सेवाओं इस प्रदर्शनी में 250 से ज्यादा प्रदर्शक व 1 लाख से अधिक कृषक और आगंतुक कार्यक्रम में उपस्थिति दर्ज कराएंगे। कृषि भारत का आयोजन सीआईआई द्वारा किया जा रहा है जो विश्व स्तरीय कृषि प्रौद्योगिकी प्रगति के प्रदर्शन के लिए राज्य तथा राष्ट्रीय पवेलियन के तौर पर कार्य करेगा प्रदेश वासियों को दीं शुभकामनाएं, सीआईआई का जताया आभार 4 दिनी कृषि भारत कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सीएम योगी ने प्रदेश वासियों को श्री गुरु नानक देव जी के 555वें प्रकाश पर्व, कार्तिक पूर्णिमा और धरती आबा और जनजातीय गौरव के प्रतीक भगवान बिरसा मुंडा के 150वें जन्मदिवस पर शुभकामनाएं दीं। सीएम योगी ने सीआईआई का धन्यवाद करते हुए कहा कि वर्ष 2000 से सीआईआई एग्रोटेक का भारत में आयोजन कर रहा है। पहली बार यह आयोजन चंडीगढ़ से हटकर उत्तर प्रदेश में आयोजित हो रहा है जो कि काफी मायने रखता है। उत्तर प्रदेश में सीआईआई के साथ मिलकर नीदरलैंड्स पार्टनर कंट्री के रूप में और ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूगांडा, स्पेन, यूके जैसे देशों की सहभागिता के साथ ही कृषि से जुड़े हुए एक्सपर्ट्स व स्टेकहोल्डर्स भी इस आयोजन में हिस्सा ले रहे हैं।

अयोध्या-लखनऊ हाईवे पर हुआ भीषण सड़क हादसा.03 की मौत, 17 घायल

प्रात : किरण, संवाददाता

लखनऊ,। शुक्रवार तड़के अयोध्या-लखनऊ राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक दर्दनाक सड़क हादसे में मेदांता अस्पताल के लैब टेक्नीशियन और दो युवतियों सहित तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 17 अन्य घायल हो गए। सड़क हादसा तब हुआ जबकि श्रद्धालु कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लखनऊ से अयोध्या दर्शन के लिए जा रहे थे। हादसे के कारण हाईवे पर लंबा जाम लग गया, वाहनों को हटाया गया और करीब एक घंटे बाद ही जाम खुल सका। सड़क दुर्घटना राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 27 पर शुक्रवार सुबह पांच बजे के करीब भेलसर चौकी के पास नवीन मंडी कुढासादात में हुआ। तेज रफ्तार से अयोध्या की ओर मुड़ रहे एक ट्रक से एक ट्रैवलर की टक्कर हो गई। इस ट्रैवलर में 15 लोग घायल हुए हैं, जिनमें से दो की हालत गंभीर बताई गई है और उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। हादसे के दौरान एक कार भी ट्रक और ट्रैवलर से टकरा गई, जिसमें सवार तीन लोगों की मौके पर ही मृत्यु हो गई। भेलसर चौकी प्रभारी मनीष सिंह के अनुसार, कार में चार युवतियों सहित पांच लोग सवार थे, जो सभी मेदांता अस्पताल में कार्यरत थे। मृतकों की पहचान लैब टेक्नीशियन डॉ. मोहम्मद हुसैन, रचना, और उपासना सिंह के रूप में हुई है। कार में सवार अन्य दो, नीतू और स्नेहा, गंभीर रूप से घायल हैं और उनका इलाज मेडिकल कॉलेज में चल रहा है। ट्रैवलर में सवार घायल यात्रियों को प्राथमिक उपचार के बाद उनकी यात्रा के लिए रवाना किया गया। दुर्घटना के कारण हाईवे पर भीषण जाम लग गया, जिसे प्रशासन ने क्रेन की सहायता से वाहनों को हटाकर करीब एक घंटे बाद खुलवाया।

योगी आदित्यनाथ ने बिरसा मुंडा की जयंती पर उन्हें दी श्रद्धांजलि

प्रात : किरण, संवाददाता

लखनऊ, । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को आदिवासी महापुरुष और क्रांतिकारी बिरसा मुंडा को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने झारखंड के लोगों को राज्य के स्थापना दिवस के अवसर पर बधाई भी दी। योगी आदित्यनाथ ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, स्वाधीनता संग्राम के अमर महानायक, अरण्य संस्कृति और जनजातीय अस्मिता के उन्नायक, मातृभूमि और जल-जंगल-जमीन की रक्षा हेतु संघर्ष की सीख देने वाले महान क्रांतिवीर धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन ! माँ भारती की सेवा, सम्मान और रक्षा हेतु समर्पित महान जनजातीय विभूतियों के पावन स्मरण दिवस जनजातीय गौरव दिवस की प्रदेश वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं ! जय जोहारङ्क। झारखंड के लोगों को शुभकामनाएं देते हुए आदित्यनाथ ने कहा, प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण भगवान बिरसा मुंडा की महान तपोभूमि, वीर बलिदानियों की पावन धरा एवं आध्यात्मिक व ऐतिहासिक धरोहरों की अतुल्य वसुधा झारखण्ड राज्य के स्थापना दिवस की झारखंड वासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं! जय जोहारङ्क। सरकार ने 2021 में मुंडा की जयंती को ह्यजनजातीय गौरव दिवसह्ल के तौर पर मनाने की घोषणा की थी। मुंडा का जन्म 1875 में अविभाजित बिहार के आदिवासी क्षेत्र उलिहातू में हुआ था।

मातृभूमि के प्रति त्याग, निष्ठा और वीरता की प्रेरणा का स्रोत है जनजातीय समुदाय : योगी

प्रात : किरण, संवाददाता

लखनऊ,। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनजातीय समाज की गौरवपूर्ण संस्कृति और उनकी मातृभूमि के प्रति अपार निष्ठा को सम्मान देते हुए भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में जनजातीय गौरव दिवस पर अंतर्राष्ट्रीय जनजातीय भागीदारी उत्सव का शुभारंभ किया। महोत्सव लखनऊ के गोमती नगर स्थित संगीत नाटक अकादमी में 15 से 20 नवंबर तक आयोजित किया जा रहा है, जिसमें भारत के 22 राज्यों के साथ-साथ स्लोवाकिया और वियतनाम से भी कलाकार शामिल हो रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनजातीय समुदाय के मातृभूमि के प्रति त्याग, निष्ठा और वीरता को प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज न केवल भारत का मूल संप्रदाय है, बल्कि यह समुदाय मातृभूमि के प्रति उच्च भाव से प्रेरित होकर देश की सेवा में सदैव तत्पर रहा है। अपने समुदाय के अधिकारों की रक्षा और स्वाधीनता के लिए भगवान बिरसा मुंडा ने किया संघर्ष कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि जब देश पर विदेशी सत्ता का शिकंजा था, तब भगवान बिरसा मुंडा ने अपने समुदाय के अधिकारों की रक्षा और स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया। उन्होंने 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्णय का स्वागत करते हुए कहा कि यह भगवान बिरसा मुंडा के बलिदान को देशभर में सम्मान देने का महत्वपूर्ण कदम है। सीएम योगी ने बताया कि इस उत्सव के माध्यम से देश और प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों से आए जनजातीय समुदाय के लोग अपनी कला और परंपरा को प्रस्तुत करेंगे। यह महोत्सव जनजातीय समाज के गौरवपूर्ण इतिहास, संस्कृति और उनके संरक्षण की दिशा में एक अनूठा प्रयास है। जनजातीय समाज की सशक्तीकरण के लिए सदैव तत्पर है डबल इंजन की सरकार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनजातीय समाज के सशक्तीकरण की दिशा में अपनी सरकार के प्रयासों पर जोर देते हुए कहा कि 2017 में प्रदेश में सरकार बनने के बाद उन्होंने जनजातीय समुदाय की आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी, क्योंकि पिछली सरकारों में यह समाज विभिन्न योजनाओं के लाभ से वंचित था। सीएम योगी ने जनजातीय समुदाय को विभिन्न सरकारी योजनाओं से जोड़ने के प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा,थारू, कोल, चेरु, गोंड, बुक्सा जैसे जनजातीय समुदायों के लिए ।

गाजियाबाद में बच्चों को स्कूल लेकर जा रही बस बनी आग का गोला, लोगों की सतर्कता से बची छात्रों की जान

प्रात : किरण, संवाददाता

गाजियाबाद, । बच्चों को लेकर जा रही दिल्ली के निजी स्कूल की बस में कौशांबी थाने के पीछे सुबह करीब साढ़े सात बजे अचानक आग लग गई। बस के पीछे की तरफ से लगी आग कुछ ही पलों में आगे तक पहुंच गई। राहगीरों ने बस को आग का गोला बनता देखा तो दौड़कर मदद के लिए आए।

राहगीरों ने ही बच्चों को जलती बस से सकुशल बाहर निकाला।

इसी बीच ड्राइवर बस और बच्चों को छोड़कर भाग गया।

राहगीरों की सूचना पर ही दमकल की टीम पहुंची। दमकलकर्मियों ने बताया कि बस में आग की लपटें उठ रही थीं।

आग भीषण रूप ले चुकी थी।

इसे दो फायर टेंडर से बुझाने में आधा घंटा लगा।

इससे पहले ही राहगीरों ने बच्चों को बाहर निकाल लिया था।

बच्चे बुरी तरह से डरे हुए थे।

उन्होंने राहगीरों के मोबाइल फोन से परिजनों से संपर्क किया।

परिजनों की सूचना पर स्कूल ने दूसरी बस भेज दी।

बच्चे उस बस में सवार होकर चले गए।

मौके पर मौजूद लोगों का कहना था।

कि श्री श्री रेजिडेंसी होटल के पास उन्होंने बस में आग लगी देखी।

यह देखकर उन्होंने बस को रुकवाया।

ड्राइवर और उसका एक सहयोगी नीचे उतर आए।

उन दोनों ने शुरू में बच्चों को बाहर निकालने में मदद की लेकिन जैसे ही वहां भीड़ जमा होने लगी, दोनों भाग गए।

हाकुंभ 2025 को जीरो फायर इंसिडेंट जोन बनाने के लिए योगी सरकार की व्यापक तैयारी

- 2019 कुंभ की तुलना में महाकुंभ में कहीं ज्यादा मैनपावर और व्हीकल्स को किया गया डेप्लॉय
- 2 हजार से अधिक कर्मी आग से निपटने को रहेंगे मुस्तैद, 350 से ज्यादा व्हीकल्स होंगे उपयोग

प्रात : किरण, संवाददाता

प्रयागराज,। महाकुंभ 2025 को श्रद्धालुओं के लिए हर तरह से सुरक्षित किए जाने को लेकर योगी सरकार ने व्यापक तैयारियां की हैं। महाकुंभ के दौरान आग की घटनाओं पर काबू पाने के लिए मैनपावर और स्पेशल फायर व्हीकल्स की संख्या में भारी वृद्धि की गई है। वहीं, अत्याधुनिक डिवाइसेज को भी तैनात किए जाने की योजना है। प्रत्येक सेक्टर में दमकल कर्मियों की ड्यूटी लगाई जा रही है। आग की घटनाओं की मॉनीटरिंग के लिए एआई से लैस फायर डिटेक्शन कैमरों को इंस्टॉल किया गया है। वहीं, रिस्पॉन्स टाइम को भी महज 2 मिनट का रखा गया है, ताकि किसी तरह की घटना पर मिनटों में काबू पाया जा सके। सरकार का पूरा प्रयास यही है कि इस बार का महाकुंभ पूरी तरह जीरो फायर इंसिडेंट के रूप में संपन्न हो और अग्निशमन विभाग की ओर से इसी दिशा में काम किया जा रहा है। अखाड़ों में भी लगेंगे 5 हजार एक्सटींगुशर प्रयागराज के मुख्य अग्निशमन अधिकारी और महाकुंभ के नोडल अधिकारी प्रमोद शर्मा ने बताया कि इस बार महाकुंभ को जीरो फायर इंसिडेंट बनाने का पूरा प्रयास होगा। इसके लिए व्यापक तैयारी की गई है। इसके लिए एडवांस रेस्क्यू टेंडर तैनात किए जा रहे हैं। 200 स्पेशल ट्रेन्ड रेस्क्यू ग्रुप को तैनात किया जा रहा है। वहीं, अखाड़ों में आग की घटनाओं को काबू करने के लिए 5000 स्पेशल फायर एक्स्टींगुशर प्रदान किए जा रहे हैं। यही नहीं, मेले में बड़ी संख्या में एआई लाइसेंस वाले फायर डिटेक्शन कैमरों को भी इंस्टॉल किया जा रहा है। ये कैमरे भी पहली बार उपयोग में लाए जा रहे हैं जो आग की घटनाओं पर नजर रखेंगे और यदि कहीं इस तरह की घटना होती है तो तत्काल कंट्रोल रूम के माध्यम से चंद सेकेंड्स में फायर स्टेशन को सूचना मिल सकेगी। सूचना मिलते ही दो मिनट के अंदर दमकल की गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंचेंगी और आग पर काबू पाने का प्रयास करेंगी। उन्होंने बताया कि 2019 कुंभ की तुलना में इस बार अधिक मैनपावर और अधिक व्हीकल्स को डेप्लॉय किया जा रहा है। 2019 में जहां 43 टेंपरेरी फायर स्टेशन बनाए गए थे, वहीं 2025 महाकुंभ में 50 टेंपरेरी फायर स्टेशन बनाए जा रहे हैं। इसी तरह 2019 के 15 टेंपरेरी फायर पोस्ट की जगह इस बार 20 टेंपरेरी फायर पोस्ट बनाई जा रही हैं। 43 फायर वॉच टॉवर की तुलना में इस बार 50 फायर वॉच टॉवर होंगे, जबकि 4200 की जगह 7000 से अधिक फायर हाइड्रेंट्स लगाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त 75 की जगह इस बार 150 से ज्यादा फायर रिजर्व वाटर टैंक्स को उपयोग किया जाएगा। मैनपावर की बात करें तो 2019 में 1551 कर्मियों को यहां डेप्लॉय किया गया था, जबकि इस बार यह संख्या बढ़कर 2071 कर दी गई है। इसी तरह 2019 में कुल 166 व्हीकल्स का डेप्लॉयमेंट था तो इस बार यह संख्या लगभग दोगुनी बढ़कर 351 हो गई है। अत्याधुनिक उपकरणों का होगा उपयोग 2013 में कुल 612 फायर इंसिडेंट हुए थे, जहां 6 लोगों की जान गई थी और 15 बर्न इंजरीज हुई थीं तो वहीं 2019 में योगी सरकार ने कुंभ के दौरान चाक चौबंद प्रबंध किए जिससे पूरे कुंभ के दौरान 55 फायर इंसिडेंट्स के बावजूद न ही कोई बर्न इंजरी हुई और न ही किसी की जान गई। इससे भी आगे बढ़कर 2025 महाकुंभ में योगी सरकार अधिक मैनपावर, अधिक गाड़ियां और अधिक सतर्कता बरतते हुए फायर इंसिडेंट्स की संख्या को भी जीरो करने का प्रयास कर रही है। इसके लिए अत्याधुनिक डिवाइसेज इस्तेमाल किए जा रहे हैं। कई ऐसे डिवाइसेज भी हैं जो पहली बार यहां उपयोग में लाए जाएंगे। इसके साथ ही, महाकुंभ में तैनात सभी दमकल कर्मियों की स्पेशल ट्रेनिंग भी कराई गई है। सभी कोर ग्रुप्स के प्रैक्टिकल सेशन की भी व्यवस्था की गई है। एक्सटर्नल आडिट के लिए उत्तराखंड फायर एंड इमरजेंसी सर्विस के साथ एमओयू किया गया है। वहीं नेशनल फायर सर्विस कॉलेज नागपुर के साथ भी एमओयू किया गया है।

व्यापारियों को तमंचे के बल पर बंधक बनाकर पशु लूटे

मुरादनगर,। ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे पर गुरुवार रात गांव मिल्क चाकरपुर के पास बदमाशों ने कैंटर गाड़ी सवार तीन व्यापारियों को तमंचे के बल पर बंधक बनाकर तीन भैंस लूट ली। बदमाश भैसों को दूसरी गाड़ी में लेकर फरार हो गए। पुलिस ने केस दर्ज कर बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है। हरियाणा के गुरुग्राम के थाना पटोटी निवासी हाकमीन पशुओं की खरीद फरोख्त करते हैं। वह कैंटर गाड़ी से गुरुवार रात तीन भैंस मेरठ की अठसैनी पैंठ में बेचने जा रहे थे। उनके साथ भाई और चालक मौजूद थे। जब वह ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे पर गांव मिल्क चाकरपुर के पास पहुंचे तो पीछे से एक गाड़ी ने ओवरटेक कर कैंटर को रोक लिया। इसके बाद चार लोगों ने हाकमीन, उनके भाई और चालक को तमंचे के बल पर तीनों के हाथ-पैर बांधकर एक्सप्रेसवे से नीचे उतारकर झाड़ियों में फेंक दिया। तीन घंटे बाद किसी तरह बंधकमुक्त होकर तीनों एक्सप्रेसवे पर आए तो उनकी गाड़ी तो खड़ी थी, लेकिन तीन भैंस गायब थी। हाकमीन ने बताया कि भैंसों की कीमत दो लाख रुपये से अधिक थी। एसीपी मसूरी सर्किल सिद्वार्थ गौतम ने बताया कि एक्सप्रेसवे पर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की जांच कर बदमाशों की तलाश की जा रही है।

गाजियाबाद में 30 लाख रुपये की धोखाधड़ी और जान से मारने की धमकी का मुकदमा दर्ज कराया

प्रात : किरण, संवाददाता

गाजियाबाद, ।शहीदनगर निवासी बाबू खान ने 30 लाख रुपये की धोखाधड़ी और मारने की धमकी के आरोप में तीन सगे भाइयों पर शालीमार गार्डन थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। आरोपियों ने पीड़ित से 2.11 करोड़ रुपये में सौदा करके 30 लाख रुपये का बयाना लिया और उसके बाद रजिस्ट्री से इन्कार कर दिया। साथ ही पीड़ित को जान से मारने की धमकी भी दी। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। बाबू खान ने बताया कि शहीदनगर निवासी असलम मलिक, अकरम मलिक और आरिफ मलिक ने उनसे दो करोड़ 11 लाख 25 हजार रुपये में एक प्लॉट का सौदा किया था। सौदे के समय बाबू खान ने 30 लाख रुपये नकद दिए थे। 10 जुलाई 2024 को रजिस्ट्री की बात तय हुई, बाकी भुगतान उसी दिन देना था। पीड़ित के अनुसार रजिस्ट्री के दिन वह रजिस्ट्री कार्यालय पहुंचे लेकिन तीनों भाई वहां नहीं आए। जब उन्होंने फोन करके जानकारी की तो आरोपियों ने रुपये हड़पने की बात कहते हुए रजिस्ट्री से इनकार कर दिया। पीड़ित ने जान से मारने की धमकी मिलने का भी आरोप लगाया है। एसीपी रजनीश उपाध्याय ने बताया कि तीनों आरोपियों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज किया गया है। जांच में जो भी तथ्य सामने आएंगे उनके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

ट्रांसहिंडन के कई इलाकों में दूषित पानी की आपूर्ति

प्रात : किरण, संवाददाता

ट्रांस हिंडन,। ट्रांसहिंडन के कई इलाकों में शुक्रवार को दूषित पानी की आपूर्ति हुई। इससे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। इन इलाकों में पानी की टीडीएस 750 से 1100 के बीच पाया गया है। लोगों को आरोप है कि पानी की अधिक टीडीएस आने से बीमारी फैल रही है। नगर निगम में शिकायत के बाद भी कई कार्रवाई नहीं की गई है। वैशाली, वसुंधरा, कौशांबी और डेल्टा कॉलोनी में पानी की दूषित पानी की आपूर्ति होने से लोगों को काफी दिक्कत हुई। लोगों का आरोप है कि नगर निगम में कई बार शिकायत के बाद भी पानी की गुणवत्ता कम नहीं हो रही है। इससे लोग बोतल बंद पानी पर निर्भर हो गए हैं, जिससे जेब पर अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है। वैशाली सेक्टर तीन निवासी मनोज ठाकुर ने बताया कि पानी में बदबू और अजीब स्वाद भी महसूस हो रहा है। यह समस्या पिछले पिछले दो सप्ताह से बनी हुई है। इससे बीमारी फैल रही है। नगर में कई बार शिकायत की मगर अधिकारी भी आश्वासन देकर टाल देते है। समस्या जस की तस बनी हुई है। वसुंधरा सेक्टर एक निवासी रीना शर्मा ने बताया कि घर के पानी के फिल्टर को बार-बार बदलवाना पड़ रहा है, जिससे अतिरिक्त खर्च हो रहा है। कई बार फिल्टर बदलवा चुके है। पिछले दो तीन सप्ताह से लगातार पानी की टीडीएस बढ़ता जा रहा है। टीडीएस 750 से 1100 तक पुहंच जाता है। इससे पानी की नहाने में प्रयोग के करने से तत्वा संबंधी बीमारी फैल रही है। इससे लोगों को खुजली, जलन और बाल झड़ने की समस्या बढ़ गई है। इन इलाकों में हुई कम प्रेशर पानी की आपूति इंदिरापुरम के कई इलाकों में कम प्रेशर पानी की आपूर्ति हुई। इससे लोगों को नलकूप व अन्य वैकल्पिक साधनों से पानी की आपूर्ति करनी पड़ी। लोगों को आरोप है कि एक से दो मंजिल तक पानी पहुंचने में अधिक दिक्कत नहीं हो रही हैं। मगर उससे ऊपर पानी पहुंचने में बहुत परेशानी हो रही है। पानी की टंकी नहीं भरने के कारम जल्द पानी खत्म हो जाता है।

सीएम के रोड शो को लेकर आठ थाना क्षेत्र रेड जोन घोषित

प्रात : किरण, संवाददाता

गाजियाबाद, । विधानसभा उपचुनाव के लिए शनिवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ विजयनगर क्षेत्र में रोड शो करेंगे। यह रोड शो चाणक्य चौक से शुरू होकर डीएवी स्कूल पर संपन्न होगा। 1200 मीटर के रोड शो के लिए सुरक्षा के खास इंतजाम किए जा रहे हैं। एडीसीपी दिनेश कुमार पी. की ओर से सीएम के रोड शो के मद्देनजर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा-163 लागू की गई है। कानून एवं शांति व्यवस्था के लिए गाजियाबाद कमिश्नरेट के आठ थानाक्षेत्रों को रेड जोन घोषित किया गया है। मुख्यमंत्री का कार्यक्रम संपन्न होने तक रेड जोन में हर तरह की उड़ने वाली वस्तुएं प्रतिबंधित रहेंगी। इन थानाक्षेत्रों को बनाया गया रेड जोन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को तमाम असामाजिक तत्वों, आतंकी और राष्ट्रविरोधी संगठनों से जान का खतरा होने के चलते कोतवाली सदर, विजयनगर, इंदिरापुरम, कौशांबी, साहिबाबाद, शालीमार गार्डन, नंदग्राम और सिहानीगेट थानाक्षेत्र को रेड जोन घोषित किया गया है। इन सभी थानाक्षेत्रों में कमिश्नरेट पुलिस ने बृहस्पतिवार से हीह ड्रोन, यूएवी, पैराग्लाइडर, हॉट बैलून और अन्य उड़ने वाली वस्तुओं को प्रतिबंधित कर दिया है। बीएनएस- 163 के अंतर्गत और भी कड़े प्रतिबंध लागू किए गए हैं। क्या कड़े प्रतिबंध किए गए हैं लागू कार्यकम के आयोजक, मीडियाकर्मी या कोई व्यक्ति/ संगठन आठ थानाक्षेत्र में घोषित किए गए रेड जोन में फोटोग्राफी या वीडियोग्राफी करने के लिए उड़ने वाली वस्तु का प्रयोग करना चाहते हैं तो संबंधित डीसीपी कार्यालय से अनुमति प्राप्त करनी होगी। बीएनएस-163 के उल्लंघन के फलस्वरूप दाखिल किये जाने वाला परिवाद संबंधित क्षेत्रीय कार्यपालक मजिस्ट्रेट द्वारा दायर किया जाएगा।

बीएनएच- 163 का आदेश कमिश्नरेट गाजियाबाद की संपूर्ण सीमा में तत्काल प्रमाव से लागू किया गया है। इस आदेश का पालन कराने की जिम्मेदारी कमिश्नरेट गाजियाबाद पुलिस की होगी।

आदेश के तहत लागू निषेधाज्ञाएं शनिवार को मुख्यमंत्री का कार्यक्रम संपन्न होने तक लागू रहेंगी। कमिश्नरेट पुलिस की एडवाइजरी सीएम रोड शो के दौरान कैमरा, दूरबीन, रिमोट कंट्रोल कार की, छाता, हैंड बैग, ब्रीफकेस, ट्रांजिस्टर्स, डिजिटल डायरी, पाम टॉप, टिफिन बॉक्स, थर्मस, पानी की बोतल, पाउच, किसी मी प्रकार का द्रव,लंच बॉक्स, छड़ी, बैग, परफयूम, पेय/खाद्य पदार्थ, लेजर लाइट, ब्लेड, रेजर, कैंची, तार, शस्त्र, तलवार, धारदार हथियार आदि लेकर न आएं। रोड शो के दौरान जनता का कोई भी व्यक्ति काले कपड़े एवं काला हैट/टोपी पहनकर नहीं आयेगा। अपने साथ फ्रेम किये हुए पोस्टर, बैनर, छायाचित्र इत्यादि लेकर न आयें। अपने साथ फूल माला, गुलदस्ते, स्मृति चिन्ह इत्यादि लेकर न आयें। दीर्घा में प्रत्येक व्यक्ति को अपने साथ केवल एक मोबाइल फोन ले जा सकेगा। सिगरेट, माचिस, लाइटर, आतिशबाजी इत्यादि किसी प्रकार का ज्वलनशील पदार्थ लेकर न आएं।

रोड शो के दौरान दाहिनी ओर की सड़क पूरी तरह से वीवीआईपी काफिले के लिए आरक्षित रहेगी।

सड़क के बाईं ओर बनी दर्शक दीर्घा में ही नागरिकों के खड़े होने की व्यवस्था है। रोड शो के दौरान किसी भी व्यकिति को वीवीआईपी के समानान्तर चलने /दौड़ने की अनुमति नहीं होगी।

रोड शो के दौरान अपने-अपने सुरक्षा घेरे /दर्शक दीर्घा में बने रहें एवं वीवीआईपी के साथ-साथ आगे की ओर बढ़ने का प्रयास न करें।

रोहित शेट्टी ने अजय देवगन को बताया बॉलीवुड का सबसे सुरक्षित अभिनेता

दीवाली पर आई रोहित शेट्टी निर्देशित फिल्म सिंघम अगेन बॉक्स ऑफिस पर कोई बड़ा कमाल नहीं कर सकी। अजय देवगन की स्टार पावर भी इस फिल्म को बचाने में कामयाब नहीं हुई। हाल ही में इस फिल्म को लेकर और अजय देवगन से जुड़ी कुछ बातें रोहित शेट्टी ने साझा की।

अजय देवगन रोहित शेट्टी की कई फिल्मों का हिस्सा रहे हैं। खासकर सिंघम सीरीज की फिल्मों में ज्यादातर अजय ही मुख्य भूमिका में रहे। साथ ही यह दोनों गहरे दोस्त भी हैं। हाल ही में रोहित ने एक इंटरव्यू में बताया कि अजय कमाल के एक्टर होने के साथ बहुत सिक्योर भी हैं। उन्हें अपने सह-कलाकारों से बतौर अभिनेता कभी भी असुरक्षा का भाव महसूस नहीं होता है।

अजय को रोल की लंबाई से मतलब नहीं होता

रोहित शेट्टी ने हालिया एक इंटरव्यू में बताया कि अजय देवगन को फिल्म में अपने रोल की लंबाई से ज्यादा फर्क नहीं पड़ता है। वह एक सुरक्षित अभिनेता हैं। रोहित कहते हैं, हमने साथ में बहुत सी फिल्में की हैं। अजय ने कभी सवाल नहीं किया कि उन्हें फिल्म में किस तरह से पेश किया जा रहा है या फिर फिल्म में कितने कलाकार हैं। वह बस अपना काम अच्छे से करते हैं, उन्हें फिल्म की लंबाई की फिक्र कभी नहीं रही।

सिंघम सीरीज को बताया कल्ट

रोहित ने अजय देवगन के अलावा सिंघम सीरीज पर भी बात की। उन्होंने कहा कि हमें कभी नहीं लगा कि यह एक कल्ट फिल्म बन जाएगी और बॉक्स ऑफिस पर शानदार बिजनेस करेगी। रोहित की बाकी सिंघम सीरीज की फिल्मों ने जरूर अच्छी कमाई की, लेकिन इस बार सिंघम अगेन को मनचाही सफलता नहीं मिली। सिंघम अगेन का बॉक्स ऑफिस पर बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं रहा।

अजय और रोहित ने की साथ ये फिल्में

सिंघम सीरीज के अलावा कई हिट फिल्में अजय देवगन और रोहित शेट्टी ने साथ की हैं। इसमें गोलमाल सीरीज और बोल बच्चन और ऑल द बेस्ट जैसी फिल्में शामिल हैं। गोलमाल में तो रोहित ने अजय से गजब की कॉमेडी करवाई है, जबकि उनकी छवि बॉलीवुड में एक गंभीर किरदार निभाने वाले एक्टर की रही है।

कोरियाई सिनेमा की फैन निकलीं दिशा पाटनी कंटेंट को लेकर कहा

बॉलीवुड और तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में किस्मत आजमाने के बाद अब दिशा पटानी तमिल सिनेमा में अपना डेब्यू करने जा रही हैं। उनकी पहली फिल्म का नाम कंगुवा है, जिसमें सूर्या मुख्य भूमिका में नजर आने वाले हैं। हाल ही में एक बातचीत में दिशा ने जापानी एनीमे और कोरियाई संस्कृति के प्रति अपनी भावनाएं खुलकर व्यक्त कीं। सोशल मीडिया पर दिखता है कोरियाई प्रेम

सोशल मीडिया पर दिशा को फॉलो करने वालों को यह बात अच्छी तरह से पता है कि उन्हें एनीमे (फिल्म और टेलीविजन एनीमेशन की जापानी शैली) कितना पसंद है। उन्हें अक्सर वीकएंड पर एनीमे देखते हुए और कोरियाई पॉप बैंड ईएक्सओ के काई के गानों पर वर्कआउट करते हुए देखा जाता है।

एनीमे को लेकर कही यह बात

दिशा को एनीमे की भावनात्मकता काफी आकर्षित करती है, लेकिन उनका मानना है कि दक्षिण कोरिया से आने वाले कंटेंट बॉलीवुड से बहुत प्रेरित होता है। उन्होंने कहा, मैं बचपन में एनीमे और ड्रैगनबॉल्ज जैसी चीजें देखते हुए बड़ी हुई हूं। एनीमे मुझे रोमांचित करता है। हालांकि, अधिकांश एनीमे में भावनात्मक जुड़ाव अवास्तविक सा लगता है।

पसंद है कोरिया की संस्कृति

उन्होंने कहा, कोरिया फिल्म निर्माण, सीरीज और रोमांस के मामले में बहुत बढ़िया है। मुझे लगता है कि जब आप इसे देखते हैं तो लगता है कि इसमें बहुत कुछ बॉलीवुड से लिया गया है। मुझे उनका संगीत, फैशन, संस्कृति और इससे जुड़ी हर चीज बहुत पसंद है।

इस फिल्म में दिखी थीं दिशा

वर्क फ्रंट की बात करें तो हाल ही में दिशा की फिल्म कल्कि 2898 एडी रिलीज हुई थी। नाग अश्विन के निर्देशन में बनी इस फिल्म में प्रभास, अमिताभ बच्चन और दीपिका पादुकोण मुख्य भूमिका में थे। बॉक्स ऑफिस पर यह फिल्म ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी। इस फिल्म के बाद नाग अश्विन जल्द ही इस फिल्म के सीक्वल की तैयारी शुरू करने जा रहे हैं।

पुष्पा 2 के गाने के लिए श्रीलीला को मिली दो करोड़ की फीस

दक्षिण भारत की खूबसूरत अभिनेत्री श्रीलीला फिल्म पुष्पा 2 की वजह से चर्चा में हैं। इस फिल्म में वह अल्लू अर्जुन के साथ एक गाने में नजर आने वाली हैं। फिल्म के निर्माता इस आइटम सॉन्ग से फिल्म में चार चांद लगाने की पूरी कोशिश में हैं।

एक रिपोर्ट के अनुसार इस फिल्म के लिए श्रीलीला को दो करोड़ रुपये का भुगतान किया जाएगा। हालांकि, श्रीलीला की यह फीस उनकी पिछली रिलीज गुंटूर कारम की तुलना में काफी कम है। महेश बाबू अभिनीत फिल्म के लिए उन्हें कथित तौर पर चार करोड़ रुपये मिले थे।

सामंथा ने लिए थे इतने करोड़

श्रीलीला की पुष्पा 2 की फीस की तुलना फिल्म के पहले भाग में नजर आ चुकी सामंथा रुथ प्रभु से करें तो यह 60 फीसदी कम है। पुष्पा पार्ट 1 में सामंथा आइटम गाने ऊ अंतवा में दिखाई दी थीं, जिसके लिए उन्हें कथित तौर पर पांच करोड़ रुपये का भुगतान किया गया था।

श्रद्धा को भी मिला था ऑफर

कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में ऐसे भी दावे किए गए थे कि बॉलीवुड अभिनेत्री श्रद्धा कपूर को शुरू में इस आइटम सॉन्ग का प्रस्ताव दिया गया था, लेकिन उन्होंने कथित तौर पर पांच करोड़ रुपये की मांग की थी। इसके बाद निर्माताओं ने श्रीलीला के नाम पर मुहर लगा दी थी। श्रीलीला को इस गाने में कास्ट किए जाने के फैसले पर अब तक लोगों की मिली-जुली प्रतिक्रिया आई है।

इस दिन रिलीज होगी पुष्पा 2

पुष्पा 2 की बात करें तो हाल ही में इस फिल्म को लेकर एक बड़ी जानकारी सामने आई थी। सोशल मीडिया के माध्यम से फिल्म के निर्माताओं ने बताया था कि इस फिल्म के ट्रेलर को बिहार की राजधानी पटना में 17 नवंबर 2024 को रिलीज किया जाएगा। फिल्म की स्टारकास्ट की बात करें तो इसमें अल्लू अर्जुन के साथ रशिमका मंदाना और फहद फाजिल एक बार फिर से नजर आने वाले हैं। सिनेमाघरों यह फिल्म 5 दिसंबर को दस्तक देगी।

सेंसर बोर्ड से पास हुई द साबरमती रिपोर्ट, विक्रांत मैसी ने बताई फिल्म में देरी की वजह

द साबरमती रिपोर्ट इस साल की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। विक्रांत मैसी एक बार फिर धीरज सरना की द

साबरमती रिपोर्ट के साथ बड़े पर्दे पर लौट रहे हैं। फिल्म का दर्शकों को भी बेसब्री से इंतजार है। फिल्म का ट्रेलर और इसके नए गाने जारी हो चुके हैं। ऐसे में अब फिल्म के बारे में नई जानकारी सामने आई है। द साबरमती रिपोर्ट ने अपनी सेंसर औपचारिकताएं भी पूरी कर ली हैं। अभिनेता विक्रांत मैसी ने पुष्टि की है कि उनकी आगामी फिल्म द साबरमती रिपोर्ट बिना किसी कट या संशोधन के केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) की जांच से गुजर गई है। अभिनेता ने बताया कि फिल्म बिना किसी कट के पास हो गई है। फिल्म को यूए सर्टिफिकेट मिला है। इससे पहले, ऐसी खबरें आई थीं कि सीबीएफसी द्वारा सुझाए गए कट्स के कारण फिल्म में देरी हुई थी, और टीम को कुछ हिस्सों को फिर से शूट करना पड़ा था।

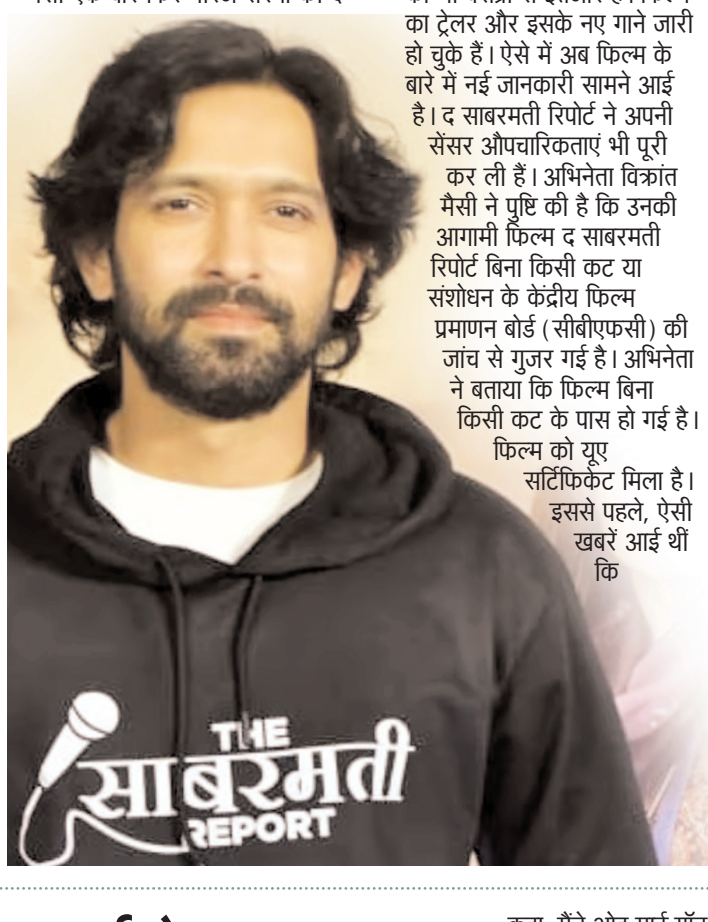

इस वजह से फिल्म में हुई देरी हालांकि, विक्रांत ने स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा, यह गलत सूचना है। हमने सीन को फिर से शूट किया, क्योंकि फिल्म में देरी हुई। हमें एडिटिंग में बैठने और खुद को बेहतर बनाने का फायदा मिला, इसलिए दो दिन का रीशूट, सेंसर की वजह से नहीं था। उन्होंने आगे कहा, सेंसर की बात करें तो यह हर फिल्म के साथ एक बहुत ही सामान्य प्रक्रिया है। आप फिल्म सबमिट करते हैं, फिर आपको फीडबैक मिलता है और अगर यह एक गंभीर मुद्दा है, तो वे कट्स की सिफारिश करते हैं।

सीबीएफसी ने दिए सुझाव

अभिनेता ने आगे कहा, मुझे नहीं लगता कि हमारी फिल्म में कट्स की सिफारिश की गई है। बस यहां-वहां छोटे-छोटे संवाद बदल गए हैं, ऐसा इसलिए भी है, क्योंकि आज के समय में लेखकों से ज्यादा, हमारे पास एक फिल्म से जुड़े वकील होते हैं। कुछ लोग आपके खिलाफ ही केस दर्ज कर देते हैं। उदाहरण के लिए सेक्टर 36 में हमारे पास 36 मुकदमे हैं, लेकिन यह काम की प्रकृति है, इसलिए आपको बहुत सावधान रहना होगा। सीबीएफसी ने किसी भी कट की सिफारिश नहीं की है, केवल सुझाव दिए गए हैं, जो एक बहुत ही सामान्य प्रक्रिया है।

भगवान परशुराम के रूप में नजर आएंगे विक्की कौशल, अगले साल नवंबर में शुरू होगी फिल्म की शूटिंग

विक्की कौशल एक के बाद एक फिल्म से खुद को साबित कर रहे हैं। हाल ही में उन्हें बैड न्यूज में तृप्ति डिमरी और एमी विर्क के साथ देखा गया। अभिनेता फिलहाल अपनी अगली फिल्म लव एंड वॉर की शूटिंग में व्यस्त हैं। संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित इस फिल्म में आलिया भट्ट और रणबीर कपूर भी हैं। अब, एक हालिया रिपोर्ट से पता चला है कि विक्की ने नई फिल्म के लिए दिनेश विजन के साथ हाथ मिलाया है। दिनेश विजन की इस फिल्म में विक्की कौशल भगवान परशुराम का किरदार निभाने वाले हैं। इस फिल्म की शूटिंग नवंबर 2025 में शुरू होगी।

दिनेश विजन की नई फिल्म का हिस्सा बने विक्की कौशल

मीडिया रिपोर्ट की मानें तो, विक्की कौशल भारतीय पौराणिक कथाओं की पृष्ठभूमि पर आधारित दिनेश विजन की फिल्म का हिस्सा बन गए हैं। जानकारी के अनुसार, लव एंड वॉर के बाद अभिनेता दिनेश विजान के साथ इस फिल्म पर काम शुरू करेंगे। खबरों की मानें तो विक्की कौशल एक मेगा बजट फीचर फिल्म करने की सोच रहे थे, इस दौरान दिनेश विजन ने अपनी स्क्रिप्ट को लेकर बात की। विक्की कौशल ऐसे में मना कैसे कर सकते थे। विक्की कौशल इससे पहले लव एंड वॉर के बाद इस फिल्म की तैयारी में लग जाएंगे, इस फिल्म को करने के लिए उन्होंने एक मिनट भी नहीं सोचा और हामी भर दी।

पौराणिक कथाओं पर आधारित होगी कहानी!

रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि यह भारतीय पौराणिक कथाओं की पृष्ठभूमि पर आधारित एक भव्य फीचर फिल्म होगी और विक्की इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। रिपोर्ट तो यह भी है कि फिल्म के लिए प्री-प्रोडक्शन का काम अगले साल नवंबर में शुरू होगा क्योंकि इस जॉनर की फिल्म के लिए एक निश्चित पैमाने की आवश्यकता होती है। हालांकि, इस फिल्म को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है।

अगले साल शुरू होगी शूटिंग!

रिपोर्ट में सूत्र के हवाले से कहा गया है, यह निस्संदेह मैडॉक और विक्की कौशल दोनों के लिए सबसे महत्वाकांक्षी फिल्म है। फिल्म को फ्लोर पर जाने से पहले 6 से 8 महीने से अधिक की तैयारी की आवश्यकता होती है इसलिए यह 2025 में शुरू होगी। दिनेश विजन छावा पर अत्यधिक आश्वस्त हैं, और फिल्म में विक्की के प्रदर्शन से प्रभावित हैं। अगली फिल्म छावा पर उनके विश्वास को दर्शाता है। हालांकि, रिपोर्ट पर अभी आधिकारिक मुहर लगना बाकी है।

विक्की कौशल-दिनेश विजन की तीसरी साझेदारी

अगर रिपोर्ट सच निकली तो यह विक्की कौशल और फिल्म निर्माता के बीच तीसरा सहयोग होगा। इससे पहले दोनों ने जरा हटके जरा बचके में काम किया और दोनों की दूसरी फिल्म छावा जल्द ही सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली है।

विक्की कौशल को सैन्य अधिकारियों के रूप में देखा जाएगा, और निर्देशक संजय लीला भंसाली ने व्यक्तिगत रूप से अभिनेताओं से वास्तविक सैनिकों की तरह दिखने के लिए अपने शारीरिक परिवर्तनों पर काम करने का अनुरोध किया है।

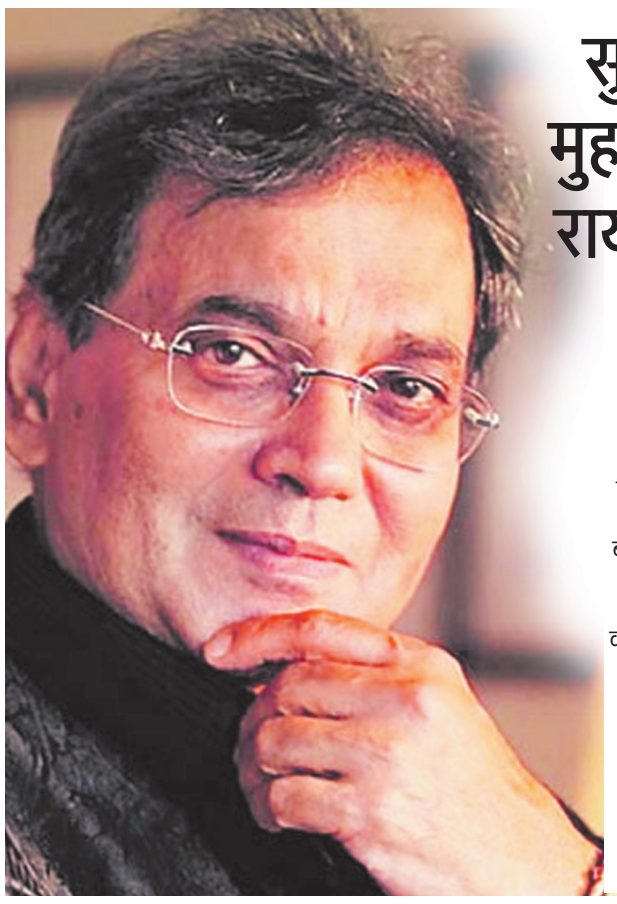

सुभाष घई ने लगाई ऐतराज 2 पर मुहर, ओएमजी के निर्देशक अमित राय की स्क्रिप्ट पर शुरु हुआ काम

अक्षय कुमार, प्रियंका चोपड़ा जोनस और करीना कपूर खान अभिनीत फिल्म ऐतराज ने 20 साल पूरे कर लिए। वहीं, अब प्रशंसकों के लिए खुशखबरी सामने आई है। ऐसा लगता है कि प्रशंसकों को अब इस फिल्म के सीक्वल भी देखने को मिल सकता है। दरअसल, निर्माता सुभाष घई ने इस फिल्म के सीक्वल के बारे में बात करते हुए कहा कि यह प्रक्रिया में है।

अमित राय के साथ जुड़े सुभाष

दरअसल, निर्माता सुभाष घई ने 2004 की फिल्म में प्रियंका चोपड़ा के बोल्ड और खूबसूरत अभिनय की प्रशंसा करते हुए एक पोस्ट शेयर की। उन्होंने उनके यादगार अभिनय की प्रशंसा करते हुए खुलासा किया कि वह इस भूमिका को करने में आशंकित थीं, फिर भी उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ इसे निभाया। उन्होंने उसी पोस्ट में आगे ऐतराज 2 की घोषणा की। अब, उन्होंने पुष्टि की है कि ऐतराज 2 वास्तव में बन रही है और उन्होंने निर्देशक अमित राय को शामिल कर लिया है। फिल्म ऐतराज से प्रियंका चोपड़ा की एक तस्वीर शेयर करते हुए सुभाष घई ने लिखा, बोल्ड और खूबसूरत प्रियंका चोपड़ा ने हिम्मत की और कर दिखाया। यही कारण है कि सिने प्रेमी आज 20 साल बाद भी ऐतराज में उनके अभिनय को नहीं भूल सकते हैं, जिसे मुक्ता आर्ट्स ने बनाया है। जब वह एक महत्वाकांक्षी महिला की भूमिका निभाने में बहुत आशंकित थीं, लेकिन उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ इसे निभाया। अब मुक्ता आर्ट्स 3 साल की कड़ी मेहनत और बेहतरीन स्क्रिप्ट के साथ ऐतराज 2 के लिए तैयार है।

अमित राय ने लिखी स्क्रिप्ट

अब हाल ही में एक साक्षात्कार में फिर सुभाष घई ने सीक्वल की पुष्टि की। उन्होंने कहा, मैंने ओह माई गॉड 2 के लेखक-निर्देशक अमित राय से एक शानदार स्क्रिप्ट सुनी है, जिसे अब ऐतराज 2 के रूप में लिखा गया है। हमें विभिन्न स्टूडियो से इतने सारे कॉल आ रहे हैं कि वे फिल्म बनाने में रुचि रखते हैं। और मुझे कहना होगा कि अमित के पास इस समय एक बड़ी हिट स्क्रिप्ट है। मुझे यह वाकई बहुत पसंद आई। ऐतराज में कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के मुद्दे को उठाया गया था। सीक्वल की अवधारणा के बारे में पूछे जाने पर सुभाष घई ने कहा कि यह विषय अमित राय का है। उन्होंने साझा किया कि अमित राय ने आज के यौन जीवन के बारे में एक और साहसिक मुद्दा लिखा है, जिसमें नए विषय और दृश्य शामिल होंगे।

कौन होगी फिल्म में अभिनेत्री?

सुभाष घई ने आगे बताया कि वे अब ऐतराज 2 की मुख्य नायिका को चुनने की प्रक्रिया में हैं। उन्होंने कहा, हमारे पास एक इच्छा सूची है, लेकिन देखते हैं कि किसे चुना जाता है। यह फिर से एक बोल्ड भूमिका होगी, जिसके लिए मुझे यकीन है कि अभिनेत्री को बहुत सारे पुरस्कार मिलेंगे, जैसा कि प्रियंका को मिले थे। साथ ही उन्होंने कहा कि ऐतराज का सीक्वल बेहतर होगा।

भेजा फ्राई से घर-घर में मशहूर हुई भैरवी गोस्वामी

भैरवी गोस्वामी अपना जन्मदिन मना रही हैं। भैरवी गोस्वामी मॉडल और टेलीविजन होस्ट। अभिनेत्री ने फिल्म भेजा फ्राई से फिल्मी करियर की शुरुआत की। भैरवी गोस्वामी ने दिल मांगे मोर चाय, कॉफी या मैं जैसे शो होस्ट किए हैं। भैरवी गोस्वामी सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। अभिनेत्री ने माई फ्रेंड गणेशा मिस्टर भट्टी ऑन छुट्टी जैसी फिल्मों में काम कर चुकी हैं।

13 साल बाद बोनस शेयर दे रही है कंपनी

नईदिल्ली। शक्ति पम्प्स ने बोनस शेयर के लिए रिकॉर्ड डेट का ऐलान कर दिया है। कंपनी एक शेयर पर 5 शेयर बोनस दे रही है। शक्ति पम्प्स 13 साल बाद बोनस शेयर दे रही है। बता दें, गुरुवार को कंपनी के शेयर बाजार बंद होने के समय पर 2 प्रतिशत से अधिक की तेजी के साथ 4482.75 रुपये के लेवल पर बंद हुआ था।

बाजार की सुस्ती में भी कमाल का रिटर्न दिए 5 स्टॉक

नईदिल्ली। शेयर बाजार में पिछले कुछ दिन निवेशकों के लिए काफी भारी रहे हैं। इस दौरान बाजार में भारी गिरावट देखने को मिली है। लेकिन बीते एक हफ्ते के दौरान बाजार में सुस्ती के बीच भी 5 कंपनियों ने कमाल कर दिया है।

संक्षिप्त समाचार

एसबीआई ने ग्राहकों को दिया झटका, अब लोन पर पहले के मुकाबले लगेगा ज्यादा ब्याज

नई दिल्ली, एजेंसी। अगर आप सार्वजनिक क्षेत्र के भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के ग्राहक हैं तो ये खबर आपके लिए है। दरअसल, एसबीआई ने अपनी कोष की सीमांत लागत आधारित ऋण दर में 0.05 प्रतिशत की बढ़ोतरी की घोषणा की है। बैंक की वेबसाइट के अनुसार एक साल की एमसीएलआर को 0.05 प्रतिशत बढ़ाकर नौ प्रतिशत कर दिया गया है। बता दें कि एक साल की एमसीएलआर दर से ही पर्सनल, ऑटो, होम लोन की दर तय होती है। एसबीआई ने तीन और छह महीने की एमसीएलआर में भी बढ़ोतरी की है। एक दिन, एक महीने, दो साल और तीन साल की अवधि की एमसीएलआर को कायम रखा गया है। बैंक के चेयरमैन सी एस शेट्टी ने कहा कि बैंक का 42 प्रतिशत लोन सेग्मेंट एमसीएलआर से जुड़ा है, जबकि शेष बाहरी बेंचमार्क पर आधारित है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया था कि बैंकिंग प्रणाली में जमा दरें अपने उच्चस्तर पर हैं। बता दें कि बैंक ने हाल ही में दो बार एमसीएलआर में बढ़ोतरी की है। वहीं, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा लगातार दसवीं बार अपनी नीतिगत दर रेपो को 6.5 प्रतिशत पर यथावत रखने के निर्णय लिया गया है। हालांकि, आने वाले महीनों में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद है। हाल ही में प्राइवेट सेक्टर के एचडीएफसी बैंक ने चुनिंदा मैच्योरिटी अवधि के कर्ज पर एमसीएलआर को 0.05 प्रतिशत बढ़ाया है। एक साल की अवधि के लिए मानक एमसीएलआर दर को 9.45 प्रतिशत पर बरकरार रखा गया है। हालांकि, एक दिन के लिए एमसीएलआर को 9.10 प्रतिशत से बढ़कर 9.15 प्रतिशत हो गई है, जबकि एक महीने की दर 0.05 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 9.20 प्रतिशत हो गई है। अन्य परिपक्वता अवधि वाले कर्ज के लिए दरों में कोई बदलाव नहीं किया गया है। नई दरें सात नवंबर, 2024 से प्रभावी हैं।

19 नवंबर को खुल रहा है सरकारी कंपनी का आईपीओ

नई दिल्ली, एजेंसी। एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी आईपीओ अगले हफ्ते खुल रहा है। कंपनी के आईपीओ का साइज 10,000 करोड़ रुपए का है। कंपनी का इश्यू पूरी तरह से फ्रेश शेयर पर आधारित रहेगा। कंपनी आईपीओ के जरिए 92.59 करोड़ फ्रेश शेयर जारी करेगी। एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी का आईपीओ 22 नवंबर तक खुला रहेगा। बता दें, एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी आईपीओ का प्राइस बैंड 102 रुपए से 108 रुपए तय किया गया है। इस आईपीओ का लॉट साइज 108 शेयरों का बनाया गया है। जिस वजह से निवेशकों को कम से कम 14,904 रुपए का दांव लगाना ही पड़ेगा। एनटीपीसी ग्रीपन एनर्जी की तरफ से आईपीओ पर दांव लगाने वाले निवेशकों को 25 नवंबर को शेयरों का अलॉटमेंट किया जाएगा। वहीं, 27 नवंबर 2024 कंपनी की लिस्टिंग प्रस्तावित है। कंपनी की तरफ से आईपीओ पर दांव लगाने वाले कर्मचारियों को एक शेयर पर 5 रुपए की छूट दी जाएगी।

रिलायंस इंडस्ट्रीज, विकाओम18 और डिज्नी का मर्जर हुआ पूरा, नीता अंबानी को कमान, 3 सीईओ भी

नई दिल्ली, एजेंसी। मीडिया और एंटरटेनमेंट सेक्टर का सबसे बड़ा मर्जर पूरा हो गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज, वायकॉम18 और स्टार इंडिया ने मिलकर देश की सबसे बड़ी मीडिया और एंटरटेनमेंट कंपनी बनाई है। इस ज्वाइंट वेंचर की कुल वैल्यू 70,000 करोड़ रुपये से अधिक की है। माना जा रहा है कि यह ज्वाइंट वेंचर 26,000 करोड़ रुपये का सालाना रेवन्यू जनरेट करेगा। बता दें, दोनों की तरफ से दिए साझा बयान के अनुसार, इस ज्वाइंट वेंचर में रिलायंस इंडस्ट्रीज ने अपनी वृद्धि के लिए 11,500 करोड़ रुपये (1.4 अरब डॉलर) का निवेश किया है। इसकी चेयरपर्सन नीता अंबानी होंगी।

वायकॉम 18 मीडिया और वॉल्ट डिज्नी कंपनी को वायकॉम 18 के मीडिया और जियोसिनेमा कारोबार के स्टार इंडिया में विलय के लिए भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई), राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) जैसे प्राधिकरण से आवश्यक मंजूरियां पहले ही मिल चुकी हैं।

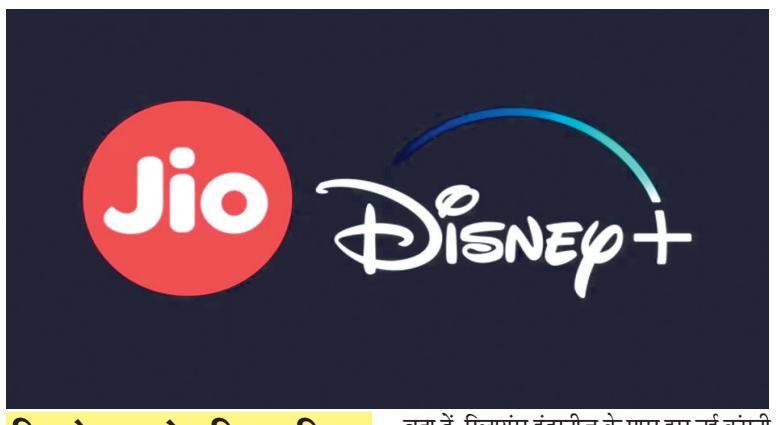

किसके पास होगा कितना हिस्सा

रिलायंस इंडस्ट्रीज के पास सबसे अधिक हिस्सा होगा। रिलायंस इंडस्ट्रीज के पास 46.82 प्रतिशत, डिज्नी के पास 36.84 प्रतिशत और वायकॉम18 के पास 16.34 प्रतिशत हिस्सा होगा। बता दें, रिलायंस इंडस्ट्रीज के पास इस नई कंपनी का नियंत्रण रहेगा। नीता अंबानी इस ज्वाइंट वेंचर की चेयरपर्सन होंगी, जबकि उदय शंकर वाइस चेयरमैन होंगे जो ज्वाइंट वेंचर को रणनीतिक मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। ज्वाइंट वेंचर के तहत 100 से ज़्यादा टीवी चैनल हैं और यह सालाना 30,000 घंटे से ज़्यादा के टीवी मनोरंजन सामग्री तैयार करता है। जियोसिनेमा और हॉटस्टार डिजिटल मंच का कुल ग्राहक आधार पांच करोड़ से ज्यादा है। ज्वाइंट वेंचर में क्रिकेट, फुटबॉल और दूसरे खेलों के खेल अधिकारों का पोर्टफोलियो है। इस बीच, एक अलग सौद डील के तहत रिलायंस ने वायकॉम 18 में अमेरिकी ग्लोबल एंटरटेनमेंट ग्रुप पैरामाउंट ग्लोबल की 13.01 प्रतिशत हिस्सेदारी 4,286 करोड़ रुपये में खरीदी है। इस ज्वाइंट वेचर का नेतृत्व तीन सीईओ - केविन वाज, किरण मणि और संजोग गुप्ता करेंगे। तीनों सीईओ मिलकर कंपनी का नेतृत्व करेंगे। केविन वाज सभी मंचों पर मनोरंजन संगठन का नेतृत्व करेंगे, जबकि किरण मणि संयुक्त डिजिटल संगठन का प्रभार संभालेंगे। संजोग गुप्ता संयुक्त स्पोर्ट्स बिजनेस का नेतृत्व करेंगे, जिसके पास आईपीएल, आईसीसी और बीसीसीआई द्वारा आयोजित सभी मैचों के प्रसारण अधिकार हैं। इसके अलावा, इसके पास फुटबॉल और अन्य खेलों के प्रसारण अधिकारों का एक बड़ा पोर्टफोलियो है।

अर्थव्यवस्था में वृद्धि को गति देने के लिए दरों को घटाए आरबीआई, बढ़ती महंगाई पर बोले पीयूष गोयल

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में बढ़ती महंगाई को लेकर वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के सामने कुछ मांगे रखी है। जिसमें उन्होंने कहा कि विकास को रफ्तार देने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआई को ब्याज दरों में कटौती करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि दरों में कटौती का विकल्प चुनने के लिए खाद्य महंगाई पर विचार करना गलत सिद्धांत है। जिससे महंगाई दिसंबर में कम हो सकती है। गुरुवार को एक कार्यक्रम में गोयल ने कहा, खाद्य पदार्थों के दाम में तेजी से खुदरा महंगाई के प्रबंधन का कोई लेना-देना नही है। अब समय आ गया है, जब नीति निर्माता और मौद्रिक नीति समिति एक साथ तय करें कि क्या खाद्य पदार्थों के दाम को खुदरा महंगाई की गणना करने में शामिल किया जाए या नहीं। उन्होंने कहा कि इस पर गंभीरता से चर्चा हो। अर्थव्यवस्था को रफ्तार की जरूरत है। मुंबई। भारतीय स्टेट बैंक यानी एसबीआई ने चुनिंदा अवधि वाले कर्ज की ब्याज दरों में 0.05 फीसदी की बढ़ोतरी कर दी है। नई दरें शुक्रवार से लागू होंगी। बैंक ने बताया, एक साल के कर्ज की ब्याज दर अब 9 फीसदी होगी। बैंक ने तीन और छह महीने की अवधि वाले कर्जों को भी महंगा कर दिया है।

वर्क लाइफ बैलेंस से जुड़े अपने पुराने बयान पर अभी भी कायम हैं नारायण मूर्ति

नई दिल्ली, एजेंसी। आईटी कंपनी इंफोसिस के को-फाउंडर नारायण मूर्ति ने एक बार फिर से अपने पुराने बयान को दोहराया है। मूर्ति ने कहा है कि भारतीयों को वर्क लाइफ बैलेंस के बजाय काम पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। उन्होंने सप्ताह में छह दिन के बदले पांच दिन ही काम करने की परंपरा पर भी सवाल उठाया है। उन्होंने कहा है कि वह अपने पुराने बयान पर अभी भी कायम हैं।

कहां कही यह बात

नारायण मूर्ति ने सीएनबीसी ग्लोबल लीडरशिप समिट में कार्य-जीवन संतुलन में विश्वास न करने के अपने बयान को फिर दोहराया। मूर्ति ने कहा कि जियो फाइनेंशियल सर्विसेज के स्वतंत्र निदेशक और गैर-कार्यकारी अध्यक्ष केवी कामथ ने एक बार कहा था कि चूंकि भारत एक गरीब देश है, जिसके सामने बहुत सी चुनौतियां हैं, इसलिए हमें कार्य-जीवन संतुलन के बजाय उनके बारे में चिंता करने की जरूरत है।

मूर्ति ने आगे कहा कि पीएम मोदी, उनके कैबिनेट मंत्री और नौकरशाह देश के लिए बहुत मेहनत कर रहे हैं। मूर्ति ने कहा, जब पीएम मोदी सप्ताह में 100 घंटे काम कर रहे हैं, तो हमारे आसपास जो कुछ भी हो रहा है, उसके लिए अपनी प्रशंसा दिखाने का एकमात्र तरीका हमारा काम है।

पांच दिन का सप्ताह हुआ था तो...

उन्होंने कहा कि जब देश में साल 1986 में छह दिन के कार्य सप्ताह से पांच दिन के कार्य सप्ताह में बदलाव हुआ, तो वे निराश हुए थे। मूर्ति ने कहा, हमें इस देश में कड़ी मेहनत करने की जरूरत है। कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है। भले ही आप सबसे बुद्धिमान व्यक्ति हों, आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। इसलिए मैं अपना विचार वापस नहीं ले रहा हूं। मैं इसे अपनी कब्र तक ले जाऊंगा। उन्होंने यह भी बताया कि वे खुद सुबह 6:30 बजे ऑफिस जाते थे और रात 8:40 बजे लौटते थे। यानी रिटायर होने तक हफ्ते में साढ़े छह दिन 14 घंटे और 10 मिनट काम करते थे। उन्होंने कहा, मुझे इस पर गर्व है।

औंधे मुंह गिरा सोना, 15 दिन में इतना सस्ता हुआ गोल्ड, अभी और गिरेंगे भाव

नई दिल्ली, एजेंसी। पिछले कुछ दिनों से शेयर बाजार में बड़ी गिरावट देखी जा रही है। गुरुवार को भी सेंसेक्स और निफ्टी ने अच्छी शुरुआत की लेकिन कुछ ही समय बाद इनकी गिरावट फिर से जारी रही। ऐसे में सिर्फ शेयर बाजार ही नहीं, बल्कि सोने की कीमतों में भी लगातार गिरावट आ रही है। ऐसे में ये खबर उन लोगों के लिए राहत भरी है जिन्हें शादियों में सोना खरीदना है। 1 नवंबर से अब तक यानी केवल दो हफ्ते में सोने की कीमत में 5000 रुपए से ज्यादा की गिरावट हो चुकी है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि एक से डेढ़ महीने में सोने की कीमतों में और गिरावट आने की संभावना है। सोने की कीमत करीब 5000 रुपए प्रति दस ग्राम तक गिर सकती है।

सोने की कीमतों में इस साल बड़ा उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। एक ओर जहां मोदी 3.0 का पहला बजट पेश होने के दौरान सरकार की ओर से सोने-चांदी पर कस्टम ड्यूटी हटाने का ऐलान किए जाने के बाद ये भरभराकर टूटा था, तो इसके अगले ही महीने से गोल्ड प्राइज ने ऐसी रफ्तार पकड़ी कि सारे रिकॉर्ड ध्वस्त करते हुए शिखर पर पहुंच गया लेकिन बीते दो हफ्तों से गोल्ड प्राइज में गिरावट दर्ज की गई है। गुरुवार को ही मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर 10 ग्राम 24 कैरेट गोल्ड के रेट में 700 रुपए से ज्यादा की गिरावट आई।

दो हफ्ते में इतना घटा गोल्ड प्राइज

एमसीएक्स पर सोने की कीमतों में बीते दो हफ्ते में हुए बदलाव पर नजर डालें, तो महीने की शुरुआत में यानी 1 नवंबर को पांच दिसंबर की एक्सपायरी वाला गोल्ड प्राइज 78,867 रुपए प्रति 10 ग्राम पर था लेकिन गुरुवार 14 नवंबर 2024 को गिरकर 73,750 रुपए प्रति 10 ग्राम पर आ गया। इस हिसाब से देखें तो सोने की कीमत में 1 से 14 नवंबर के दौरान 5,117 रुपए प्रति 10 ग्राम तक की बड़ी गिरावट आई है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज के साथ ही घरेलू मार्केट में भी सोने की कीमत में गिरावट देखने को मिली है। इंडियन बुलियन ज्वेलर्स एसोशियएसन की वेबसाइट के मुताबिक, बीते 1 नवंबर फाइन गोल्ड (999) की कीमत 81 हजार रुपए प्रति 10 ग्राम के पार पहुंच गई थी

इंडिगो ने गोवा और भोपाल के बीच उड़ान सेवा शुरू की

जिससे भारत में सर्वोच्च अवकाश और विरासत स्थलों के बीच कनेक्टिविटी बढ़ेगी

भोपाल। भारत के अग्रणी कैरियर, इंडिगो ने 01 दिसंबर, 2024 से गोवा और भोपाल के बीच नए और एक्सक्लुसिव सीधे मार्ग के लॉन्च की घोषणा की है। इस मार्ग पर यह एयरलाईन सप्ताह में छः बार सीधी उड़ानसेवा प्रदान करेगी, जिससे यात्रा का सुविधाजनक विकल्प मिलेगा और दोनें क्षेत्रों में व्यापार और पर्यटन का विकास होगा।

श्री विनय मल्होत्रा, हेड, ग्लोबल सेल्स, इंडिगो ने कहा, ''हमें भारत में अपने नेटवर्क में गोवा और भोपाल के बीच कनेक्टिविटी शुरू करने की खुशी है। गोवा और भोपाल के बीच हमारी एक्सक्लुसिव सीधी उड़ान सेवाओं के साथ हम भारत में 22 शहरों से गोवा (डाबोलिम और मोपा) के लिए 400 औसत साप्ताहिक उड़ानें पेश करेंगे। इस नए मार्ग का उद्देश्य इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यटन का सहयोग बढ़ाना है। भारत के अग्रणी कैरियर के रूप में हम अपने बेजोड़ नेटवर्क पर यात्रा का किफायती, समयबद्ध, विनम्र और सुगम अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'' अपने खूबसूरत समुद्री तटों, जीवंत नाईटलाईफ और पुर्तगाली विरासत के लिए मशहूर, गोवा धूप, रेत और संस्कृति का बेहतरीन अनुभव प्रदान करता है। यहाँ पर सैलानी ओल्ड गोवा के ऐतिहासिक चर्च देख सकते हैं, वॉटरस्पोर्ट्स का मजा ले सकते हैं और सुंदर समुद्री तटों पर अपनी थकान मिटा सकते हैं।

वहीं भोपाल झीलों का शहर है। यहाँ प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ऐतिहासिक भव्यता देखने को मिलती है। यहाँ के प्रसिद्ध स्थानों में अपर लेक, यूनेस्को साईट भीमबेटका की गुफाएं, और भव्य ताज-उल-मस्जिद हैं, जो भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है। इंडिगो भोपाल से 100 से ज्यादा साप्ताहिक उड़ानें संचालित करता है, जो 11 घरेलू स्थानों को जोड़ती हैं। भोपाल मुख्य व्यवसायिक केंद्र के रूप में उभर रहा है, जहाँ विकास की अपार संभावनाएं हैं। संतुलित और सस्टेनेबल आर्थिक वृद्धि के मध्य प्रदेश सरकार के उद्देश्य के अनुरूप फरवरी, 2025 में भोपाल में इन्वेस्ट मध्य प्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर समिट 2025 का आयोजन होने वाला है, जिसमें राज्य में मौजूद निवेश के विस्तृत अवसरों का प्रदर्शन होगा।

सीसीपीए ने ओला इलेक्ट्रिक की सेवाओं की जांच का आदेश दिया, 10000 से अधिक शिकायतें मिलने के बाद उठाया कदम

नई दिल्ली, एजेंसी। उपभोक्ता अधिकार नियामक सीसीपीए ने ओला इलेक्ट्रिक द्वारा निर्मित सेवाओं तथा इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों में कथित 'खामियों' से संबंधित शिकायतों की विस्तृत जांच का आदेश दिया है। निधि खरे की अध्यक्षता वाले केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने महानिदेशक (जांच) को इस मामले की जांच करने का निर्देश दिया है। खरे भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) की प्रमुख भी हैं।

पंद्रह दिनों में रिपोर्ट सौंपने का आदेश

इस संबंध में आदेश छह नवंबर को जारी किया गया और बीआईएस महानिदेशक को 15 दिन के भीतर जांच रिपोर्ट पेश करने को कहा गया है। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, 'कंपनी ने नोटिस का जवाब दे दिया है। सीसीपीए ने अब महानिदेशक (जांच) को मामले की विस्तार से जांच करने और 15 दिन के भीतर रिपोर्ट सौंपने को कहा है।'

यह कदम सीसीपीए द्वारा राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन (एनसीएच) पर 10,000 से अधिक शिकायतें मिलने के बाद शुरू की गई कार्रवाई के मद्देनजर उठाया गया है। नियामक ने उपभोक्ता अधिकारों के कथित उल्लंघन, भ्रामक विज्ञापनों तथा अनुचित व्यापार व्यवहार का हवाला देते हुए सात अक्टूबर को ओला इलेक्ट्रिक को नोटिस जारी किया था। नोटिस का कंपनी ने 21 अक्टूबर को दिया था, जिसमें उसने कहा था कि सीसीपीए के पास दर्ज 10,644 शिकायतों में से 99.1 प्रतिशत का समाधान कर दिया है।

ऑटो और रियल्टी सेक्टर पर लगाना चाहते हैं दांव तो निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड दे रहा है अवसर

मुंबई। निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड ने पैसिव स्पेस में दो नए फंड्स लॉन्च करने की घोषणा की है। ये नए फंड ऑफर ऑटो और रियल्टी थीम पर आधारित हैं। दोनों फंड्स ओपन-एंडेड इंडेक्स फंड्स हैं, जिनका एनएफओ 14 नवंबर 2024 को खुला है और 28 नवंबर को बंद होगा। निप्पॉन इंडिया निफ्टी ऑटो इंडेक्स फंड एक ऐसा पैसिव फंड है जो निफ्टी ऑटो इंडेक्स के प्रदर्शन को ट्रैक करेगा, जबकि निप्पॉन इंडिया निफ्टी रियल्टी इंडेक्स फंड निफ्टी रियल्टी इंडेक्स का अनुसरण करेगा। चूंकि ये दोनों पैसिव फंड्स हैं, वे अपने-अपने अंतर्निहित इंडेक्स की सिक्योरिटीज में निवेश करेंगे। पैसिव होने के कारण इन फंड्स में निवेशकों के लिए कुछ लाभ हैं, जैसे कम लागत, एक ही यूनिट के माध्यम से विविधीकरण और पारदर्शिता, क्योंकि दोनों फंड्स अपने-अपने इंडेक्स की नकल करेंगे। भारत का ऑटोमोबाइल सेक्टर देश के सकल घरेलू उत्पाद में 7.1 प्रतिशत का योगदान देता है। यह उद्योग विविधता से भरा हुआ है, जिसमें यात्री वाहन, वाणिज्यिक वाहन, तीन पहिया वाहन, दो पहिया वाहन और ऑटोमोटिव कंपोनेंट निर्माता शामिल हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की मांग बढ़ रही है, जो सरकारी प्रोत्साहन, बैटरी की घटती लागत और पेट्रोल-डीजल की बढ़ती कीमतों से प्रेरित है।

अनिल अंबानी की कंपनियों पर आफत, फर्जी बैंक गारंटी पर नोटिस जारी, आपराधिक मुकदमे की तलवार

नई दिल्ली, एजेंसी। अनिल अंबानी की रिलायंस पावर और उसकी सहयोगी कंपनी रिलायंस एनयू बीईएसएस पर बड़ा आरोप लगा है। सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया ने इन कंपनियों को फर्जी बैंक गारंटी जमा करने के आरोप में नोटिस भेजा है। रिलायंस पावर को कारण बताओ नोटिस में पूछा गया है कि फर्जी बैंक गारंटी जमा करने के लिए कंपनी और उसकी इकाई के खिलाफ आपराधिक कार्रवाई क्यों नहीं की जानी चाहिए। देश की टॉप रिन्यूएबल एनर्जी एजेंसी सेकी ने पिछले हफ्ते अपनी बोलियों में फर्जी दस्तावेज जमा करने को लेकर रिलायंस पावर और उसकी इकाई रिलायंस एनयू बीईएसएस को उसके टेंडर में भाग लेने से रोक दिया था।

इस बीच, रिलायंस पावर ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि वह 'धोखाधड़ी और फर्जीवाड़े' की साजिश का शिकार रही है। रिलायंस पावर ने कहा, 'इस संबंध में 16 अक्टूबर, 2024 को तीसरे पक्ष के खिलाफ दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा के पास एक आपराधिक शिकायत पहले ही दर्ज कराई जा चुकी है। इसके आधार पर 11 नवंबर, 2024 को एफआईआर दर्ज की गई है। मामला जांच के अधीन है। कानून की उचित प्रक्रिया का पालन किया जाएगा।' सेकी ने 13 नवंबर को जारी एक नोटिस में कहा कि बोली के तहत एक विदेशी बैंक गारंटी के रूप में फर्जी दस्तावेज जमा किए गए। बोली के तहत जमा बैंक गारंटी रिलायंस एनयू बीईएसएस लि. (जिसे महाराष्ट्र एनर्जी जनरेशन लि. के नाम से जाना जाता है) ने दी थी, वह फर्जी थी।

आईपीएल में अच्छा प्रदर्शन करके भारतीय टी20 टीम में वापसी करना चाहते हैं केएल राहुल

पर्थ, एजेंसी। पिछले कुछ समय से खराब फॉर्म में चल रहे केएल राहुल भारत की तरफ से क्रिकेट के तीनों प्रारूप में खेलना चाहते हैं उनका लक्ष्य इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में अच्छा प्रदर्शन करके राष्ट्रीय टी20 टीम में वापसी करना है। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा अगर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला के पहले मैच में नहीं खेल पाते हैं तो राहुल को पारी की शुरुआत करने का मौका मिल सकता है।

भारतीय टीम के लिए राहुल की खराब फॉर्म चिंता का विषय बनी हुई है लेकिन यह 32 वर्षीय बल्लेबाज इसको लेकर चिंतित नहीं है। राहुल ने कहा, 'मेरा लक्ष्य निश्चित तौर पर टी20 टीम में वापसी करना है। मैं तीनों प्रारूप में खेलना चाहता हूं और इतने वर्षों में इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है। मैं भारत के लिए तीनों प्रारूप में खेलना चाहता हूं जैसा कि कई वर्षों से कर रहा हूं। उन्होंने कहा, 'मैं पिछले कुछ समय से टी20 टीम से बाहर हूं तथा मैं जानता हूं कि एक खिलाड़ी के रूप में मैं अभी किस स्तर पर हूं और मुझे वापसी करने के लिए क्या करना है। इसके लिए मैं आईपीएल के नए सत्र का इंतजार कर रहा हूं।

राहुल ने 2022 से लेकर अब तक 12 टेस्ट मैच की 21 पारियों में केवल 514 रन बनाए और उनका औसत 25.7 रहा। इस बल्लेबाज ने हालांकि कहा कि वह व्यक्तिगत रिकॉर्ड की बजाय टीम को प्राथमिकता देते हैं। उन्होंने कहा, 'खिलाड़ी होने के नाते हम सभी स्वच्छंद होकर खेलना चाहते हैं। मैं जिस तरह से बल्लेबाजी करता हूं उसका मैं पूरा आनंद लेता हूं।

विश्व कप क्वालीफायर में पराग्वे ने अर्जेंटीना को हराया

असंसियोन, एजेंसी। पराग्वे ने अर्जेंटीना को 2-1 से हराकर वर्ल्ड कप क्वालिफायर में एक रोमांचक जीत हासिल की। एंटोनियो सनाब्रिया और ओमार अल्डेरेटे ने टीम के लिए गोल किए। मैच का पहला गोल करते हुए इंटर मिलान के स्ट्राइकर लुटारो मार्टिनेज ने अर्जेंटीना के लिए पहला गोल किया। उन्होंने एनज़ो फर्नांडीज के शानदार पास पर दौड़ते हुए गेंद को अपने कंट्रोल में लिया और दूर के कोने में सटीक शॉट मारा। थोड़ी देर बाद, सनाब्रिया ने गुस्तावो वेलास्केज के क्रॉस पर शानदार ओवरहेड वॉली से पैराग्वे के लिए स्कोर बराबर कर दिया। हाफटाइम के तुरंत बाद अल्डेरेटे ने डिएगो गोमेज़ की फ्री-किक पर हेडर मारकर पैराग्वे को बढ़त दिलाई। अर्जेंटीना की टीम कोई गोल करने में सफल नहीं हो सकी और उनको मैच 1-2 से गंवाना पड़ा।

हालांकि इस हार के बावजूद, अर्जेंटीना 11 मैचों में 22 अंकों के साथ 10 टीमों के दक्षिण अमेरिकी जोन में शीर्ष पर बनी हुई है और वह पैराग्वे से छह अंक आगे है।

इंग्लैंड-न्यूजीलैंड

इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज के बाद टिम साउदी लेंगे संन्यास

केन विलियमसन की होगी वापसी, नाथन स्मिथ भी टीम में शामिल

नईदिल्ली, एजेंसी। न्यूजीलैंड के अनुभवी तेज गेंदबाज टिम साउदी ने घोषणा की है कि वह दिसंबर में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज समाप्त होने के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लेंगे। इस बीच, न्यूजीलैंड के दिग्गज केन विलियमसन इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैच की टेस्ट सीरीज से रेड बॉल क्रिकेट के इंटरनेशनल फॉर्मेट में वापसी करेंगे, जबकि ऑलराउंडर नाथन स्मिथ को पहली बार रेड-बॉल क्रिकेट टीम में शामिल किया गया है। केन विलियमसन पिछले महीने श्रीलंका में लगी कमर की चोट के कारण भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज खेलने से चूक गए थे। केन विलियमसन ने मार्क चैपमैन की जगह टीम में वापसी की। वहीं, 26 साल के नाथन स्मिथ ने हाल ही में श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में अपना अंतरराष्ट्रीय पदार्पण किया। उन्होंने 8 ओवर्स में 66 रन दिए, जबकि बल्ले से केवल नौ रन बनाए।

पहले टेस्ट के लिए नहीं चुने गए मिचेल सैंटनर – नाथन स्मिथ हालांकि, प्लंकेट शील्ड (वेलिंगटन) में 17 के औसत से 33 विकेट लेकर सबसे बेहतरीन गेंदबाज रहे थे। इस बीच, पुणे में न्यूजीलैंड की जीत में अहम भूमिका निभाने वाले मिचेल सैंटनर, वेलिंगटन और हैमिल्टन में होने वाले दूसरे और तीसरे टेस्ट में टीम के मुख्य स्पिनर होंगे। सैंटनर को क्राइस्टचर्च में

होने वाले सीरीज के पहले मैच के लिए नहीं चुना गया है। तेज गेंदबाज बेन सियर्स और ऑलराउंडर काइल जैमीसन को चयन के लिए नहीं चुना गया। बेन सियर्स घुटने और काइल जैमीसन पीठ की चोट से उबर रहे हैं।

ये है इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए न्यूजीलैंड की टीम –टॉम लैथम (कप्तान), टॉम ब्लंडेल (विकेटकीपर), डेवोन कॉनवे, जैकब डफी, मैट हेनरी, डेरिल मिचेल, विल ओ'रोर्के, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रविंद्र, मिचेल सैंटनर (दूसरा और तीसरा टेस्ट), नाथन स्मिथ, टिम साउदी, केन विलियमसन, विल यंग।

भारत के खिलाफ सीरीज से पहले टॉम लैथम को सौंपी थी कप्तानी – 35 साल के टिम साउदी ने कहा कि हैमिल्टन में घरेलू मैदान पर तीसरा टेस्ट उनका आखिरी टेस्ट होगा। साउदी ने भारत के खिलाफ न्यूजीलैंड की हालिया 3-0 से टेस्ट सीरीज जीत से पहले टेस्ट कप्तानी टॉम लैथम को सौंप दी थी। टिम साउदी 100 से अधिक टेस्ट खेलने वाले न्यूजीलैंड के 6 खिलाड़ियों में से एक हैं। टिम साउदी ने 161 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय और 126 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच भी खेले हैं।

न्यूजीलैंड के दूसरे सबसे ज्यादा टेस्ट विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं टिम साउदी – टिम साउदी ने टेस्ट क्रिकेट में 385 विकेट लिए हैं। वह रिचर्ड हेडली के बाद न्यूजीलैंड की ओर से टेस्ट विकेट लेने वालों की सूची में दूसरे नंबर पर हैं। टिम साउदी ने चार वनडे विश्व कप, सात टी20 विश्व कप और दो चैंपियंस ट्रॉफी में हिस्सा लिया। टिम साउदी 2021 में भारत के खिलाफ पहले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में न्यूजीलैंड की जीत में अहम भूमिका निभा चुके हैं, उन्होंने फाइनल में पांच विकेट चटकाए थे। टिम साउदी ने कहा, 'न्यूजीलैंड का प्रतिनिधित्व करना ही वह सब था जिसका मैंने बचपन में सपना देखा था। 18 साल तक ब्लैक कैप्स के लिए खेलना मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान और सौभाग्य रहा है, लेकिन अब मुझे लगता है कि उस खेल से दूर होने का सही समय आ गया है, जिसने मुझे इतना कुछ दिया। यह एक शानदार सफर रहा है और मैं इसमें कुछ भी नहीं बदलना चाहूंगा।'

टिम साउदी ने 2008 में नेपियर में इंग्लैंड के खिलाफ 19 साल की उम्र में अपना टेस्ट करियर शुरू किया था। उन्होंने डेब्यू टेस्ट की पहली पारी में 55 रन देकर 5 विकेट लिए थे और दूसरी पारी में नाबाद 77 रन बनाए थे। वह टेस्ट में 300, एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में 200 और टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 100 विकेट लेने वाले एकमात्र खिलाड़ी हैं।

न्यूजीलैंड के कोच गैरी स्टीड ने टीम में टिम साउदी के योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा, 'टिम की सहनशीलता और लचीलापन बेहतरीन रहा है। वह अविश्वसनीय रूप से एक कठिन प्रतियोगी हैं, जो बड़े मौकों के लिए खुद को तैयार रखते हैं और शायद ही कभी चोटिल होते हैं।' न्यूजीलैंड बनाम इंग्लैंड टेस्ट सीरीज 28 नवंबर को क्राइस्टचर्च में शुरू होगी। दूसरा टेस्ट 6 दिसंबर से वेलिंगटन और तीसरा टेस्ट 14 दिसंबर को हैमिल्टन में खेला जाएगा।

ये है न्यूजीलैंड बनाम इंग्लैंड टेस्ट सीरीज का शेड्यूल

- **पहला टेस्ट–** 28 नवंबर से 02 दिसंबर तक-हेगले ओवल- क्राइस्टचर्च
- **दूसरा टेस्ट–** 06 दिसंबर से 10 दिसंबर तक-सेलो बेसिन रिजव-वेलिंगटन
- **तीसरा टेस्ट–** 14 दिसंबर से 18 दिसंबर तक- सेडन पार्कः हैमिल्टन

निलंबन, जुर्माना

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई स्टार ने गौतम गंभीर-रिकी पोंटिंग विवाद की कहानी बताई

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर और ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग के बीच चल रहे विवाद के बीच पूर्व क्रिकेटर ब्रैड हैडिन ने दोनों के बीच वाकयुद्ध के पीछे की वजह का खुलासा किया है। यह सब तब शुरू हुआ जब गंभीर ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले स्टार भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली की खराब फॉर्म पर पोंटिंग की टिप्पणियों पर उन्हें जवाब दिया। गंभीर ने उन्हें ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा, इससे पहले दिग्गज बल्लेबाज ने तीखा पलटवार करते हुए भारतीय कोच को एक चिड़चिड़ा व्यक्ति बताया। गंभीर ने 2018 में दिल्ली कैपिटल्स में पोंटिंग के नेतृत्व में खेला, जो एक खिलाड़ी के रूप में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में उनका अंतिम सीजन साबित हुआ। उन्होंने उस सीजन में केवल आधे मैच खेले जबकि शेष मैचों में श्रेयस अय्यर ने टीम की अगुआई की। हालांकि हैडिन ने दोनों के बीच की पिछली कहानी पर से पर्दा उठाने की कोशिश की, जिसका

खुलासा वह आने वाले दिनों में करेंगे। हैडिन ने कहा, गंभीर एक ऐसा किरदार है जो इसे हम बनाम वे मानसिकता के रूप में इस्तेमाल करेगा। और आप उम्मीद करते हैं कि आपका कोच खिलाड़ियों का साथ देगा। उसकी प्रतिक्रिया वहां तीखी थी, और आपको अपने कोच को उस तरह के परिदृश्य में फंसने की जरूरत नहीं है जब तक कि उसकी रणनीति हम बनाम वे बनाने की न हो। मुझे पता है कि पिछली कहानी क्या है। मैं आपको बताता हूं; बस सप्ताह के अंत तक प्रतीक्षा करें। थोड़ी कोहनी, निलंबन और जुर्माना था।

हैडिन ने गंभीर की तुलना ऑस्ट्रेलियाई रग्बी कोच वेन बेनेट से भी की, जो अपनी टीम से दबाव हटाने की कोशिश करते हैं। उन्होंने कहा, यह वेन बेनेट की कोचिंग शैली से अलग है। इसलिए हम अब रोहित शर्मा या [विराट] कोहली के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम गंभीर और रिकी [पोंटिंग] के बारे में बात कर रहे हैं। गंभीर ने अपनी टीम से दबाव हटा लिया है। अब सब कुछ उनके बारे में है; यह उनके बारे में है कि वे कितने चुभने वाले हैं। और अब वे अपनी टीम को तैयार करने में सक्षम हो सकते हैं। आप यह मानना ??चाहेंगे कि उनके पास इस बारे में एक बहुत ही स्पष्ट योजना है कि वे कैसे तैयार होना चाहते हैं।

वे इस बात से सहमत थे कि गंभीर कभी-कभी चुभने वाले चरित्र के हो सकते हैं, हैडिन ने आश्चर्य जताया कि क्या गंभीर जानबूझकर ऐसा कर रहे हैं, खासकर जब उनकी टीम न्यूजीलैंड से सीरीज हारने के बाद वास्तव में दबाव में है। उन्होंने कहा, हम जानते हैं कि वह एक चिड़चिड़ा व्यक्ति है और कभी भी खुद को भड़का सकता है। क्या वह अब अपने साथियों से ध्यान हटाने के लिए ऐसा कर रहा है? मुझे नहीं पता। यह तो समय ही बताएगा। अगर यह भावनात्मक प्रतिक्रिया है, तो समस्या है। लेकिन अगर वह चीजों को भटकाने और अपनी टीम से ध्यान हटाने के लिए ऐसा कर रहा है, तो यह अलग बात है।

प्रैक्टिस में पंत-बुमराह की मस्ती, 100-100 डॉलर की शर्त लगाई

ऋषभ बोले- आउट कर दूंगा, जसप्रीत ने कहा- विकेट नहीं गिरने वाला

पर्थ, एजेंसी। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 22 नवंबर से बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी शुरू होने जा रही है। दोनों टीमें दबाव में हैं, क्योंकि सीरीज वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के लिहाज से अहम है। दबाव के बीच भारतीय खिलाड़ी प्रैक्टिस में मस्ती करते नजर आए हैं। बीसीसीआई ने शुक्रवार को इसका वीडियो जारी किया। इस वीडियो में भारतीय विकेटकीपर ऋषभ पंत और तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने आपस में 100-100 डॉलर की शर्त लगाई है। बीसीसीआई के वीडियो में पंत ने गेंदबाजी की और बुमराह को बैटिंग के लिए बुलाया और आउट भी किया। हालांकि, बुमराह ने आउट होते ही पंत के एक्शन पर सवाल उठा दिया। बता दें कि भारतीय टीम पर्थ टेस्ट से पहले डब्ल्यूएसीए स्टेडियम में प्रैक्टिस कर रही है।

प्रैक्टिस में पंत-बुमराह की मजेदार बातचीत वीडियो की शुरुआत में पंत नेट्स में जसप्रीत बुमराह को गेंदबाजी करते दिखाई दिए। पंत कहते हैं- मैं आउट कर दूंगा, 100-100 डॉलर की शर्त लगी। इस पर बुमराह कहते हैं- विकेट नहीं गिरने वाला। रहने दे। इस पर पंत जवाब देते हैं कि मैंने फर्स्ट क्लास क्रिकेट में एक विकेट लिया है। इस पर बुमराह बोलते हैं कि मुबारक हो, उसे तुम सजाकर रखो, अब बस करो।

पंत पहली बॉल डालते हैं, जिसे बुमराह छोड़ देते हैं। यहां बॉल उठाते हुए पंत कहते हैं- रुक तुझे बाउंसर मारता हूं। वे अगली बॉल शॉर्ट लेंथ पर डालते हैं और बुमराह उस बॉल पर पुल करते हैं। इस पर पंत कहते हैं कि यह आउट है। वे कोच मोर्ने मोर्केल से पूछते हैं कि आउट है ना। इस पर कोच असमंजस्य में आ जाते हैं।

टीम इंडिया में होने वाली है मोहम्मद शमी की वापसी?

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में कर सकते हैं जोरदार

नईदिल्ली, एजेंसी। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 22 नवंबर से शुरू होने जा रही है. जिसमें भारत और ऑस्ट्रेलिया पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलने जा रहे हैं. इस सीरीज के लिए मोहम्मद शमी की टीम इंडिया में वापसी की चर्चा थी, लेकिन जब ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए टीम इंडिया का एलान हुआ तो उसमें मोहम्मद शमी का नाम नहीं था. लेकिन रणजी ट्रॉफी में बंगाल के लिए शानदार प्रदर्शन करने के बाद अब बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए मोहम्मद शमी की टीम में वापसी की चर्चा शुरू हो गई है. इसकी शुरुआत शमी के बचपन के कोच मोहम्मद बदरुद्दीन ने की है.

दूसरे टेस्ट से टीम इंडिया में शामिल हो सकते हैं शमी

मोहम्मद शमी के बचपन के कोच मोहम्मद बदरुद्दीन ने इस वापसी की प्रक्रिया और शमी की तैयारियों के बारे में बताया. बदरुद्दीन के मुताबिक शमी बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के दूसरे टेस्ट के बाद टीम से जुड़ सकते हैं. इंडियन एक्सप्रेस अनुसार बदरुद्दीन ने कहा, शमी ने अपनी फिटनेस साबित कर दी है और रणजी ट्रॉफी में अच्छे विकेट भी लिए हैं. वह ऑस्ट्रेलिया दौरे के दूसरे हिस्से में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

बदरुद्दीन ने शमी की वापसी के बारे में की बात

मोहम्मद शमी की संघर्षपूर्ण वापसी के बारे में बात करते हुए मोहम्मद बदरुद्दीन ने कहा कि टखने की सर्जरी और उम्र के कारण इस बार रिकवरी में काफी समय लगा. उन्होंने कहा, इस बार शमी को पहले से ज्यादा मानसिक दबाव का सामना करना पड़ा. वह कई बार निराश भी हुआ. पिछली घुटने की सर्जरी के बाद तेजी से वापसी करने वाले शमी अपनी उम्र और शारीरिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए पूरी तरह से फिट होने के बाद ही वापसी करने की कोशिश कर रहे थे. मोहम्मद बदरुद्दीन ने कहा कि शमी ने मैदान पर तभी लौटने का फैसला किया जब वह पूरी तरह से आश्वस्त और शारीरिक रूप से सक्षम महसूस करने लगे. उन्होंने कहा, शमी पुराने जमाने के खिलाड़ी हैं जो पूरी तरह से फिट हुए बिना मैदान पर नहीं लौटते. वह चोट को छिपाकर खेलने में विश्वास नहीं रखते.

विराट कोहली हुए चोटिल!

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले नहीं हुए ठीक तो टीम इंडिया का बैंड बजना तय

नईदिल्ली, एजेंसी। विराट कोहली के चोटिल होने की खबर भारतीय टीम के लिए चिंता बढ़ाने वाली है. बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024 के आयोजन में एक सप्ताह भी नहीं बचा है, ऐसे में विराट की चोट की संभावना भी टीम इंडिया पर मानसिक दबाव डाल सकती है. एक रिपोर्ट में विराट के चोटिल होने का दावा किया गया है, लेकिन चोट का कारण अभी तक उजागर नहीं हुआ है. बता दें कि भारत-ऑस्ट्रेलिया पहला टेस्ट 22 नवंबर से पर्थ में खेला जाएगा. एक ऑस्ट्रेलियाई मीडिया चैनल अनुसार गुरुवार के दिन विराट कोहली को कुछ स्कैन करवाने पड़े, लेकिन इसकी वजह सामने नहीं आई है.

अच्छी खबर यह है कि कोहली ने यदि कोई जांच करवाई भी है तो भी उन्हें शुक्रवार को सिम्यूलेशन मैच में खेलते देखा गया. इस सिम्यूलेशन मैच में कोहली ने 15 रन बनाए, लेकिन इसी दौरान केएल राहुल के कारण टीम इंडिया की टेंशन बढ़ गई है. बल्लेबाजी के दौरान गेंद राहुल की कोहनी से लगी, उन्होंने बैटिंग जारी रखने का प्रयास किया, लेकिन कुछ देर बाद उन्हें मजबूरन रिटायर्ड हर्ट होकर पवेलियन लौटना पड़ा।

कोहली से बहुत उम्मीदें

भारतीय टीम बुधवार से ही वाका स्टेडियम में अभ्यास कर रही है. कोहली पर गौर करें तो विशेष रूप से टेस्ट मैचों में उनकी खराब फॉर्म चर्चाओं में है. हाल ही में ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज रिकी पोंटिंग का वह बयान भी वायरल हुआ जिसमें उन्होंने बताया था कि पिछले 5 सालों में केवल 2 टेस्ट शतक लगाना विराट और टीम इंडिया के लिए चिंता का विषय है. उनका आखिरी टेस्ट शतक जुलाई 2023 में वेस्टइंडीज के खिलाफ आया था. कोहली इसलिए भी आलोचनाओं में घिरे हैं क्योंक न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन टेस्ट मैचों की 6 पारियों में वो सिर्फ 93 रन बना पाए थे. बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में विराट कोहली का चलना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि भारतीय टीम वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल से बाहर होने की कगार पर खड़ा है. यदि उसे बिना किसी पर निर्भर रहे फाइनल में जाना है तो पांच मैचों की सीरीज में कम से कम चार जीत दर्ज करनी होंगी ।

बिहार विमेंस एसीटी हॉकी

थाईलैंड पर भारत की जीत में दीपिका की महत्वपूर्ण भूमिका, अगला मुकाबला चीन के खिलाफ

पटना, एजेंसी। भारतीय महिला हॉकी टीम ने बिहार महिला एशियन चैंपियंस ट्रॉफी राजगीर 2024 के अपने तीसरे ग्रुप स्टेज मैच में थाईलैंड को 13-0 से हराकर एक बड़ी जीत दर्ज की। इस मुकाबले में 21 वर्षीय फारवर्ड दीपिका ने शानदार प्रदर्शन करते हुए भारत के लिए पांच गोल (3', 19', 43', 45', 45+') किए। इस मैच में लालरेमसियामी ने भारतीय महिला हॉकी टीम के लिए अपने 150 मैच पूरे किए, जबकि प्रीति दुबे ने अपनी 50वीं कैप हासिल की, जो उनके लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।

मैच की शुरुआत से दीपिका ने भारत का खाता खोला

पहले क्वार्टर में भारत ने जबरदस्त शुरुआत की, जिसमें दीपिका ने मैच के शुरुआती मिनट में ही गोल कर भारत का खाता खोला। थाईलैंड ने गेंद को अपने पास रखने की कोशिश की, लेकिन भारत ने लगातार आक्रमण कर अपनी पकड़ मजबूत बनाए रखी। प्रीति दुबे ने भी अपने 50वें मैच में गोल करके भारत की बढ़त को दोगुना कर दिया। लालरेमसियामी ने भी गोल कर स्कोर को 3-0 कर दिया।

- **दीपिका और प्रीति दुबे लगातार हावी रहीं** – दूसरे क्वार्टर में भारतीय टीम ने अपना आक्रामक खेल जारी रखा। दीपिका ने अपनी उत्कृष्ट फॉर्म जारी रखते हुए एक और गोल दागा। ब्यूटी डुंगडुंग ने भी एक पेनल्टी कॉर्नर से गोल कर पहले हाफ का अंत 5-0 के स्कोर के साथ किया। तीसरे क्वार्टर में भारत का आक्रमण और भी तीव्र हो गया। प्रीति दुबे और दीपिका के लगातार गोलों से भारत ने अपनी बढ़त को 9-0 तक पहुंचा दिया। चौथे क्वार्टर में नवनीत कौर, मनीषा चौहान और लालरेमसियामी ने गोल कर स्कोर को 13-0 तक पहुंचा दिया, जिससे भारत ने एक शानदार जीत दर्ज की।
- **भारत का अगला मुकाबला चीन के खिलाफ** – भारत का अगला मुकाबला 16 नवंबर को शाम 4:45 बजे चीन के खिलाफ होगा। इस मैच का प्रसारण सोनी स्पोर्ट्स टेन 1 और डीडी स्पोर्ट्स पर किया जाएगा तथा सोनीलिव पर लाइव स्ट्रीमिंग भी उपलब्ध होगी।

संक्षिप्त समाचार

अंतरराष्ट्रीय पुष्कर मेला 2024: कैलाश खेर की गायकी का चला जादू

पुष्कर , एजेंसी। राजस्थान के अजमेर जिले में अंतरराष्ट्रीय पुष्कर मेला 2024 की गुरुवार की शाम एक यादगार बन गई। प्रसिद्ध गायक पद्मश्री कैलाश खेर ने अपनी अद्भुत आवाज से समां बांध दिया। कैलाश खेर का परफॉर्मेंस सुनने के लिए पुष्कर मेला मैदान में सैकड़ों की संख्या में लोग जुटे, लेकिन उनके आगमन में देरी और व्यवस्था की खामियों के कारण कुछ असुविधाएं भी देखने को मिलीं। गायक कैलाश खेर ने अपनी संगीतमाला से मेला मैदान को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने जाना जोगी दे नाल से कार्यक्रम की शुरुआत की और फिर एक के बाद एक, अपने लोकप्रिय गीतों से श्रोताओं का दिल जीता। उनके गीत मैं तो तेरे प्यार में दीवाना हो गया, आओ जी, कैसे बताए कि तुमको, रंग दीनी रंग दीनी, और तेरी दीवानी पर लोग झूमने लगे. इन गीतों के साथ-साथ कैलाश खेर ने योगी, बम लहरी, और यह दुनिया ऊट पटांगा जैसे गानों से भी श्रोताओं का मनोरंजन किया। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, राजस्थान सरकार में मंत्री सुरेश सिंह रावत, और अविनाश गहलोत समेत कई अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे।

छात्रों को भजनलाल सरकार देगी 2 हजार रूपये प्रति माह

जयपुर , एजेंसी। राजस्थान की भजनलाल सरकार पढ़ाई के लिये घर से दूर किराये के मकान में रह कर जिला मुख्यालय स्थित राजकीय महाविद्यालय में अध्ययन करने वाले छात्रों को सरकार अम्बेडकर डी.बी.टी. वाउचर योजना के अंतर्गत प्रतिमाह 2,000 रुपये भत्ता प्रदान करेगी। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के संयुक्त निदेशक गिरीश भटनागर ने बताया कि यह आवेदन सत्र 2024-25 के लिए किए जाएंगे। चयनित विद्यार्थियों को दस माह के लिए राशि स्वीकृत की जाएगी। इस योजना के तहत एससी, एसटी, ओबीसी, एमबीसी, ईडब्ल्यूएस और अल्पसंख्यक वर्ग के जिला मुख्यालय पर संचालित राजकीय महाविद्यालय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर (शैक्षणिक पाठ्यक्रम कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय) में अध्ययनरत छात्र ही पात्र होंगे। योजनान्तर्गत आवेदन करने की अन्तिम दिनांक 30 नवम्बर 2024 तय की गई है। योजना के लिए राजस्थान का मूल निवासी होना आवश्यक है। छात्र के माता-पिता की वार्षिक आय 2.50 लाख (एससी, एसटी एवं एसबीसी के लिए), 1.50 लाख (ओबीसी के लिए) एवं 1.00 लाख (ईडब्ल्यूएस के लिए) रुपये से अधिक नहीं हो चाहिए। साथ ही विद्यार्थी जहाँ पढ़ रहा है और उसके माता-पिता का मकान उसी जिला मुख्यालय पर होने पर वह इसका पात्र नहीं होगा। आवेदन ऑनलाईन पोर्टल के माध्यम से ई-मित्र या एसएसओ आईडी के द्वारा किया जा सकता है

पाली में भीषण हादसा, महाराष्ट्र के कारोबारी का पूरा परिवार खत्म; गलती भारी पड़ गई

जयपुर। राजस्थान के पाली जिले में भीषण सड़क हादसा में 5 लोगों की मौत हो गई है। कार में महाराष्ट्र के कोडोली जिला के कोल्हापुर निवासी कारोबारी का परिवार था। हादसे में कारोबारी बाबूराव, उनकी पत्नी सारिका, बेटी साक्षी, बेटा संस्कार की मौके पर ही मौत हो गई। परिवार के दो अन्य सदस्य चिन्मय और प्रमोद गंभीर रूप से घायल हो गए। इनमें से भी आज सवेरे एक अन्य ने दम तोड़ दिया। सांडेराव थाना पुलिस ने बताया कि केनपुरा गांव के नजदीक बीती रात सड़क हादसा हुआ। हाइवे पर एक कार तेज रफ्तार में थी कि सामने मवेशी आ गया और कार पलट गई। गुरुवार रात भीषण सड़क हादसा हुआ है। कार में सवार छह लोगों में से पांच की मौत हो गई है और बाकि बचे हुए परिवार के एक सदस्य की हालत बेहद ही गंभीर है। हादसे की वजह सड़क पर अचानक सामने आने वाला मवेशी था। मवेशी के सामने आने के कारण अचानक ब्रेक लगाए गए और कार पलट गई। पुलिस ने देर रात ही परिवार के अन्य सदस्यों को इसकी सूचना दी है और वहां से परिवार के लोग आज पाली पहुंच रहे हैं। परिवार के सदस्यों से बातचीत के आधार पर पुलिस ने बताया कि कोल्हापुर निवासी बाबूराव अपने परिवार के छह सदस्यों के साथ राजस्थान के सिरोही इलाके में आए थे। वहां शिवगंज इलाके में रहने वाले अपने एक दोस्त के घर ठहरे थे और फिर वहां से जोधपुर घूमने के लिए दोस्त की कार लेकर निकले थे।

देवेंद्र फडणवीस ने माना- रिजल्ट के बाद ही पता चलेगा कौन किसके साथ, सीएम पद पर बोले

मुंबई , एजेंसी। महाराष्ट्र में कभी 4 राजनीतिक दल हुआ करते थे, लेकिन शिवसेना और एनसीपी में बंटवारे के चलते 6 पार्टियां चुनावी मैदान में हैं। इस बीच यह सवाल भी उठ रहा है कि क्या चुनाव के बाद भी यही तस्वीर बनी रहेगी या कुछ दल पालाबदल भी कर सकते हैं। अजित पवार की पार्टी ने इसके संकेत भी दिए हैं और कहा है कि असली तस्वीर चुनाव के बाद ही सामने आएगी। इस बीच डिप्टी सीएम और भाजपा नेता देवेंद्र फडणवीस ने भी स्वीकार किया है कि चुनाव के बाद कुछ भी हो सकता है। उन्होंने गुरुवार को कहा कि विधानसभा चुनाव 'अजब' है और 23 नवंबर को परिणाम घोषित होने के बाद ही स्पष्ट होगा कि कौन गुट किसका समर्थन कर रहा है।

फडणवीस ने कहा कि मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना, अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा और भाजपा के गठबंधन 'महायुति' को कांग्रेस, उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी) और शरद पवार के

नेतृत्व वाली राकांपा (एसपी) पर बढ़त हासिल है। फडणवीस ने कहा, 'ये चुनाव अजीब हैं। हमें नतीजों के बाद ही पता चलेगा कि कौन किसके साथ है। महायुति के भीतर भी आंतरिक विरोधाभास है।' उन्होंने दावा किया कि एमवीए को भी इसी तरह की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। फडणवीस ने कहा कि उनकी पार्टी का नारा 'बंटेंगे तो कटेंगे' एमवीए के चुनाव प्रचार अभियान के जवाब में गढ़ा गया है।

भाजपा नेता ने दावा किया कि उनके सहयोगियों अशोक चव्हाण और पंकजा मुंडे के साथ-साथ उप मुख्यमंत्री अजित पवार इसके 'मूल' अर्थ को समझने में विफल रहे। महाराष्ट्र में 20 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव के प्रचार अभियान में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा बार-बार इस्तेमाल किए जाने वाले इस नारे ने विपक्ष को इसकी निंदा करने के लिए एकजुट कर दिया है। विपक्ष का दावा है कि इस नारे के सांप्रदायिक निहितार्थ हैं, जबकि सत्तारूढ़ गठबंधन के कुछ नेताओं ने भी इस पर आपत्ति जताई है।

फडणवीस ने कहा कि 'बंटेंगे तो कटेंगे' कांग्रेस नीत महाविकास आघाडी के विभाजनकारी चुनाव प्रचार अभियान के जवाब में गढ़ा गया नारा है। इस नारे का मूल संदेश यह है कि 'सभी को एक साथ रहना होगा।' फडणवीस ने कहा, 'इस नारे का मतलब यह नहीं है कि हम मुस्लिमों के खिलाफ हैं। हमने यह नहीं कहा कि लाडकी बहिन योजना का लाभ मुस्लिम महिलाओं को नहीं दिया जाएगा।' उन्होंने दावा किया, 'बंटेंगे तो कटेंगे' भी कांग्रेस और एमवीए के तुष्टिकरण का जवाब है। उन्होंने लोकसभा चुनाव के दौरान 'वोट जिहाद' का प्रयोग किया और मस्जिदों में पोस्टर लगाए गए, जिसमें लोगों से एक विशेष पार्टी को वोट देने का आग्रह किया गया। यह किस तरह की धर्मनिरपेक्षता है। इस दौरान देवेंद्र फडणवीस ने चुनाव बाद खुद के सीएम बनने की संभावनाओं पर भी बात की। उनसे पूछा गया कि क्या आपका प्रमोशन होगा? इस सवाल को वह हंसकर टाल गए। लेकिन यह भी कहा, भाजपा मुझसे जो भी करने को कहेगी, मैं वह करूंगा। 'जीना यहां, मरना यहां, इसके सिवा जाना कहां।' भाजपा जहां भी जाने को कहेगी, मैं वहां जाऊंगा।'

नाबालिग पत्नी के साथ सहमति से किया सेक्स भी है रेप, बॉम्बे हाईकोर्ट ने सुनाया बड़ा फैसला

मुंबई, एजेंसी। बॉम्बे हाईकोर्ट की नागपुर बेंच ने कहा है कि अगर पत्नी की उम्र 18 साल से कम है, तो सहमति से यौन संबंध बनाने वाले के खिलाफ भी रेप का मामला दर्ज हो सकता है। उच्च न्यायालय ने दोषसिद्धि को बरकरार रखा है। दोषी का तर्क था कि पीड़िता के साथ यौन संबंध सहमति से बनाए गए थे और उस समय वह उसकी पत्नी थी। ऐसे में इसे बलात्कार नहीं कहा जा सकता है। जस्टिस गोविंद सनप की बेंच मामले की सुनवाई कर रही थी। लाइव लॉ की रिपोर्ट के अनुसार, 12 नवंबर को जारी आदेश में जज ने कहा, एपेक्स कोर्ट की ओर से निर्धारित कानून के मद्देनजर यह बात स्वीकार नहीं की जा सकती कि अपीलकर्ता का पीड़ित पत्नी के साथ यौन संबंध बनाना बलात्कार या यौन हिंसा नहीं माना जाएगा। यह बताना जरूरी है कि 18 साल से कम उम्र की लड़की के साथ संभोग करना बलात्कार है, फिर चाहे वह शादीशुदा हो या नहीं।

अदालत ने कहा, सुप्रीम कोर्ट के फैसले को देखते हुए इस मौजूदा मामलें में पत्नी के साथ सहमति से यौन संबंध के बचाव तर्क को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। अगर ऐसा मान भी लिया जाए कि दोनों के बीच तथाकथित विवाह हुआ था, तो भी पीड़िता की तरफ से आरोपों के मद्देनजर कि कि यौन संबंध उसकी सहमति के बगैर बने थे, इसे रेप माना जाएगा। 9 सितंबर 2021 को वर्धा जिले के ट्रायल कोर्ट ने युवक को दोषी पाया था। अब उसने हाईकोर्ट में आदेश के खिलाफ अपील दायर की थी। अपीलकर्ता को नाबालिग लड़की की शिकायत के बाद 25 मई 2019 को गिरफ्तार किया गया था। खास बात है कि उस समय लड़की 31 सप्ताह की गर्भवती थी। पीड़िता का कहना था कि दोनों के बीच प्रेम प्रसंग था और अपीलकर्ता ने उसके साथ जबरन यौन संबंध बनाए और शादी का झूठा वादा कर इसे जारी रखा। गर्भवती होने के बाद पीड़िता ने अपीलकर्ता से शादी करने के लिए कहा था। इसके बाद उसने एक घर किराए पर लिया और पड़ोसियों की मौजूदगी में हर पहनाए और भरोसा दिलाया कि वह उसकी पत्नी है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसके बाद उसने शिकायतकर्ता से अबॉर्शन कराने के लिए जोर डाला।

फरीदाबाद टू गाजियाबाद का सफर होगा और आसान, एफएनजी प्रोजेक्ट पर खर्च होंगे 900 करोड़

फरीदाबाद, एजेंसी। फरीदाबाद से नोएडा-गाजियाबाद का सफर करने वाले लोगों के लिए राहत की खबर है। लोक निर्माण विभाग की ओर से फरीदाबाद-नोएडा-गाजियाबाद (एफएनजी) परियोजना जल्द शुरू करने की तैयारी की गई है। इसके निर्माण और जमीन अधिग्रहण समेत अन्य कामों पर करीब 900 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।

परियोजना को जिला स्तर पर मंजूरी के लिए सोमवार को सभी विभाग अधिकारियों की बैठक बुलाई गई है। इसके बाद सरकार से मंजूरी के बाद योजना को रफ्तार दी जाएगी। इसके बनने से फरीदाबाद से नोएडा और गाजियाबाद जाने का सफर आसान हो जाएगा। साथ ही लोग एक शहर से दूसरे शहर बेहतर तरीके से आवागमन कर सकेंगे।

औद्योगिक नगरी रोजाना करीब एक लाख लोग रोजाना नौकरी व अन्य कामों के लिए नोएडा-गाजियाबाद आवाजाही करते हैं। नोएडा और फरीदाबाद के बीच यमुना नदी है। इस कारण दो राज्यों के बीच अभी कोई सीधी सड़क नहीं है। लोगों को सड़क मार्ग से कालिंदीकुंज होकर नोएडा जाना पड़ता है। यहां सुबह-शाम भारी जाम की समस्या रहती है। वहीं, दिल्ली की तरफ से नोएडा जाने पर घंटों ट्रैफिक में फंसना पड़ता है। इसी परेशानी को दूर करने के लिए अब एफएनजी योजना के काम को आगे बढ़ाया जा रहा है। पीडब्ल्यूडी अधिकारियों के अनुसार, एफएनजी एक्सप्रेसवे की शुरुआत ग्रेटर फरीदाबाद सेक्टर 87 स्थिति निजी अस्पताल के पास से होगी। यहां से खेड़ी गांव होते हुए गांव लालपुर में यमुना किनारे तक नौ किलोमीटर लंबी सड़क बनेगी।

नरेश मीणा के बहाने अशोक गहलोत ने सचिन पायलट को घेरा?

जयपुर , एजेंसी। राजस्थान के पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने नरेश मीणा के बहाने इशारों में सचिन पायलट को घेरा है। हालांकि, गहलोत ने नाम नहीं लिया है, लेकिन इशारा सचिन पायलट की तरफ ही माना जा रहा है।बता दें नरेश मीणा विधानसभा उपचुनाव के दौरान कहा कि सचिन पायलट को मुख्यमंत्री बना देते तो कांग्रेस की सरकार नहीं जाती। सियासी जानकार गहलोत के बयान को पायलट पर सियासी हमले के तौर पर देख रहे है। गहलोत ने कहा कि नरेश मीणा खड़े कैसे हुए? किसकी शह पर खड़े हुए? वो तो कांग्रेस में आ चुके थे। क्या बीजेपी को जिताने के लिए खड़ा किया गया? कांग्रेस कमेटी इसकी जांच कर रही है। जानकारों के मुताबिक माना जा रहा है कि गहलोत पायलट को घेरने का प्रयास कर रहे हैं, क्योंकि नरेश मीणा पायलट समर्थक रहे हैं, लेकिन टिकट नहीं मिलने पर निर्दलीय मैदान में उतर गए। हालांकि, सचिन पायलट ने साफ कह दिया है कि नरेश मीणा की अब कांग्रेस में वापसी नहीं होगी। गहलोत ने नरेश मीणा के एडसीएम को थप्पड़ मारने के मामले में कहा कि राज्य सरकार का इकबाल खत्म हो चुका है। कानून-व्यवस्था ठप हो चुकी है।उन्होंने कहा कि देवली उनियारा में जो भी घटनाक्रम हुआ है, यह हुआ क्यों? यह घटना कोई मामूली घटना नहीं थी। अगर कोई व्यक्ति अधिकारी को थप्पड़ लगाए, ऐसी स्थिति बनी ही क्यों? इतनी हिम्मत कैसे हो सकती है किसी की। हम बार-बार सरकार से कहते हैं कि गुड गवर्नेंस दें, ताकि पूरे प्रदेश का भला हो। सरकार को आलोचना को हमेशा सकारात्मक रूप से लेना चाहिए।गहलोत ने कहा कि साल भर होने जा रहा है, बार-बार कहते हैं जिले खत्म कर दिए जाएंगे।

सुरक्षा की गई थी कम, हरियाणा विधानसभा में उठा अनिल विज के खिलाफ साजिश का मुद्दा

चंढीगढ़ , एजेंसी। हरियाणा सरकार में ऊर्जा, परिवहन और श्रम मंत्री अनिल विज ने चुनाव के दौरान जान का खतरा होने का दावा कर चौंका दिया है। विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान अपनी जान को खतरा होने की बात करते हुए अनिल विज ने कहा कि इस मामले को लेकर उन्होंने मुख्य सचिव को एक चिट्ठी भी लिखी थी लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। हरियाणा विधानसभा सत्र के दौरान गुरुवार को मीडिया से बात करते हुए अनिल विज ने कहा कि उन्होंने पूर्व मुख्य सचिव को लिखित रूप से जान को खतरा होने की जानकारी दी थी।

पिछले सप्ताह विज ने दावा किया था कि स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों ने उनके खिलाफ साजिश रची थी। उन्होंने यह भी कहा कि चुनाव के दौरान उनकी सुरक्षा कम कर दी गई थी। इस मामले पर कांग्रेस विधायक अशोक अरोड़ा ने सदन में विज की सुरक्षा को लेकर चिंता जताया। इसे लेकर सदन में खूब हंगामा भी हुआ। सदन में हुए हंगामे पर प्रतिक्रिया देते हुए अनिल विज ने कहा, मैंने पहले ही तत्कालीन मुख्य सचिव

को लिखित रूप से सूचित कर दिया था और उन्हें फोन पर भी हालात से अवगत करा दिया था। देखते हैं क्या होता है। अपनी सुरक्षा में कटौती के बारे में विधानसभा में उठाए गए मुद्दे के बारे में पूछे जाने पर अनिल विज ने कहा, अगर मैंने कोई मुद्दा उठाया है तो यह गंभीर है। जांच शुरू होने पर और भी बातें सामने आएंगी। हालांकि अभी तक किसी ने मुझसे इस बारे में नहीं पूछा है। कांग्रेस द्वारा विधानसभा में ईवीएम का मुद्दा उठाए जाने पर प्रतिक्रिया देते हुए अनिल विज ने कहा, यह कांग्रेस के एजेंडे का हिस्सा है और उन्होंने झूठ की यूनिवर्सिटी बना रखी है जिसमें हारने पर चुनाव आयोग को दोष देना और फिर ईवीएम को दोष देना शामिल है। कांग्रेस ने जिन सीटों पर जीत हासिल की, क्या वहां ईवीएम ठीक से काम कर रही थी? अगर ईवीएम में गड़बड़ी थी तो पूरे राज्य में खराब होना चाहिए था। तो कांग्रेस कैसे जीत सकती है और फिर भी यह दावा कर सकती है कि जहां भाजपा जीती वहां ईवीएम में गड़बड़ी थी? यह तर्क बेबुनियाद है। कांग्रेस को उन सीटों पर फिर से मतदान की मांग करनी चाहिए जहां उसने जीत हासिल की है।

भारत ने कनाडा से खालिस्तानी आतंकवादी अर्श दल्ला का प्रत्यर्पण मांगा, दर्ज हैं 50 से अधिक आपराधिक मामले

टोरंटो , एजेंसी। भारत ने गुरुवार को खालिस्तानी आतंकवादी अर्शदीप सिंह, जिसे अर्श दल्ला के नाम से भी जाना जाता है, की कनाडा में गिरफ्तारी के बाद उसके प्रत्यर्पण की मांग की। 28 अक्टूबर को ओंटारियो के मिल्टन में हुई गोलीबारी की घटना के बाद हुई इस गिरफ्तारी ने कनाडाई और भारतीय मीडिया दोनों में काफ़ी सुर्खियां बटोरी हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक बयान में पुष्टि की कि भारत कुछ समय से दल्ला की गतिविधियों पर नज़र रख रहा था और अधिकारी अब उसके प्रत्यर्पण को सुरक्षित करने के लिए कनाडा के साथ काम कर रहे हैं। खालिस्तान टाइगर फोर्स का वास्तविक प्रमुख दल्ला भारत में एक घोषित अपराधी है, जिसके खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास, जबरन वसूली और आतंकवाद के वित्तपोषण सहित 50 से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा, अर्श दल्ला हत्या, हत्या के प्रयास, जबरन वसूली और आतंकी गतिविधियों के वित्तपोषण सहित 50 से अधिक मामलों में घोषित अपराधी है। मई 2022 में उसके खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया गया था। उसे 2023 में भारत में एक व्यक्तिगत आतंकवादी के रूप में नामित किया गया था। जुलाई 2023 में, भारतीय सरकार ने कनाडा सरकार से उसकी अनंतिम गिरफ्तारी के लिए अनुरोध किया था। इसके बाद के महीनों में, भारत ने कनाडाई अधिकारियों को अतिरिक्त जानकारी प्रदान की, जिसमें डल्ला के संदिग्ध निवास, वित्तीय लेनदेन, संपत्तियों और मोबाइल नंबरों का विवरण शामिल था।दिसंबर 2023 में, कनाडा के न्याय विभाग ने भारत से और जानकारी मांगी, जिसका जवाब मार्च 2024 में दिया गया।

ट्रंप गुजराती को देने वाले हैं बड़ी जिम्मेदारी

वाशिंगटन एजेंसी। डोनाल्ड ट्रंप अमेरिकी राष्ट्रपति का चुनाव जीतने के बाद हर रोज बड़े बड़े फैसले करते दिख रहे हैं। उन्होंने एलन मस्क से लेकर तुलसी गबार्ड को बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। हर कोई उनकी कैबिनेट सदस्यों को देख चौंक रहा है। हाल ही में उन्होंने मैट गेट्ज को अटॉर्नी जनरल, पीट हेगसेट को रक्षा सचिव और तुलसी गबार्ड को राष्ट्रीय खुफिया निदेशक के लिए नामित किया है।

हालांकि, आलोचकों का कहना है कि ये सब अनुभवहीन लोग हैं और ट्रंप की ये बड़ी गलती है, लेकिन ट्रंप सबको चौंकाने से पीछे नहीं हट रहे। इसी कड़ी में एक और गुजराती नाम जुड़ा है जिसे ट्रंप का वफादार कहा जाता है। माना जा रहा है कि ट्रंप शीर्ष पदों पर अपने सबसे वफादार व्यक्तियों का चयन कर रहे हैं ताकि वह अपने स्वयं के सहयोगियों के दबाव में कभी न आएं। जो कि पहले कार्यकाल के दौरान कई मामलों में हुआ था। अब ट्रंप गुजराती मूल के काश पटेल को बड़ी जिम्मेदारी दे सकते हैं। पहले माना जा रहा था कि वो काश पटेल को सीआईए प्रमुख बनाएंगे, लेकिन उन्होंने अपने करीबी सहयोगी जॉन रैटक्लिफ को सीआईए हेड के रूप में नामित किया है। हालांकि, अब पटेल को एफबीआई में शीर्ष पद मिलने की उम्मीद है। एनबीसी ने कहा कि शीर्ष खुफिया एजेंसियों के लिए उनकी संभावित नियुक्ति ने खुफिया समुदाय में अलार्म की घंटी बजा दी है। कुछ अधिकारियों को पहले डर था कि ट्रंप ने पटेल को सीआईए के निदेशक के रूप में नामित किया है। काश पटेल पहले भी ट्रंप के साथ काम कर कई अहम प्रोजेक्ट को पूरा कर चुके हैं। दरअसल, पटेल के अमेरिका के खुफिया समुदाय के बारे में कट्टरपंथी विचार हैं, जिसके बारे में वो एक पुस्तक गवर्नमेंट गैंगस्टर्स- द डीप स्टेट, द ट्रुथ एंड द बैटल फॉर अवर डेमोक्रेसी में विचार भी रख चुके हैं।

यहां तक की ट्रंप ने कहा कि पटेल की पुस्तक उनके अगले कार्यकाल का खाका होगी। उन्होंने कहा कि ये हर भ्रष्टाचारी को उजागर करने वाला एक शानदार रोडमैप है, जो केवल अमेरिकी लोगों के लिए काम करने के लिए हमारी एजेंसियों और विभागों को वापस काम पर लाएगा।

यूक्रेन युद्ध लंबा खींचना पड़ा पुतिन पर भारी, दिवालिएपन की कगार पर रूस की 30 एयरलाइंस कंपनियां

मोस्को, एजेंसी। यूक्रेन-रूस युद्ध को तीन साल पूरे होने को हैं, और दोनों देशों के बीच संघर्ष के खत्म होने का कोई संकेत नहीं दिख रहा है। इस दौरान, रूस पर लगातार आरोप लगे हैं कि उसने इस युद्ध को खींचने की नीति अपनाई है, जिससे उसके कई उद्योग गंभीर संकट में आ गए हैं। खासकर रूस का विमानन उद्योग आर्थिक तंगी की मार झेल रहा है। हाल ही में रूसी समाचार पत्र इजवेस्टिया ने एक रिपोर्ट में खुलासा किया है कि रूस की 30 एयरलाइन कंपनियां दिवालिया होने के कगार पर हैं। ये कंपनियां घरेलू यात्री परिवहन का करीब 25 प्रतिशत हिस्सा संभालती हैं, लेकिन अगले साल 2025 तक उनके पूरी तरह दिवालिया हो जाने की संभावना है। इस संकट से जूझ रहीं एयरलाइंस

अधिकतर छोटे और मध्यम आकार की हैं, जो विदेशी विमानों को पट्टे पर लेकर चल रही हैं। यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों के चलते इन कंपनियों का संचालन और भी कठिन हो गया है। प्रतिबंधों के कारण विमान पट्टे की किस्तों की अदायगी रुक गई है, जिससे उन पर कर्ज का बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है। राष्ट्रपति पुतिन ने इस स्थिति से निपटने के लिए कुछ राहत योजनाएं शुरू की हैं, लेकिन इससे एयरलाइन कंपनियों पर कर (टैक्स) का अतिरिक्त भार पड़ गया है।

रिपोर्ट के अनुसार, अगर सरकार एयरलाइंस के कर्ज को बट्टे खाते में डालने की योजना बनाती है, तो इस राहत राशि पर 25 प्रतिशत टैक्स लगाया जाएगा, जिससे कंपनियों पर वित्तीय दबाव और बढ़ेगा। ज्यादातर कंपनियों ने जिन विमानों को पट्टे पर लिया था, वे बरमूडा, आयरलैंड और यूरोपीय देशों में पंजीकृत हैं। प्रतिबंधों की वजह से अब इन कंपनियों को विमान के रखरखाव और कलपुर्जों की आपूर्ति के लिए ईरान, तुर्की और चीन पर निर्भर होना पड़ रहा है, जिससे लागत और बढ़ गई है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि ,-320 एयरबस विमान के रखरखाव में हर महीने 80,000 से 1,25,000 अमेरिकी डॉलर तक का खर्च आ रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि इतनी महंगी रखरखाव लागत के चलते कई एयरलाइन कंपनियां टूटने के कगार पर पहुंच गई हैं। मार्च 2022 में यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद एयरबस और बोइंग जैसी पश्चिमी विमान निर्माता कंपनियों ने रूस को विमान के पुर्जों की आपूर्ति और तकनीकी सहायता रोक दी थी। इस मुश्किल स्थिति से निपटने के लिए रूस ने अपने विमानन उद्योग में 12 अरब डॉलर का निवेश किया है, लेकिन संकट अभी भी बना हुआ है। आर्थिक तंगी के कारण पायलटों और अन्य कर्मचारियों ने नौकरी छोड़ना शुरू कर दिया है, जिससे एयरलाइन कंपनियों के संचालन पर बुरा असर पड़ रहा है।

10 प्रतिशत कर्मचारियों की छंटनी करेंगी बोइंग

लंदन, एजेंसी। बोइंग ने कहा कि वह इस सप्ताह से कर्मचारियों को छंटनी के नोटिस जारी कर रहा है, जो भारी कर्ज में डूबी विमान निर्माता कंपनी द्वारा 17,000 नौकरियों या अपने वैश्विक कार्यबल के 10त्न की कटौती की व्यापक योजना से प्रभावित हैं। इस सप्ताह नोटिस प्राप्त करने वाले अमेरिकी कर्मचारी जनवरी तक बोइंग के नोटिस पीरियड पर रहेंगे। कर्मचारियों को अपनी नौकरी समाप्त करने से पहले 60 दिन का नोटिस दिया जाता है। खबर यह थी कि बोइंग नवंबर के मध्य में वर्कर एडजस्टमेंट एंड रीट्रेनिंग नोटिफिकेशन भेजेगा, जिसकी व्यापक रूप से उम्मीद थी। अपनी वित्तीय वास्तविकता और प्राथमिकताओं के अधिक केंद्रित सेट के साथ संरेखित करने के लिए अपने कार्यबल के स्तर को समायोजित कर रहे हैं। हम यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं कि हमारे कर्मचारियों को इस चुनौतीपूर्ण समय के दौरान समर्थन मिले। नोटिस ऐसे समय में आए हैं जब नए सीईओ केली ऑर्टबर्ग के नेतृत्व में बोइंग अपने सबसे ज़्यादा बिकने वाले 737 मैक्स के उत्पादन को फिर से शुरू करने की कोशिश कर रहा है, 33,000 से अधिक अमेरिकी वेस्ट कोस्ट कर्मचारियों की एक हफ़्ते लंबी हड़ताल के बाद इसके अधिकांश वाणिज्यिक जेट का उत्पादन रुक गया था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129